❀ श्रीश्रियैनमः ❀

❀ श्रीरामकृष्णगुरवेनमः ❀

❀ श्रीमते रामानुजायनमः ❀ श्रीमते रामानन्दाय नमः ❀

❀ श्री मद्गोस्वामि श्रीतुलसीदासाय नमः ❀

❀ चतुर्थ श्रीतुलसीपुष्पाञ्जलि ❀

हे देव ? हे दयित ? हे भुवनैक बन्धो ? हे कृष्ण ? हे चपल हे करुणैक सिन्धो ? । हे नाथ ? हे रमण हे नयनाभिराम ? हाहा कदानुभवितासि पदं दृशोर्मे ॥१॥

अमून्यधन्यानि दिनान्तराणि, हरे ? त्वदालोकन मन्तरेण । अनाथवन्धो ? करुणैक सिन्धो ? हाहन्त हाहन्त कथं नयामि ॥२

करुणारस सम्पूर्ण विशालोत्पल लोचन ।
दीन वन्धो दयासिन्धो मामनाथन्तु रक्षभो ॥३॥

दो०—गुण स्वरूप बल द्रव्य को, प्रीति करै सब कोय ।
तुलसी प्रीति सराहिये, इनते बाहिर होय ॥१॥
पाँच पहर धन्धे गये, तीन पहर गये सोय ।
एक घड़ी नहि हरि भजे, कुशल कहाँ ते होय ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ की, जब लग मन में खान ।
तब लग पण्डित मूरखो, तुलसी एक समान ॥३॥
सत्य वचन आधीनता, पर त्रिय मातु समान ।
इतने में हरि ना मिले, तुलसी झूठ जवान ॥४॥
दम्भ सहित कलि धर्म सब, छल समेत व्यवहार ।
स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनु हरत अचार ॥५॥

सो०—कलि पाषण्ड प्रचार, प्रबल पाप पाँवर पतित ।
तुलसी उभै अधार, राम नाम सुरसरि सलिल ॥६॥

दो०—तुलसी या संसार में, पाँच रतन हैं सार ।
साधु मिलन अरु हरि भजन, दया दीन उपकार ॥७॥

भूमिका

सरस हृदय वाचक

मानव जीवन आसक्तियों का समाहार है। साथ ही साथ जीवन के विभिन्न स्थलों का ऊहा-पोह भी। प्रति-आसक्ति के साथ उसकी अनुभाविका शक्ति का विकाश होता है। जीवन संग्राम में विजय प्राप्ति के लिये अनुभव और ज्ञान की अत्यधिक आवश्यकता है। किन्तु अनुभव जन्य ज्ञान की मान्यता सर्व-सिद्ध है। और इसी का नामकरण किसी ने चुपचाप 'कविता' कर दिया था। और उस युग से आज तक वही धारा चली आ रही है, परिवर्तन कलेवर में हुआ है किन्तु नाम में नहीं। कवि के स्वयं आविर्भूत अनुभव ही का तो नाम प्रेरणा है किन्तु दूसरे शब्दों में प्रेरणा हृदयाधिनायक के द्वारा होती है और किसी मानव-स्तर से ऊपर उठे हुये नेत्रों की एक कृपा-कोण-से ही कविता का सृजन होता है।

अगणित वर्षों से कविता का इतिहास चला आ रहा है। प्राची के हृदय-तल से प्रवाहित प्रातः प्रेम की अरुण रश्मि जाल में भी तो कविता है और मेढक की टर्र टर्र में भी तो कविता का मधुर-निनाद सुनाई देता है। सुनने के लिये साधना की आवश्यकता है और वह साधना कवि के ही लिये निर्मित है। कवि ही उस आलोक-मयी-रश्मि को अपने हृदय में सन्निहित रख सकता है और कविता-कविता उसी का प्रतिफलन है।

काव-कर्तव्य सरल और सहज नहीं है। कवि की आत्मा—विश्व की आत्मा है और विश्व की आत्मा—उसके उपास्य की आत्मा का एक अंश। इसीलिये तो वह सब कुछ उसी के नाम पर समर्पित करता जाता है किन्तु अपने उपास्य का एक सामूहिक रूप प्रस्तुत कर सकना प्रत्येक कवि भी नहीं कर सकता। उसी मूर्ति में विश्व-कल्याण का आरोपण हर एक के किये नहीं हो सकता। इसके लिये अपने उपास्य में एक अटल और अजस्र आसक्ति की आवश्यकता है। और वह धारा भक्तिकाल के प्रायः सभी प्रमुख सूर, तुलसी मीरा, रसखान आदि कवियों के काव्य में पाई जाती है।

किन्तु अपने उपास्य का लोक-रञ्जक स्वरूप प्रस्तुत कर सकने में तुलसी से अधिक सफल अन्य कोई नहीं हो सका है। और आज इसी कवि का एक ग्रन्थ रामचरितमानस विश्व के प्रत्येक-कोण में किसी न किसी भाव से आदृत है। और इसी महाकवि की सेवा में प्रस्तुत पुस्तक अर्पित की जा रही है। प्रस्तुत पुस्तक अनेकों कवियों की पुण्य भावनाओं का समाहार है जिन्होंने अकथ परिश्रम करके अपनी श्रद्धांजलि गोस्वामीजी को उनकी स्वर्ग-गमन तिथि के दिन अर्पित की थी। पुस्तक चाहे जैसी हो पर है भक्ति-भाव से समर्पित कवियों के छन्दों का संकलन। त्रुटि होना सर्वथा आवश्यक और क्षमा करना पूज्यों का प्रधान कर्तव्य है।

कृपया एक बार अपनी दृष्टि विश्व रंगमंच पर होने वाले अभिनय पर डालिये संघर्ष का आधिक्य है और आंतरिक अशान्ति का सर्वथा अभाव। ऐसे समय में शान्ति प्रदान कर सकने वाली एकमात्र शक्ति है प्रेम पूर्ण हरिनाम कीर्तन और उसी भाव से प्रेरित होकर पुस्तक आप के हाथों में रखी जा रही है किन्तु इसी वहिर्युद्ध के कारण अनेकों सद्कर्म भी समाप्त हो रहे थे। तथापि अब कुछ शान्ति है और कागज आदि के अधिक मूल्य होने पर भी उसी भाव को स्थापित रखने के लिये यह चतुर्थ पुष्पांजलि आपके हाथों में है। आप चाहे जैसा मूल्यांकन करें।

कानपुर
२६-३-४७ } **रामकृष्ण तैलंग**

चतुर्थ श्रीतुलसी पुष्पाञ्जलि की भूमिका

कानपुर जनरलगञ्ज में भक्तवर श्रीरामलालजी स्थापित श्रीराम-कृष्णमुरारीजी का मन्दिर है। इसमें प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी को श्री गोस्वामी तुलसीदासजी की जयन्ती मनायी जाती है। इस उत्सव में कवि सम्मेलन भी होता है। समस्यापूर्ति पृष्ठानुसार कविगण स्वरचित कविताओं को सुनाकर सभापति जी को समर्पित कर देते हैं। उन्हीं कविताओं का संग्रह यह "चतुर्थ श्रीतुलसी पुष्पाञ्जलि" उक्त

भक्तवरजी ने मुद्रित कराकर पाठकों के कर कमलों में प्रस्तुत की है। इसका संकलन क्रम श्रीमान् शास्त्री पं० श्रीलक्ष्मीकिशोरजी ने जैसा किया वैसा ही मुद्रित है। इसमें संवत १९९८ से २००३ के छः वर्ष के ८ कवि सम्मेलनों की समस्यापूर्तियों का संग्रह है। श्रीगोस्वामीजी की कृपा से इस बार इसमें ६२५ से भी अधिक कविताओं का विस्तृत संग्रह हुआ है। इसमें संस्कृत समस्याओं का भी समावेश है। "पुष्पाञ्जलि" मुद्रित होने में पं० श्रीअम्बिकाप्रसादजी वैद्य पं० श्रीब्रह्मानन्दजी मिश्र तथा पं० श्रीलक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री का प्रयत्न ही प्रशंसनीय है।

कविता क्रम भी वैसे ही रखा गया है जैसे पूर्वा पर कवियों ने कविता सुनाई थीं। जिस कवि की जैसी कविता है, वैसी ही मुद्रित करके स्वतन्त्र कविता अन्त में कर दी गई हैं। शुद्धाशुद्धि का भार लेखकों पर ही निर्भर है। अतएव एतदर्थ संयोजक एवं प्रकाशक तथा मुद्रक पर किसी प्रकार का संकेत करने का कोई भी अवकाश नहीं है इसमें किसी प्रकार का प्रत्यवाय प्रतीत हो तो अपने २ लिखित पृष्ठ को उक्त कवि सम्मेलन कार्यालय के प्रधान मन्त्री के पास देख सकते हैं। यदि जिनकी कविता भूल से अथवा अन्य कारणवश न छपी हो वे प्रबन्ध मन्त्री को सूचित करें तो आगामी वर्ष में मुद्रित हो जायगी अस्तु !

प्रकाशक महोदय भक्तवर श्रीरामलालजी पर राजकीय तथा अन्यान्य अनेकानेक विघ्न आने पर भी आपने उक्त धार्मिक कार्यों में शैथिल्यता नहीं आने दी। अतः कविगणों को भी चाहिये कि उक्त भक्तवर के घर सर्व सुख सम्पति कुल वृद्धि होने की मंगलमय शुभ आशीर्वाद देवें। आपका प्रेमभाजन—प्रधान मन्त्री जनरलगञ्ज कानपुर

उद्देश्यपूर्ति

वाचकवृन्द ! आज आप जिस सभा का फलस्वरूप यह चतुर्थ "तुलसी पुष्पांजलि" 'समस्यापूर्तिसंग्रह' ग्रन्थ देख रहे हैं उसकी नींव बड़ी ही प्राचीन है अर्थात् जब लालमन गिन्नुलाल शङ्करलाल रहे हैं तबसे पुराने घर के मन्दिर में जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी, झूला,

वेदान्त वारिधि श्री १०८ श्रीमान् पं० श्रीरामकिशोरदासजी

महाराज शास्त्री बड़ास्थान दारागंज-प्रयाग



प्रकाशक—चरणसेवक त्रिवेणीदास मन्नापुजारी कुंजबिहारी

संकर्षण श्रीमथुरादास कानपुर

होली, दिवाली, दशहरा, वर्षगांठ इत्यादि उत्सव प्रति वर्ष मनाये जाते थे, तैसे ही श्रा० शु० ७ को श्री गोस्वामीजी का भी उत्सव होता आया है। इतना ही नहीं लालमन गिन्नुलाल तथा शंकरलाल आदि तीनों भक्तवरों के हृदय में यह अभिलाषा था कि कहीं दूसरा कमान ले सुन्दर मन्दिर बनवा कर विस्तार से उत्सव समय्या किया करें। यह भावना पूर्ति न होने पाई कि बीच ही में लालमन शंकरलाल का स्वर्गवास हो गया। जब गिन्नुलाल का भी अन्त समय आ गया, तब अपने पुत्र जगन्नाथ तथा भतीजे रामलालजी को बुला कर कहा कि हमारी यही अभिलाषा रह गई कि, मन्दिर नहीं बनापाये अतः इसको तुम दोनों जने अवश्य पूर्ण करना। दोनों ने स्वीकार किया और प्रण किया कि हम आपके कार्य को अवश्य ही पूर्ण करेंगे। पश्चात पिताजी की आज्ञानुसार केवल एक शिवाला ही बना पाये कि भगवन लीला विभूति के अलौकिक प्रपञ्च प्रवाह में निमग्न अचानक जगन्नाथजी का भी अन्त समय आ गया, तब अपने चचेरे भाई रामलाल तथा अपने छोटे भाई रामशरण को बुला कर कहा कि देखो दद्दा व कक्का ने कहा था कि मन्दिर बनवा कर विस्तार से उत्सव समय्या करना, यह उनकी अभिलाषा हम पूर्ण नहीं कर सके हैं, अतः अब तुम इस कार्य को अवश्य पूर्ण करना। श्रीरामलालजी ने कहा अवश्य ही भगवान पूर्ण कर देवेंगे। जगन्नाथजी के स्वर्गवास होने के कुछ दिन पश्चात श्रीरामलालजी ने सोचा कि तीन विचार कक्का के भय्या के रह गये हैं इनको अवश्य पूर्ण करना चाहिये। श्रीरामशरण उनकी माँ तथा अपने घर भर से निश्चय कर सबकी राय ले अपनी पुरानी दुकान के ऊपर मन्दिर बनवाया। पुराने घर के मन्दिर के विहारी जी, जगन्नाथ जी, गोपालजी आदि सब ठाकुर नवीन मन्दिर में आये और श्रीराम प्रतिष्ठा के साथ २ वे भी प्रतिष्ठित भये। तब से "श्रीरामकृष्ण मुरारीजी का मन्दिर" नाम पड़ा, और जैसे लालमन गिन्नुलाल, आदि आज्ञा दे गये थे उसी प्रमाण सेवा, पूजा, भोग राग, गाना बजाना नित्यार्चना, पूजा-पाठ, दान-पुण्य, नित्य होम, यज्ञ याजन, पुराण पाठ, कथा

व्रत, सन्त ब्राह्मण सेवा, अतिथि सत्कार, धार्मिक सभा, व्याख्यान विद्वानों का सन्मान आदि घर का समस्त कार्य भक्त श्रीरामलालजी करते आये हैं। और भगवत्कृपा से श्रीरामलालजी ने द्रव्य सञ्चय, धर्म सञ्चय, कई घर, ग्राम बाग बगीचा इत्यादि कार्य नित्य द्रव्यागमन का भी अति [illegible] संग्रह किया है। इतना ही नहीं अपने बड़ों के नाम पर कई मन्दिर, तालाब, कुआं, बावड़ी, धर्मशालायें आदि बनवाये और अन्य कई धार्मिक कार्य भी किये हैं। आपके मन्दिर के प्रत्येक उत्सव में बड़े बड़े विद्वान् रईस जैसे महाराज पं० श्री सरयूनारायणजी तिवारी, पं० स्वामी श्रीहरिनारायणाचार्य जी शास्त्री, पं० श्रीरामचन्द्रजी वैदिक पाठशाला वाले तथा विद्वान् महन्त सन्त आचार्यगण इत्यादि अनेक महानुभाव पधारते हैं और भक्तवरजी के सजातीय सम्बन्धी आबाल वृद्ध सभी आते हैं और आप यथा योग्य सबका सन्मान करते हैं। भगवान की वर्ष गाँठ पर फाल्गुन में श्रीरामलीला धनुषयज्ञ उत्सव भी आप प्रति वर्ष विलक्षण कराते हैं।

यह मन्दिर तथा सभा उत्सव भी उसी समय का स्थापित है। स्थानीय उत्साही विद्वानों ने इसकी उत्तरोत्तर पूर्ण अभिवृद्धि की। इन्हीं के पूर्ण परिश्रम का फल है जो यह ६ वर्षों के आठ सम्मेलनों की समस्यापूर्तियों का संग्रह मुद्रित हो सका है।

प्रति वर्ष कवि सम्मेलन में प्रथम व्याख्यान, कविता पाठ, पुरस्कार दान तथा चन्दन, प्रसाद, पान, माला, अतर इत्यादि से दर्शक एवं कवि वृन्दों का सादर सन्मान किया जाता है। इसके पूर्ण सहायक पं० श्रीलक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग एवं पं० श्री अम्बिकाप्रसादजी त्रिपाठी वैद्यराज हैं। यहाँ प्रभु के परम प्रेम की मूर्त्ति पं० श्रीमन्नापुजारीजी भी शृंगारी एक ही हैं श्रीकुञ्जीपद्मापद्मानुज की जय हो। अस्तु

प्रयाग गुरुस्थान के पं० श्रीरामकिशोरदासजी शास्त्री कई वर्षों से उक्त मन्दिर में स्थायीरूप से कथा कीर्त्तन के लिये नियत थे। गत वर्ष में आपका परम पद हो गया तदर्थ शोक सभा की गई। श्रीरामलालजी की चाची श्रीमती देवकी व इनकी पतोहू श्रीमती लछमिन (नारायण) दोनों का परमपद होगया, प्रभु कल्याण करें।

श्रीवैष्णव धर्मप्रिय भक्तवर सेठ श्रीरामलालजी गुप्त कान



दुकान मालिक लालमन गिन्नूलाल जनरल गंज, कानपुर ।

स्टैन्डर्ड प्रेस, प्रयाग में छपा ।

उपकार स्मृति

भक्त श्रीरामलालजी ने धनुषयज्ञ भजनमाला, श्रीरामकुण्डलिया, मिथिलामाहात्म्य, त्रिकालसन्ध्यावन्दनप्रयोग, मनोहर शतपञ्च चौपाई, समस्यापूर्ति संग्रह, नित्यस्तुति संग्रह, भक्तमालिका, सुदर्शनादि कवच संग्रह श्रीरामहोली इत्यादि ग्रन्थमुद्रित कराये हैं, और बिना मूल्य से प्रयाग, अयोध्या, मिथिला आदि तीर्थों में वितीर्ण होते हैं। आपके मन्दिर से भी मिलते हैं। हम आशा करते हैं कि आपके चिरंजीव पुत्र श्रीबलदेव प्रसादजी तथा श्रीरामशरणजी के चिरञ्जीव दोनों पुत्र श्रीहरिप्रसादजी तथा श्रीरामप्रसादजी अपने पिता पितामह की भाँति धर्म रक्षण कार्यों में भाग लेवेंगे और अपने पूर्वजों की शुभ कीर्ति के सुयश की सदैव रक्षा करेंगे। आप सबों का मङ्गलाकांक्षी—पं० रामटहलदास प्रयाग।

पुष्पाञ्जलि समर्पण

श्रीरामायण ग्रन्थ का प्रणयन कर श्रीगोस्वामीजी ने जगत् का कितना उपकार किया है? इसको यह एक मुख रसना कैसे वर्णन कर सकती है? आज हम तुच्छ पामर जीव ऐसे महापुरुष पुण्य पुञ्ज की सेवा कैसे कर सकते हैं? किन्तु और कुछ नहीं तो केवल हाथ जोड़ कविता रूप वाक्य "चतुर्थ पुष्पांजलि" ही उनके श्रीचरणों में सादर समर्पित करते हैं। भक्तवत्सल भगवान् श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज अपने दासों की टूटी फूटी तोतरी वाणी के कुसुमों को स्वीकार करेंगे। अस्तु—

इस चतुर्थ "तुलसीपुष्पांजलि" में जिन प्रतिभाशाली कविगण महानुभावों ने औदार्यभाव से कृपा की है, उनके हम परम कृतज्ञ हैं, और हम आशा करते हैं कि वे ऐसे ही प्रतिवर्ष अधिक संख्या में सम्मिलित होकर हमारे परमोत्साह की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करेंगे।

श्रीचरण चञ्चरीक दीन सेवक—रामलाल जनरलगञ्ज कानपुर

पं० श्रीरामटहलदासजी कृत कवित्त

क०—मध्य भूमि भारत श्रीगंगा तट कर्णपुर जग-न्नाथ गली में (श्री) छुन्नलाल छाया है। उसी में (श्री)

रामकृष्ण मुरारिजी का भव्य दिव्य मन्दिर श्रीरामलाल भक्त बनवाया है। वेद पाठ पूजा सुपुराण पञ्चरात्र कथा यज्ञ व्रत नित्य दान ब्रह्मभोज भाया है। उत्सव शृङ्गार भोग रागादिक नित्य सब होत सो सुयश भक्त जक्त सन्त गाया है ॥१॥

क०—कर्णपुर भक्तवर जक्त से विरक्त सदा माने विप्र भक्त को सुयश जाने जक्त है। जक्त में पवित्र धर्म कर्म चरम ज्ञान दान यज्ञ होम पूजा पाठ सन्तों में आसक्त है। आसक्त गुरुगोविन्द चरणों में प्रेम भक्ति पुराण सत्संग में वितावे आठों वक्त है। वक्त निज इष्ट परिचर्या में अभीष्ठ दृढ़ परोपकारी टहल रामलाल भक्त है ॥२॥

घ०—बालेहीपने ते इष्ट सेवा में प्रविष्ट भये निष्ठ राम नाम मिष्ट वैन सचरत हैं। शील क्षमा दया सत्य समता सन्तोष दीन दुखी रंक राव आशा पुरन करत हैं। तीरथ अटन यमनीयम भजन दृढ़ मन्त्र ध्यान मानसी सो हिये में धरत हैं। ऐसो भक्त रामलाल हरि-कथा कहैं सुनै प्रेम अनुराग नैना असुआँ झरत हैं ॥३॥

स०—कृष्णा श्रीदेवकि लछिमिन है तैसे ही अनन्ती शुद्धमती हैं। रम्मोसुत मुन्ना मुन्नी दोऊ लाली पुनि शुद्धो सरस्वती हैं। लाड़ी सुगंगो निकुञ्जी जनी लक्ष्मी नन्हीं दोउ सहज सती हैं। तीन प्रसाद बढ़ैं कुल में श्रीराम हरी बलदेव पती हैं ॥४॥

श्रीशुद्धाद्वैत वैष्णव सम्प्रदाय निष्ठ, ज्योतिर्भूषण, शास्त्री

पण्डित श्री १०८ श्री लक्ष्मीकिशोर जी

गोस्वामी तैलङ्ग करञ्जी। निवास स्थान कोड़ा जहानाबाद (प्रान्त) फतेहपुर।



सं० १९९८ के कवि सम्मेलन के सभापति जनरलगंज कानपुर

❀ श्रीरामकृष्णमुरारयेनमः ❀

❀ श्रीमते रामानुजायनमः ❀ श्रीमते रामानन्दाय नमः ❀

❀ चतुर्थ श्रीतुलसीपुष्पाञ्जलि ❀

अर्थात् समस्यापूर्ति संग्रह

सं० १९९८ श्रावण शुक्ला सप्तमी के कवि सम्मेलन की समस्यापूर्ति संग्रह

श्रीसभापति—❀ज्योतिर्भूषण **शास्त्री पं०श्रीलक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग**, जनरलगञ्ज, कानपुर

हिंदी समस्या—१ छबि सुखधाम है। २ उमड़ौपरै। ३ बन्दि कटैय्या।

संस्कृत समस्या—१ मनोनिर्वृतिः स्यात। २ तत्वरत्नाकरोऽयम्।

विषय—तुलसीकृत श्रीरामायण, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, वेदांतत्रय।

मङ्गलं रामकृष्णाभ्यां मङ्गलं श्रीमुरारये।
'श्रीरामलाल भक्ताय' नित्यः श्रीर्नित्य मङ्गलम्॥

❀ आप श्रीशुद्धाद्वैत वैष्णव सम्प्रदायनिष्ठ, ज्योतिर्भूषण, शास्त्री पं० श्रीलक्ष्मीकिशोरजी गोस्वामी, तैलङ्ग कर्ञ्जी जनरलगञ्ज, कानपुर के हैं। आप सर्वशास्त्र निष्णात हैं। यज्ञप्रतिष्ठादि कर्म करानेवाले कर्मठों में आपकी प्रथम गणना है। आपकी मान प्रतिष्ठा सब देश देशान्तरों में सर्व व्यापक हैं, हिन्दी संकृत में आपकी कविता सर्वोच्च सद्धर्म शिक्षाप्रद होती हैं। इस ग्रन्थ के मुद्रण का श्रेय भी आपको ही है। आप श्रीमद्भागवत पुराणादि के अपूर्व कथावाचक हैं। आपको गायन, कीर्तन, हारमोनियम आदि का भी अच्छा अभ्यास है। आप मिलनसार, हँसमुख आबाल वृद्धों के हृदयाभिराम हैं। आपका परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है।

आपका सेवक—मुद्रक

(छवि सुखधाम हैं) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री कानपुर

क०—ललित कलिन्द जाके कूलज कदम्ब तरे डार वे
हिंडोल दोउ झूलैं श्यामा श्याम हैं। दोऊ के उमङ्
दोऊ जोबन उछङ्ग भरे दोऊ अङ्ग अङ्ग पर सिरात कोटि
काम हैं॥ कहत किशोर दोऊ गावत मलार राग बाजत
मृदङ्ग झाँझ सङ्ग ब्रज बाम हैं। दोऊ मुसकावैं दोउ
पैगन बढ़ावैं दोऊ झूमि झूकि जावै दोऊ छवि सुख
धाम हैं ॥१॥

नीचेवाला कवित्त समस्त हिंदी संस्कृत समस्याओं के विषयों से पूरित

क०—भक्ति अरु ज्ञान वयराग रु वेदान्तत्रय-प्रस्थान
मध्य सार झूलै जो तमाम हैं। सो कथा बस येही वि
आओ मिलि उसी को भजैं बन्दि को कटय्या जाको ना
घनश्याम है॥ अंत समय वाही की स्मृति हो किशो
येहो—तत्व रत्नाकर है सो मुक्तिद सुठाम हैं। जाके
स्वरूप ध्याए स्वयं प्रेम उमड़ो परै तौ क्यों ना मिलैंगे
वो जो छवि सुख धाम हैं।।२॥

क०—काहे को विराग बिन माया मोह त्याग करे का
को त्यागो वन त्यागत सब काम है। काहे को तपसी
ह्वै तपावै कंचन सी काय काहे को तू यज्ञदान करे
तमाम है॥ मेरो कहेको जो यदि मानै किशोर भनै
तो मैं बताऊँ सप्रमाण ब्रजबाम है। आठौ याम राधे
श्याम राधेश्याम जपा करौ अंत मुक्ति धाम यहाँ छवि

सुख धाम हैं ॥३॥

(छवि सुख धाम हैं) प० श्री सीतेशशरण जी (प्रेम प्रभा) कानपुर

छ०—सुन्दर श्याम सुरूप सुहावन लखि लाजत बहु काम है। तीरथ सहस कोटि सम पावन मत्र भावन गुण ग्राम है॥ लोचन कंज मंजु मन मोहन सोहन सुषमा स्याम है। झांकनि प्रेम प्रभा झांकी सियराम सुछबि सुख धाम है॥४॥

अवध छैल दिलदार यार जेहि रामलला शुभ नाम है। अलि हम लख्यो चख्यो सुषमा चखु धनुष यज्ञ शुचि ठाम है॥ जनक लली सम भली देखि दुति अभिलाषा अभिराम है। जुगल जोड़ि यह प्रेम प्रभा विधि रच्यो सुछवि सुख धाम है॥५॥

स०—धाम है श्री अवधेश कुमार का जाहि प्रसिद्ध अयोध्या नाम है।
नाम है वेद पुराणन में जन पाप प्रनाशन पूरन काम है॥
काम है सन्त सुजानन को बसिवो सरयू तट आठहु याम है।
जाम है प्रेम प्रभा लखिये सियराम सनेह छबी सुख धाम है॥६॥
धामन है यह जो तुमने रचि रीझि रहे तुम पै विधि वाम है।
बाम है रामा तऊ तुम पै झिझकारि कहै तू बड़ोही निकाम है॥
काम है आवत कोऊ नहीं कहा मानो हमारी रटौ हरिनाम है।
नाम है प्रेम प्रभा वसुयाम हिये सियराम छबी सुख धाम है॥७॥

क०—सावन सुहावन को पावन अवाती जानि गोपीगन गावै लागी गीत अभिराम है। साजे साजवाज प्रिया प्रीतम झुलाइबो को झूला डारि डारन कदम्ब की ललाम है। तापै श्यामा श्याम लगि झूलन झकोर देत झिझिकि पियारी कर डारेंवर श्याम है। प्रेम प्रभा रहस अनूपम निहारें अली झांकि २ झांकि वांकी छवि सुख धाम हैं॥८॥

क०-सुन्दर सुमन्दिर बनायो जनरलगंज लालमणि गिन्नूलाल वैश्य वंश नाम है। नित्यप्रति आनँद सुमंगल हमेश होत चन्द्र ते दुचन्द शुभ सुषमा ललाम है॥ गाई जात तुलसी रमायन सुरागन सों उतसों अनेक प्रभु पूर सबै काम है। प्रेम प्रभा हरषै हमारो हियो हेरि श्रीमुरारि रामकृष्ण की सुछबि सुख धाम है ॥९॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्री बाबूलाल जी त्रिवेदी (लालकवि) कानपुर

क०-मन से न भागी जौलों विषय बयारि तौलों ज्ञान ध्यान पूजा न आती कुछ काम है। मन में भरा है अभिमान का समुद्र जौलों तौलों सहायक न होता कभी श्याम है॥ काम क्रोध लोभ मोह मद का न छूटा साथ तो पै हाथ लगती नहिं शांति अभिराम है। लाल कवि करवा कमंडल वृथा ही जौलों मन में बसी न राम छबि सुख धाम है ॥१०॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्रीश्यामलालजी त्रिपाठी "श्यामलाल" कानपुर

क०-जब घनश्याम देख पड़ते तो 'श्यामलाल', गोपियाँ मयूरियाँ ख़ुश होतीं तमाम है। नाच नाच गाती है उन्हीं के गुणानुवाद, लेतीं मञ्जुभाषिणी उन्हीं का एक नाम है॥ भूलती नहीं है छबि झूलती हृदय में वही, उनकी याद में ही बीत जाते निशियाम है। कृषक, सुदामा बन्धुओं के लिये तो सदा, कैसी घनश्याम की यह छबि सुखधाम है ॥११॥

(छवि सुख धाम है) सुधाकर त्रिवेदी (द्विजराज) मु० जमगापुर, जैपुर

क०—मोहिनी और सोहिनी रोहिनो पतिसी कांति भगत चकोर होइ रहा बसुजाम है। घनस्याम घटा की छटा निहारि योगि मोर नाचि नाचि पिव पिव रटि रहा नाम है॥ गोकुल में कटि रह्यो गोकुल समाज आज 'द्विजराज' टेरि रहा प्रातः और शाम है। आइए मुरारी असुरारी रामकृष्ण अब कारण कि रौं रूप छवि सुख धाम है॥१२॥

(छवि सुख धाम है) श्री श्यामलाल जी गुप्त पारषद, कानपुर

दो०—तब लगि कल पल भर नहीं, नहीं शांति विश्राम।
जौ लौं नैनन देखिहौं, प्रियतम छवि सुखधाम॥१३॥
बंदि कन्हैया के चरण, उनकी पर तमाम।
करैं समस्या हल मेरी प्रियतम छवि सुख धाम॥१४॥

(छवि सुख धाम है) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र, देवनगर, कानपुर

क०—आलीरी बिलोकु तू तिलोक को रचनहार अवध-कुमार यही बड़ो नाम राम है॥ सांवलो सलोनो श्याम अंग अंग कोटि काम लजत है शोभा नख सिखलौं ललाम है॥ काक पक्ष तापै कीट मुकुट जटित रत्नकुंडल श्रवण गले मुक्तन को दाम है॥ पीत पट धारि तापै भूषण अनेक सजे लिये धनुबान छवि ताकी सुख धाम है॥१५॥

क०—चाल मों गजेन्द्र सम बीर धीर विक्रम है जाके कोप कांपै लोक ऐसो सुनो नाम है। देत फल चार जापै कृपा

दृष्टिकोर करैं हरैं त्रय ताप योगिन विराम है ॥ देवमुनि किन्नरादि गावत सुयश नित ध्यावै सदा शंकर रु करत प्रणाम। जैसी शक्ति साली अहै सीता शोभा सिंधु तैसो सिया जू के योग्य वर राम सुख धाम है ॥१६॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्री काशीप्रसाद जी अवस्थी. कानपुर

क०—इत गुरु पूजन को पुष्प लेन राम चले उतै गौरि पूजै चली सिया अभिराम है। दोऊ मिले बाग सु तड़ाग अनुराग्ये आइ ता छिन की शोभा काशिराम जू ललाम है। प्रीति जो पुरातन की काहू पै लखी न जात कैसे कै बखानै युग्म सुखमा बिराम है॥ जानकी को आनन बिलोकै रामचन्द्र प्रभु राम की बिलोकै सिया छबि सुखधाम है ॥१७॥

क०—मुरली मधुर मुख लसत त्रिभंगी मंजु पीतपट धारे शोभा अति अभिराम है॥ गोपी ग्वाल संग लिये सोहै बनमाल हिये कूलन कलिन्द-जाके कीन्हें बिसराम है। काशीराम लखि के निहाल भये ताही छन जाके अंग अंगन लजात बहुकाम है। देव वृन्द निरखै वर्षि पुष्प माल देखैं आजु नन्दलाल की सुछबि सुखधाम है ॥१८॥

क०—जमुना तट कुञ्जन में सघन निकुञ्जन में करत विहार पिय प्यारी विश्राम है। सोहैं सर्जी सारी जरतारी की किनारीदार पीत पट कछनी सुफेटा अभिराम है॥ झूलत झुलावत हिंडोल राग गाय २ शीतल समीर ऋतु पावस ललाम है। जोड़ी श्यामा श्याम की बिराजी इक ठौर मनौ शुभग सिंगार रस छबि सुख धाम है ॥१९॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्रीनारायण जी शर्मा, चावलमंडी, कानपुर

क०—नात मात भ्रात सुत सकल सनेही जग छूटि जइहैं

सेवक सुस्वामि अरु वाम है। राज सब साज गज-धन छूटि जइहैं सुन्दर सुखद छूटि जइहैं जो धाम है तन जरि जैहै पै चिता पै पलक माँहि छूटि जैहैं मित्रगण सुहृद ललाम है। बात ये विचारि प्रीति राखहु रघुनन्दन सों श्याम मूर्तिवाले जाकी छवि सुखधाम है ॥२०॥

(छवि सुख धाम है) पं० श्री रामचन्द्रजी वाजपेयी, कर्नलगंज, कानपुर

क०-पेखि के पटुका औ चूनरी को सुघर छटा थाकि रहे लोचन करत न कुछ काम है। वेदन को अम्बर पटम्बर रंगीलो बन्यो ईश केन कठ को कसीदा अभिराम है॥ प्रश्न और मुण्डक माण्डूक्य के सितारे जड़े ऐतरेय तीतुर के सलमा ललाम है। छन्द की जुगनू का अरण्य में विकास ऐसी सुन्दर प्रिया पीतम की छवि सुख धाम है॥२१॥ (इस कवित्त में वेदान्तोपनिषदों का सार भरा गया है)

(छवि सुखधाम है) शास्त्री पं० श्री रामशरण जी द्विवेदी, श्री गङ्गाप्रसाद, रामनारायण तिवारी जी का सं० आयु० विद्या० कानपुर

क०-*विश्व में सदा से शान्ति हेतु होत आया युद्ध, युद्ध में प्रचण्ड आयुधों का मुख्य काम है। आयुधों में एक दैत्य दानवों का देह दारि, विष्णुजी का चक्र वो सुदर्शन-ललाम है॥ चक्र में सहस्र किरणों की सुप्रभा का पुञ्ज, दिव्य प्रभा पुञ्ज बीच धार अभिराम है। उज्वल सुतीक्ष्ण धार मंडल षडस्र मध्य, रक्षा दक्ष पुरुष की छवि सुख धाम है॥२२॥

---

* इस कविता पर कवि शिरोमणि उक्त श्री शास्त्री जी को सर्वोत्तम सम्मान पूर्वक पदक उपहार दिया गया। से० मु०

क०-मधुर मनोहर मनोरथ सहस्र भूमि, नाथ! कितना नहीं तुम्हारा प्रिय नाम है। किन्तु उससे भी तो परा-गंगण के पार, मङ्गल गुणों का पारावार सुधा धाम है। चरित परन्तु विभो उससे भी श्रोत्र पेय, भक्तों का अमोल पुण्य कोष भरा दाम है। नन्द के सुनन्दन यशोदा जी के अजिर दीप दिव्य विग्रह की किन्तु छवि सुख धाम है ॥२३॥

(छवि सुख धाम है) प० श्री राधेश्याम जी अग्निहोत्री कानपुर

क० बाँधे मोर-पख शिर, गुञ्जन की माल धारे कछनी पीत.कच्छ की, कटि में ललाम है। गौवन के पालनार्थ लाकुटी हैं लिये हाथ ग्वालन संग क्रीडा में, फिरे ठाम ठाम है॥ रास का रचावे संग मुरली बजावे सुष्ठु विविध नृत्य सांगीत, में प्रवीण श्याम है। वेद सों अनन्तानादि, भक्तन के प्रेम वश्य धार्‌यो नर रूप श्याम छवि सुखधाम है ॥२४॥

(छवि सुख धाम है) पं० श्री विश्वनाथ जी शुक्ल चावलमंडी कानपुर

कहँ लौं गुन गान करौं रामचरितमानस के, जाको एक एक पद सुखद ललाम है। बहती रसधार जहाँ जान्हवी की धारा सम, जहाँ पै बिन दाम के ही मुक्ति अभिराम है॥ पापन को हरनहार तापन को दूर करन, अशरण को शरण जहाँ राम को सुनाम है। धन्य तुलसी को ऐसे ग्रन्थ को रचनहार जाकी शुभ स्मृति आज

छबि सुख धाम है ॥२५॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्री शिवकुमारजी मिश्र वै० हाईस्कूल कानपुर

क०-*काहू के भैया औ काहू के बाप भैय्या, काहू की लुगैय्या सुख देवे की ठाम है। काहू के छैय्या, छौना, विपुल कमैय्या भरे, काहू के मिलैय्या चित चाहिय्या तमाम हैं॥ कहत है "शिव" कवि काहू के रुपैय्या भरो, कोई रावरैय्या उमरैय्या के गुलाम है। हमरे तो भैया दुःख दरद हरैया एक साँवरो कन्हैया जाकी छबि सुख धाम है॥२६॥

(छबि सुख धाम है) प० श्री श्यामाचरण जी मिश्र शास्त्री, कानपुर

क०-ऐ री सखी घनश्याम की कान्ति देख, लज्जित हो कलानिधि दिखाता मृग चाम है। नखों की लालिमा निराली पायलों की ध्वनी, हंस दम्पती से सुसेवित घनश्याम हैं॥ कटि में बिराजे सूत्र अम्बर पीत धारण किये, हाथ में मुरली मनोहर अभिराम है। कौस्तुभ मुकुट कुण्डलो से सुसज्जित हरि नन्द के दुलारे कृष्ण छबि सुख धाम है॥२७॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्री लालमणि जी पाठक, कानपुर

क०-प्राणायाम कुम्भक पूरक अरु रेचक को ब्रह्माविष्णु शंकर को करिकै प्रणाम है॥ इन्द्रिय पञ्च प्राणन की वायु को खींच करि त्रिकुटिय के मध्य में करिय विश्राम

---

*इस कविता पर मिश्रजी को सुन्दर पदक दिया गया।

है ॥ त्रिकुटि से खींच षट चक्र में प्रवेश करि इड़ा नाहि न पिंगला सुषुमा को धाम है ॥ भनैं मणीश स्वच्छ अद्भुत ब्रह्मज्योति लखि तौ सुख पावै जीव छबि सुखधाम है ॥२८॥

क०-श्याम आज झूलत झूला राधाजी के संग में शोभा अपार शुभ सुन्दर अभिराम है। सावन सुहावन मास भामिनी को प्यारो अति बोलत पपीहा पीव २ घनश्याम है ॥ करि कै सिंगार सुभग सुन्दर मृग नैनी गावती मलार कजरी सुन्दरी ललाम है। भनतमणीश देख मोहे नरनारि सबै बांकी झांकी श्यामजी की छवि सुख धाम है ॥२९॥

(छवि सुख धाम है) पं० श्रीरामयत्नजी (वाचा) मिश्र आगरा

क०-साँवरो सलोनो दोनौं हाथ धनु बान धरे केहरी समान कटि तरकस ललाम है। निरखत खरदूषण सनाथ जातु धानबल प्रबल वलाहक सम घेरन चहुधाम है ॥ रूप है अपार मार मद को मरोरे देत चोरे लेत चित मन्द हास अभिराम है। "वाचा" है मनोहर सकल तन श्याम राम राजत रण अङ्गन बीच छबि सुखधाम है ॥३०॥

क०--निरखि निरखि जाको मोहत चराचर "वाचा" कौन कवि बरनैं छवि ललित ललाम है। परसि परसि गात मन हो प्रसन्न जात जाने क्यों आयं इतै राम अभिराम है ॥ दुष्ट देखैं शमन सम नृप देखैं दमन सम जनक पुरवासी देखे स्वजन सम राम है। जानकी जवाहरों की जटित जरी में देखैं साँवरे सलोनो नर छवि सुख धाम है ॥३१॥

(छवि सुखधाम है) पं० श्री शिवशंकरजी मिश्र कानपुर

क० तन्दुल सुदामा गृह सेवरी की बैर खाये भक्तन को तारना सदाही तव काम है। अर्जुन विभीषण प्रण राख्यो बार बार प्रभो यशुदा दुलारे राधाकृष्ण तेरो

नाम है ॥ सन्तन उबारो खल दुष्टन संहारो नाथ महिमा अपार तेरी नित्य घनश्याम है। शंकर शरण हृदयों में झूला झूल रही वृन्दावनमाली जी की छवि सुख धाम है ॥३२॥

(छवि सुखधाम है) पं० श्री रामविलास जी त्रिपाठी कानपुर

क०–देख्यो री बांकी छवि झांकी अति झमकदार झुकि झुकि झूमि २ देख्यो अभिराम है। धारे सिर कीट कान कुण्डल लसत चारु संग लिये लषण सु पूरण प्रकाम है ॥ सोहैं अति अलकैं भली मण्डल विशाल देखि मोहैं रति नाथ ऐसी सुषमा ललाम है। ऐसो रूप देखो आज भूल्यो री सबै काज तोहूं देखु वाहि जौन छवि सुख धाम है ॥३३॥

(छवि सुखधाम है) पं० श्री लक्ष्मण दासजी छोटाछता स्थान पुरी

है धन्य धन्य सुधन्य, धरणी धर्म ध्वज धर हैं जहां।
करते समुत्सव प्रेम से हर वर्ष हर्ष सनें जहां ॥
वे धन्य कविवर हैं सुवन्दित औ सुवन्दित काम है।
जिनकी कृपा से हो गया, वो धाम छवि सुख धाम है ॥३४॥

(छवि सुखधाम है) तारासिंह चौहान (छोटे लाल) कानपुर

क०–वृज में कालिन्दी कूल कलित कदम्ब डार जितय बिहार मृगा मोर अभिराम है। फूले हैं गुलाब मन्द सुरभि वयारि डोलै मन्दै मन्द परत फुहार अबिराम है ॥ वाही ठाम मंजुल जो परो है हिंडोला आजु जामे जोड़े रत्न पै गुमान वारो काम है। गोपियाँ झुलावैं गावैं मधुर मलार तारा झूलत किशोरी श्याम छवि सुखधाम है ॥३५॥

क०–श्रीराम कृष्णजी मुरारजीं का पावन मठ जामे आज सुजन समान एक ठाम है। मंदिर सुरम्य औ सराहनीय पूजा पाठ धन्य लाला राम लाल मन हरि नाम है॥ धन्य हैं पुजारी जो को रचित वितान वाँको यों ही होय उत्सव सदा ये अविराम है। वाँकी झाँकी झूलत हिंडोला जो युगल जोरी तारा भनै अमित ये छवि सुखधाम है॥३६॥

(छबि सुखधाम है) पं० श्री मुकुन्दलाल जी सिद्ध शास्त्री कानपुर

क०–हेरैं ऋषिवेदों में श्रुति से निवेदन कर शोधन कर आतमा में पायो ना ठाम है। भक्तजन जक्त में अनुरक्त कृष्णदर्शी के जप तप तनुताप से लियो ना काम है॥ अजशिव सनकादि निर्गुण गुण गाय के धाय कै देश देश लखो ना घनश्याम है। धन्य भक्ति वृन्दावन जमुना तट निकुञ्जन में देखो ये ब्रज में श्याम छवि सुख धाम है॥३७॥

(छबि सुख धाम है) पं० श्री रामगोपालजी कानपुर

क०—पूरन प्रमोद चहु ओर मचौ अवध में रानी कौसिल्या जायो सुवन सोभा काम है। धुधक मृदंगनकी चग मुरचंगनकी झाँझ बीना संख-धुनि होतो जो तमाम है॥ सुर हर खाने सैबिमानन को तान तानै इन्द्र बरसावैं फूल लै लै नाम सम है। तुलसी आनन्द सों उछाह देखि देखि कहैं राम रघुबीरजी की छवि सुखधाम है॥३८॥ इति श्री०समस्या।

(उमड़ो परै) शास्त्री श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग, कानपुर

क०–श्रवण कथाका करै कीर्तन गुणों का करै रातौ दिन हरि को ही मन में गुड़ो करै। अर्चन करै बन्दन करै दास बन जाय वाको करै चरण सेवा जाते पाप गुमड़ो हरै। कहत किशोर वही मित्र है हिये में ऐसो जानि निज आतम उसी के चरणों धरै। एती नव भक्ति हू ते हरि ना प्रसन्न होत वापै हों प्रसन्न जाको प्रेम उमड़ो परै॥१॥

घेरि घिरि आए घन अम्बर करारे कारे चलत

समीर दै झकोर झुमरो परै। छाई अँधियारी हरियाली की अनोखी छटा दामिनि दमङ्क लखि हीय हहरो परै ॥ मंजुल निकुञ्ज तरु पुञ्जतर श्यामाश्याम झूलत हिंडोल दोउ ओज छहरो परै। डाले गल बैयां दोऊ लेत है बलैयाँ दोऊ हर्षै मन मैयाँ उर प्रेम उमड़ो परै ॥२॥

(उमड़ो परै) स्वर्गीय पं० श्री सीतेश शरणजी 'प्रेम प्रभा' कानपुर

क०—तुलसी जयंती शुभसूचना पाय पत्रिका पवित्र रसरंग हृदय जुमडो परै। विविध विधान कवि कविता सुजानन की सुनिबे को उरमे अनंद झुमडो परै ॥ अब्द एक बीते मित्र मंडल के मिलवे को हरष अपार बार बार घुमडो परै। प्रेमप्रभा मंदिर मुरारि रामकृष्ण जू के मंगल मै दरश उमंग उमडो परै ॥३॥

(उमड़ो परै) पं० श्री बाबूलालजी द्विवेदी "लाल" कानपुर

भारतीय भक्ति भाव शृंखला सुदृढ़ शक्ति व्यक्ति प्रति व्यक्ति रिधि निधि सो ढुरो परै। स्वर लहरी में मंजु मानस मयंक मोद मधुर प्रमोद चहुँ ओर बिखरो परै ॥ प्रेम वारि भरित सुजान नभ मंडल में लाल कवि सघन सनेह उमडो परै। रामचरित मानस के एक एक अक्षर में भक्ति और प्रेम को प्रवाह उमडो परै ॥४॥

(उमड़ो परै) पं० श्री ब्रह्मानंद जी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

छप्पय—श्रावण शुक्ला द्वौज पड़े सरजू तट झूला। मणि परवत पै जहाँ सबै सामा अनुकूला ॥ हरे हरे तरु हरे

कीर बेलै हरियाली। हरी भूमि झूला वितान सब शोभा शाली॥ सखी सखन के राग सों मनहु मेघ घुमड़ो परै। युगुल छटा सियराम लखि आनन्द रस उमड़ो परै ॥५॥

क०—अवध कुमार छबि देखन को नारी नर धाये चहुँ ओर ग्राम मानो उजड़ो परै। पूंछत हैं दौरि दौरि जहां तहां कहां अहैं नृपति किशोर यश जाको घुमड़ो परै॥ लागी होड़ देखनको रेल ठेल धकापेल रही न अपान सुधि ऐसो झगड़ो परै। जनक नगर की डगर वन वाटिक त्र हाट वाट से ते जनु आनन्द उमड़ो परै ॥६॥

(उमड़ो परै) पं० श्री काशीप्रसाद जी अवस्थी कानपुर

क०-धाये वृजराज लिये संग में सखान भीर राधिका सखीन वृन्द झुंड झुमड़ो परै॥ बाजत मृदङ्ग डफ रागन के अलापन सों अमित उमंग त्यों अकाश गुंजड़ो परै॥ दोनों ओर झोरिन गुलाल रंग केशरि को चलत फुहारे सोबहार घुमड़ो परै॥ खेलन सुफाग अनुराग भरे दोनों दल काशीराम सखिन अनन्द उमड़ोपरै ॥७॥

क०—कीन्हो लंक जाने को पयान जबै रामचन्द्र संग कपि भालुनको वृन्द झुमड़ोपरै। त्राछिन समूह जनु बादल गराजैं जोर डंका औ निशान सों अकाश घुमड़ो परै॥ कपिन लंगूर नभ छाये सो सुहाये मनो राहु केतु अमित उदोत गुजड़ो परै। काशीराम रावण समेत दल

लीलिबे को मानौ काल कठिन कराल उमड़ोपरै ॥८॥

(उमड़ो परै) पं० श्री बन्दीदीन जी तिवारी वैद्य कानपुर

क०—लता लपटाने दल फूल फूल ताने तरु नदनवन आनँदसबै घुमड़ोपरै। कोकिल पपीहा करैं मधुर मधुर सोर नाचैं मोर भृंग झुंड झुंड झुमड़ोंपरैं॥ सीतल समीर बहैगंधयुत चारो ओर उड़त पराग सो अकास धुमड़ो परै। नंदराम रामचन्द्र लखन बिलोकौ सोभा बाग में बिदेह के बसंत उमड़ो परै ॥६।

(उमड़ो परै) पं० श्रीरामचन्द्र जी वाजपेई कानपुर

क०—सुरसरि समीप शुभ नगर बसत कानपुर मध्य जनरैलगञ्ज मन्दिर मुखड़ो परैं। सेवक सराहनीय साहूकार रामलाल साल की समैया में फूलि फूलि उफलो परै॥ सावन सुदी सातैं को तुलसी के सुमिरन को पथिक बटोही वृन्द घूमि घूमि घुमड़ोपरैं। रामकृष्ण मुरारी के आँगन रूप गागर में काव्य मकरन्दरस सागर सों उमड़ो परैं ॥१०॥

क०—भूमि नभ मण्डल औ पताल लौ छोर नाहीं पादप अंनूठो सरसात सुमड़ो परै। तामे सुहावन गुण तीनि केरो झूला पडो पालना सुघर कलिराज को युगड़ोपरैं सतयुग त्रेता औ द्वापर के पसारे माहि आवागमन की पैंगन सो घुमड़ोपरै। झूलत झुलावत चहुँ वासर सों थाक्यो नाथ अब तो विश्राम हेत चित्त उमड़ो परै ॥११॥

(उमड़ो परै) पं० श्री राधेश्यामजी अग्निहोत्री, कानपुर

क०-जाके आदि अन्त को न पावे पार शेष नाग ब्रह्मा महेश देव पचि पचि मर्यो करै। पूर्ण विश्व-व्यापी सर्व सृष्टि लय होय जामें कोई निर्विकार निराकार ह्वै कह्यो करै॥ वेद कहैं नेति नेति, जाने नहिं भेद जाको ह्वै सकार धर्म रच्छ दुष्टन दल्यो करै। तुलसी-प्रिय राम गुण सुनि रामलाल जू के आँखिन सो आनँद को श्रोत उमड्यो परै ॥१२॥

(उमड़ो परै) पं० श्री रामगोपालजी कानपुर

क०-पाती पत्रिका चिट्ठी मिथिलासों लायो है दूत अवध नरेश दून आनंद भरो परै। रानिन समेत पटरानी को उछाह बढ़्यो साँचो असनेह प्यारे रामपै भरो परै॥ राजन बुलाय लीन्हो चतुर सुमंतजी को साजि सुक्ख बाजि गज घंटा घुमड़ो परै। हीरा और पन्नन को जुवती लुटाय रहीं होत है पंखान छार सिंधु उमडौ परै ॥१३॥

(उमड़ो परै) पं० श्री लालमणि जी कानपूर

क०-सीता के स्वयम्बर में आये जब रामचन्द्र देख कै स्वरूप नर नारि चित्त को हरै। कोऊ कहैं पीतम हमारे सखि होतेए करिकै अनुराग नित्य सेवा को करों करै॥ कोऊ कहै एही वर जनक सुता के योग कोटि कोटि मन्मथ छबि देख देख कै डरै॥ भनत मणीश पूर्ण चन्द्रमा को बिंब देख जनक जी को प्रेम ज्योति सिंधु उमड़ो परै ॥१४॥

(उमड़ो परै) पं० श्री रामचन्द्र जी (वाचा), आरा

क०—आयो आयो बंकाएक कीश वीर लंका बीच शंका मन नेक नाहीं हंका यों करो करै। कहाँ है लंकापति डंका सुनि बिन पूछे मारग बतावें सब मन लैं अहै डरै॥ गया वह सभा बीच सिंह ज्यों श्रृङ्गाल बीच गरजि तरजि बातें करत बल सोभरै। काष्ठ ज्यों अनल पर तूलज्यो अनिल पर अङ्गद ढिग निशिचर कै वृन्द उमड़ो परै॥१५।

क०—छोटो सो बालक बड़ो खोटो सो लखात हाय परशु को देख मन नेक ना डरो करै। डाँटि डाँटि बोले ज्ञान नेकहूं न ताके मन भभरि भगाने भूप देखि उर ना धरै॥ निडर निरबुद्धि निर अंकुश निराशय यह मनमहं आनै सोई बात यों कह्यो करै। राम तव भ्राता पापी कहत ना सँभारे "वाचा" धीर वाणी बोले वीर रस उमड़ो परै॥१६॥

(उमड़ो परै) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलंग, रत्न कामवन भरतपुर

क०—बीतत तो हैंहीं दिन सारे यों प्रीतम बिन तो भी तो बताव आली कैसे जी काढ़ो करै। झूलतीं हिंडोला कोऊ संग लिये पीतम को ह्याँ तो बिन श्याम मन मेरो पड़ो सरै॥ कैसे मैं धरूँ धीर उर में नित उठै पीर हर लिये हरि कुब्जा तेरो मुहड़ो जरै। आयो रत्न देखौ मन भावन सावन वीर यहाँ नैन नीर वहाँ मेह उमड़ो परै॥१७॥

(उमड़ो परै) पं० श्री लक्ष्मणारामजी वैष्णव 'विज्ञ' छोटा छतापुरी

श्रीमानस के दोहे ते दो हैं सियरामचन्द्र जापै जपै पै जमदूत दूर घुमड़ो परै। सोरठ से सोरठ की ध्वनी को अधरा पै धरे धर्म ध्वज धारिन की पताका दुनड़ो परै॥ धर्म अर्थ, आदिक चौ-पाई चौपाई कहत छन्द के कहे ते स्वच्छन्दता इ भुमड़ो परै। कहाँ लौं बखानै 'विज्ञ' तुलसी कविताई को एक एक शब्द पै सुखों का सिंधु उमड़ा परै ॥१८॥

(उमड़ो परै) श्री तारा सिंह जी चौहान (छोटे लाल) कानपुर

क०-चौथे पन चार पुत्र पाये नरनाह जो तो गेह गेह तोरण पताका झुमड़ो परै। वीथिन घन सुमन सुगन्ध दर्शाये देन आँगन सुर रुचिर विमान घुमड़ो परै॥ रतन लागे लुटन रुपैया के सुमार नाहीं याचक अमीर ह्वैगे मान उमड़ो परै। अवध बधाई लागी बजे गहा-गह धुनि तारा सिंह भनित आनन्द उमड़ो परै ॥१९॥

(उमड़ो परै, पं० श्री मुकुन्दलाल जी सिद्ध कानपुर

क०-स्वर्णमय खम्भ मणि जटित जमुनातट कदम्ब तरु छाँह झूला झोका से उड़ो परै। रस्सो रेश्म चन्दन पाटी चढ़ि पियारी तुम प्यारी कहि पिया चढ़ हमसे अड़ो परै॥ श्याम नभ घटा मेघ दामनि दमक बूँद बर्षै घन घोर तरु पौन उखड़ो परै। गोपी कहैं कृष्ण की युगल छवि देख कर प्यारी प्रिया प्यारे हिय हर्ष उमड़ो परै ॥२०॥

॥ इति द्वितीय समस्या समाप्त ॥

(बन्दि कटैया) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री कानपुर

स०—द्रौपदि टेर रही चहुँ ओर कहाँ हौ छिपे यदुनाथ कन्हैया। काहे न आवत देर लगावत लाज गए नहिं लाज अवैया॥ दुष्ट दुशासन लेन चहै पत नन्द किशोर तुमी हो बचैया। बेगहि आयकै होउ सहायक ऐ पितु मातु के बन्दि कटैया॥१॥

स०—गर्भ में कष्ट जब बास हतो तब कीन्ह हो आस हरी मन भैया। ह्वाँ से निकास के पावत ही चित दै भजिवै निज राम रमैया॥ लेकिन काह कहूँ जि किशोर परी दुगुना फन्दरी अब दैया। या जग में पै बिना रघुवीर सो कौन न काउ ये बन्द कटैया॥२॥

(बन्दि कटैया) श्री राजकिशोर शरण जी कानपुर

स०—दीनदयाल कृपाल हरी जग में अपनो दुख कौन कटैया। स्वारथ मीत सबै जग में न लखात काऊ कहुँ प्रेम पटैया॥ नाथ अनेकन पापिन को गति दीन्ही क्रिया करि जैसे जटैया। राजकिशोर अनाथन के हरि जू तुमही भवबन्दि कटैया॥३॥

स०—ना दिये दान न ज्ञान सिखे नहिं ध्यान धरो हिये प्रेम पटैया। ना मुख नाम जपो कबहूँ न सुने वर बेद पुरान रटैया॥ ना यश गायों कबौं प्रभु को तुलसी वरमाल न बाँध नटैया। राजकिशोर जू देखहू पापिन के हरि जू भवबन्दि कटैया॥४॥

(बन्दि कटैया) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र, देवनगर, कानपुर

स०—भवसागर डूबत पाप की भौंर नहीं जिनका कोउ आय बचैया। राम द्वार न जानतो चाहत दीन दुखी लखि आपन अन्त समय्या॥ घर हो रहि तीरथ

के फल चाहत लेन न काशी प्रयाग जवय्या। तिनके हित राम का नामऽवलम्ब है आनन्द मुख्य ये बंदि कटय्या ॥५॥

स०–जब ते दशशीस लै आयो इतै हरि के न मिल्यो कोउ धीर धरय्या। हरि आये इते हरि ते ले सन्देश कलेश कत्यों कछु आस भै भइय्या॥ कहि्ओ प्रभु ते हरिवंश मैं हौ हरि निश्चर यूथ गयन्द नसय्या। कस सीय उबारत देर करी जबहो जगजीवन बन्दि कटैया ॥६॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री काशीरामजी शुक्ल कानपुर

स०–बेड़ी परी जगजालन की पग मीत सबै मद मोह फसैया। है छुटकार नहीं छिन को मन को बिसराम न कोउ देवैया॥ दीनदयाल कहाय प्रभू गहि बाँह उबारहु आय रमैया। फांसी फंसे भव बन्धन की रघुनन्दन जू तुम बंदि कटैया ॥७॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री नारायण जी शर्मा, कानपुर

स०–तजि मान गुमान सदा चित से बनिये उपकार सुपान चढ़ैया। शिर कालबली नित नृत्य करे क्षण भंगुर देह को नाश करैया॥ हिरणाकुश रावण कंसबली घननाद मरे रणभेरि बजैया। सब धूल मिलेंगे तेरे धन धाम जपो हरिनाम जो बन्दि कटैया ॥८॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री श्यामसुन्दरजी दीक्षित "श्याम" कानपुर

स०–ऊधो नहिं ज्ञात हमैं कछु है कि कहाँ बसिगो वह कृष्ण कन्हैय्या। खोज थकीं सिगरो ब्रज मण्डल नहि आवत दृष्टि सस्वांग रचैय्या॥ पुर के सिगरे नर

नारि भये निज कार्य्य बिहाय अकार्य करैय्या। होके अधीर भनैं सिगरे जन प्रभु "श्याम" कहां गये बन्दि कटय्या ॥९॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्रीरामचन्द्र जी बाजपेई कानपुर

स०-हेती सनेही मिले जितने निज स्वारथ के हित संग करैया। खैंचत हैं निज धामन को दृढ़ बन्धन बांधि अचूक बँधया। थाकि पर्यो भव फेरन में अब कोइ सहाो नाहिं देवइया॥ हे प्रभु बेगि उबारन को मम बांह गहो भव बन्दि कटैया ॥११॥

स०—तीरथ के हित कीन्हों पयान पोइन चारि को संग चलैया। मारग में भटकावन को बहु भाँति सनेही मिले भटकैया। देर अबेर भई अबहूँ नहिं चेतत हो नवनीत लिहैया। नाथ दया तुम्हरी बिन कौन समर्थ मेरी भव बन्दि कटैया ॥१०॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री बालमुकुन्द जी सिद्ध, कानपुर

भवसागर जीव परो तलफै दीखत ना तरि पार लगय्या। खेवटिया जग धार सहाई जिनचरणों की लेउ बलय्या॥ जो जन हृदय निवास करै वो नदनंद जसोमति छय्या। शिव सनकादिक ध्यान धरै गावै ऋषि मुनि वेद गवय्या॥ सुमरत नाम पयादो धायो जो गजन्क्र को फंद छुटय्या। कृष्ण सहाई सदा गोपिन को सोही मम भव बदि कटय्या ।१२।

(बन्दि कटय्या) पं० श्री राधेश्यामजी अग्निहोत्री. कानपुर

स०-लीजियनाथ पुकार मेरी सुन, काहे बिलम्ब भयो प्रभु रैया। दीन-पुकार सुना जब ही जब, दौर कै दासन दुःख हरैया॥ डूब रह्यो भव सागर में प्रभु, है तम-तोम घिर्यो न दिखैया। मोह की रज्जु कस्यो तन है मम,

काट तुही फंद बन्दि कटैया ॥१३॥

(बन्दि कटैया) पं० श्री विश्वनाथ जी शुक्ल चावलमंडी कानपुर

स०-ऐरी सखी ब्रजराज बिना ब्रज में ना मेरी कोऊ बात सुनैया। नाव पड़ी भव सागर के बिच दीख परै नहिं पार लगैया। नभ में लख के घनश्याम घिरे नित हूक उठै बिन पीर हरैया। आज पुकार रही सजनी द्रुत आओ यहाँ प्रभु बन्दि कटैया ॥१४॥

(बन्दि कटय्या) प० श्री लालमणि जी कानपूर

स०-दुस्साशन चीर हरो द्रुपदी को तँह जाय तुरंतहि वस्त्र बढ़य्या। डूबत गजराज बचाय लियो ग्रह मारि कै शीघ्रहि प्राण बचय्या॥ इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर नख धारि कै गिरवर गोप रखय्या। द्विज 'लालमणी' ए विचार कहैं देवकी वसुदेव के बन्दि कटय्या ॥१५॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्रीरामयत्नजी (वाचा) मिश्र आरा

स०-जबै अहिरावण रावण सो मिलि लै गयो राम लखण दोउ भैया। भव्य भवानिहि भूरि विधान सो पूजि कह्यो शिरो रखवैया॥ राम कह्यो हम काको भजैं ऐहैं नहि तात न भ्रात न मैया। हैं एक अञ्जनीपूत सपूत सो है हमरो वह बन्दि कटैया ॥१६॥

नामही लेत जगें दल के सब शोर मच्यो दैया अरु मैया। राम कहा प्रिय भ्रात कहाँ हवैं अञ्जनी पुत्र सदा रखवैया॥ वैरि विदारण धारण सिंह को देखि के रूप में राम लखैया। बोलें तबै अबै आइ गये वह केशरी नन्दन बन्दि कटैया ॥१७॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री शिवशंकरजी मिश्र कानपुर

स०-ग्राहन से भवसागर में तुम्हीं रक्षक हो मेरे कन्हैया। नाव पड़ी मझधार में आनके केवल हो प्रभो आप खेवैया। हे जगदीश दयानिधि हो विपदा में सदा दुख कष्ट हरैया। भक्त की लाज बचाय लियो वसुदेव सुदेव कि बन्दि कटैया ॥१८॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री ·लगर्भ ना तैलङ्ग "रत्न" कामवन भरतपुर

स०-कोउ कहैं रचि छंद अनेकन रत्न कहैं बस एक सवय्या। नास करौ दुख प्राणिन के कहँ सोय रहे अव-शेष मुवय्या। टेरि रहीं ब्रज बीच खड़ीं जल बृष्टि बिना बड़ि चिंतित गय्या। आय गुपाल हरौ ये दुकाल सुकाल करो भव बन्दि कटय्या ॥१९॥

(बन्दि कटय्या) प० श्री रामेश्वर प्रसादजी मिश्र (द्विरेफ) बाँदा, कर्वी

स०-हे भव वारिध के पतवार, करीन्द्र को ग्राह से दौरि छोड़य्या। विप्र के दारिद दारी दुरन्त, हे कौरव वंश के नाश करैय्या। दीनन के अवलम्ब प्रभो, अरु कालियनाग की नाक नथैय्या। मुक्त करो भव बन्धन से प्रभु देवकि के द्रुत बन्दि कटैय्या ॥२०॥

(बन्दि कटय्या) प० श्री हरिभजनदासजी त्यागी (बाँदा) कर्वी

स०-गर्भ में आइ फँस्यो जब प्राण, तो कोई नहीं वही काल लखय्या। मूत्र, मलादि, की गर्भ थली, दिन राति बनी वह वास शरय्या। लखि के चौरासी कि भीति भयंकर, धीरज धीरज हू न परैय्या। यहि काल

ँ जीवन नाथ तुम्हीं, 'हरि' के दुःख को सब बन्दि
कटय्या ॥२१॥

(बन्दि कटय्या) पं० श्री हरिचरणदासजी वैष्णव 'हरि' डाकोर टीकमजी

स०—हे प्रभु वेद पुराण सभी कहते तुमको दुःख
द्वन्द हरैया। गीध अजामिल औ गणिका पहँ कीन
दया सु दया के करैया। टेरत हौं तरणी न डुबै पतवार
रो पतवार धरैया। पार करौ 'हरि' को हरि हे भव
बन्दि को काटि के बन्दि कटैया ॥२२।

(बन्दि कटय्या) पं० श्री लक्ष्मणदासजी वैष्णव 'विज्ञ' श्रीजगन्नाथ पुरी

सुं० छं०—वो तुलसी कविता हि करैं, अरु ये तुलसी
सुख सर्व करय्या। वो तुलसी नर सेवक थे, अरु ये
तुलसी वपु देव धरय्या। वो तुलसी दुःख को हरते,
अरु ये तुलसी दुख द्वन्द दरय्या। इससे तुलसी तुलसी
से भली तुलसी महरानी है बन्दि कटय्या ॥२३॥

ए तुलसी अघको हरै, अरु वो तुलसी अघ मूल कटय्या।
ए तुलसी नित मौन व्रती, अरु वो तुलसी नित राम रटय्या। ए तुलसी
नित ही उतरे, अरु वो तुलसी प्रभु पास डटय्या। इससे तुलसी-तुलसी
से भले, तुलसी महराज हैं बन्दि कटय्या ॥ .४॥

(बन्द कटय्या) श्री तारासिंह जी चौहान (छोटेलाल) कानपुर

स०—दिव नाथ रहे तपि सावन में भुव भूमि उठी
तनु ताव कढ़य्या। उगतै तृण सूखि गये लुव से तड़पैं
बिन नीर अहार न गैया॥ अबलौं तनिकौ न तलाब भरे
अब भाव घटै नित सेर सवैया। मत तारा तू सोच

हरें तनिकौ भगदन्त सदा वर बन्दि कटय्या ॥२५॥

स०-वृजराज उठाये उतै गिरिहैं ते ह के तर हैं वृज लोगरु गैया । जिन दूध दही दुरि खात हते मोइ तारा सहायक हैं नँद छैया ॥ उमगानी उमन्ड बयारि घटा जल मूसलाधार हरो सो कन्हैया । मत सोचु मटू भय नेक नहीं मन मोहन मो वर वन्दि कटय्या ॥२६॥

स०-ग्रसि ग्राह लियो जो गयंद बलो करि हारि गयो करि कोटि उपैया । घरणी सुत बन्धु बिसारि चले जब नेक बची जग जीवन नैया ॥ अवरोधि गई गल की गति जो तब टेरेहु आधहि नाम कन्हैया । पद नग्न सिधारि उतै पल में गज फंद हरी हरि बंदि कटय्या । २७॥

। इति तृतीय समस्या समाप्ता ॥

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(ममांतेस्मृतिः स्यात्) शास्त्री पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

न माता न तातो न च भ्रातृ वर्गो न दारा सुताद्या स्तथान्ये सहायाः । भवद्धामलब्धुं भवन्नाम चैकं दयालो हृदीत्थं ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥१॥

भविष्यामि राजा जनानामधीशो धनेशो भविष्यामि पूर्णः समृद्धः । न कोऽपीह मत्तुल्यतामेति विष्णो कृपानाथ मेत्थं ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥२॥

(ममांतस्मृतिः स्यात) पं० श्री कामेश्वर जी झा उर्फ संतोषी कानपुर

परित्यज्य सन्देह सन्मोहजातं कुरुष्वात्मकर्तव्यमार्थेह मार्गम् । सखायं विदित्वाऽस्मि वच्मीह तथ्यं तवान्यैरलभ्या ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥३॥

यदीदृश्य योग्य प्रवास प्रयाणे-नवोढ़ापतेर्गन्तुमेवोद्यतोऽसि । तदैकं वचो विस्मृतौ मे न नेयं सुलभ्या

त्वयैका ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥४॥

(ममांतस्मृतिः स्यात) स्व० पं० श्री रामकिशोरदासजी दारागंज-प्रयाग

रमन्ते यथा योगिनो यत् स्वरूपे जगज्जन्म रक्षान्त वेदादि मूले। सदा स्थूल सूक्ष्माचिचिद् विशिष्टे तथा तत् स्वरूपे ममान्ते स्मृतिःस्यात् ॥५॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात) पं० श्री बन्दीदीन जी तिवारी वैद्य कानपुर

सुपीताम्बराढ्या सुदेवैर्विभूषा करब्जा शिखी पच्छ मौले विशाला। धृता बक्रचर्णः कदंबांतराले धृति स्याद् रतिःस्यान् ममांते स्मृति स्यात ॥६।

(ममांतेस्मृतिः स्यात् पं० श्री चन्द्रशेखर प्रसाद त्रिपाठ कानपुर

हरेर्नामशीघ्रं गृणन् वै गजेन्द्रो प्रयातो गतिं ग्राहतो दीनचेताः। सदा दीनबन्धो दया संविधेया प्रभो तेपदानां ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥७॥

(ममांतस्मृतिः स्यात्) पं० श्री बदरीनारायणजी शास्त्री तर्कवागीस कानपुर

निशान्ते नतिः कीर्तनं चापि नाम्नां, प्रभाते प्रवेशः प्रवाहे यमुनयाः। सपर्य्या हरेः सङ्गवे चाप्रयाणम्, दिनार्धे प्रसादो ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥८॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात्) शास्त्री पं० श्री रामशरण जी द्विवेदी, कानपुर

बिबुध तुलसिदास स्वास्य पद्मोत्थितानां सहृदय हृदयैसद्भाव वर्द्धितानाम्। रघुवरचरितानां श्रोत्र भूमिगतानां दशरथ तनयांघ्र्योः साममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥९॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात्) पं० श्री श्यामाचरण जी मिश्र शास्त्री, कानपुर

उडुगण शुचि भूषः शुभ्र पीताम्बराढ्यो, अपहृत शशिकान्तिर्मीनमालम्बम नः। अखिल जन हितैषी भक्त कल्याणकारी, नटवर गिरधारी सोममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥

(ममांतेस्मृति स्यात्) पं० श्री रामयत्न जी (चाचा) मिश्र आगरा

अहंकारिणः किंवदन्तीदयलभ्यम् कदा ज्ञानमायाति क्रोधोद्धतानाम् । मनोमाददात्री हरेः का सखी वा स्मरारे-र्मुरारेममान्ते स्मृतिस्स्यात् ॥११॥

चलन्तो हसन्तः स्वपन्तः स्वसन्तो ह्यनायादृशोमात्म-जन्तीहलोके। अबोधोद्धतानां सुखोन्नतानां सदाभक्ति-भाजां ममान्ते स्मृतिस्स्यात् ॥१२॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात्) पं० श्री रामप्यारे जी अवस्थी कानपुर

जगत्त्राण कर्ता सदानन्दकारी सदा दुष्ट हंता सतां चोपकारी। ब्रजे गोप गोपी सभा मध्यचारी कृपा-लुश्च तस्मिन्ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥१३॥

सदानन्द सिन्धौ जगज्जाल हेतौ रमानन्द पात्रे शिवा नाथ नाथे। दयालौ ऋषीणां मुनीनां जनानाम् चायोध्याधि नाथे ममान्तेस्मृतिः स्यात् ॥१४॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात) पं० श्री मुकुन्दलाल जी शास्त्री सिद्ध कानपुर

मनोऽहर्निशंकृष्णापादारविन्दे अहं चित्त वृत्ति-र्मेतत्स्वरूपे। सदा कृष्ण नामस्मरामिश्रृणोमि प्रयाणे-ऽपिकाले ममान्तेस्मृतिः स्यात् ॥१५॥

महेशादिदेवैर्सदावन्दितानाम् त्रिलोके मुमुक्षार्थिभिः सेवितानाम्। वरं केवलं मुक्तयेऽहंप्रयाचे हरेते पदानां ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥१६॥

(ममान्तेस्मृतिः स्यात) श्री रँगीलीशरण जी वैष्णव (महार) मथुरा

मुनीन्द्र प्रजेगीयमानस्य प्रीत्या मुकुन्दस्यहृद्याऽनवद्याङ्गनायाः। प्रमोदप्रदात्र्याश्च कीर्त्यात्मजायाः सुपादाब्जरेणोर्ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥१७॥

ललाटाक्षिभीष्मात्मभू नारदाद्यै रजस्रं सुबोधात्मचिन्ताप्रलग्नैः। यतीन्द्रप्रधानैः सुगीतस्यविष्णोः सुपादाब्जरेणोर्ममान्तेस्मृतिः स्यात् ।१८॥

(ममांतेस्मृतिः स्यात्) पं० श्री रामेश्वर प्रसाद जी मिश्र, बाँदा

क्वणत्किंकिणीहस्तवीणाधरायाः ह्यनङ्गादिभिः पूजितैः पूजितायाः। विधात्रादिभिर्वन्दितैर्वन्दितायाः जगन्मङ्गलायाः ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥१९।

प्रसीदस्व देवित्वदीयार्भकास्मः सुबालैःसमस्तैः सदा संस्तुतायाः। स्वहासेन तेभ्यः सुबुद्धिप्रदायाः सदा शारदायाः ममान्ते स्मृतिः स्यात् ॥२०॥इति सं०प्र० स० समाप्ता ॥

(तत्वरत्नाकरोऽयम्) शास्त्री पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग, कानपुर

भूरापो व्योम वह्निः श्वसन इति समान्यत्रतत्वानि पंच तेषां शब्दादि संज्ञाः प्रचलित विषयाः पंचरत्नानि तानि। नद्यः सर्वेन्द्रियाणी तरलगतितया गत्य तत्राविशन्ति देहो मानाम्बु पूर्णो विलसति सुतरां तत्वरत्नाकरोऽयम्।१।

यत्किञ्चिद्वै जगत्यां जगदिदमखिलं ह्यीशवास्यं श्रुतीष्टं
यद्भूतं यच्च भाव्यं तदपि पुरुष एवेरितं वा भविष्यत् ।
तत्कस्मात्संगिरन्ते जगदिदमनृतं सूरयो माम्वदन्तु
मत्प्रश्नो नास्ति नष्टः प्रलपन विधितस्तत्वरत्नाकरोऽयम् ॥२॥

(तत्वरत्नाकरोऽयम्) प० श्री कामेश्वर जी झा शास्त्री कानपुर

विविध विबुधदेवैः सेवितो वाक्तरंगः सरल सदुपदेशः स्वर्गवृत्त प्रभृतिः । जगदवन यशस्वी सभ्य जीमूतबन्धो जयति निजपुरेऽस्मिस्तत्त्वरत्नाकरोऽयम् ॥३॥

सफल सकल कृत्यः सर्वविज्ञाभिनन्द्यो दलित सकलविघ्नः शुक्ल चन्द्रोपमेयः । दिशिदिशि निजदेशेऽप्यन्यदेशेऽविलम्बं भवतु वितत कीर्तिस्तत्त्वरत्नाकरोऽयम् ॥४॥

(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं० श्री स्व० रामकिशोरदासजी दारागंज-प्रयाग

अखिल भुवन बीजोद्दर्शितोदार लीलो भव तिमिर विनाशो रामतत्वप्रकाशः । श्रुतिनिगमनिकायो मोदृदः शङ्करोति तुलसिकरनिवद्धस्तत्वरत्नाकरोऽयम् ॥५॥

(तत्वरत्न करोऽयम्) पं० श्री चन्द्रशेखर प्रसाद जी त्रिपाठी कानपुर

मनसि परमबुद्ध्या राममीशं नियुज्य कविवर रचनानां तत्व मात्रं विचन्वन् । शिव वचसि शिवायै मानसं चाकलय्य जगति तुलसिदासस्तत्व रत्नाकरोऽयम् ॥६

(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं० श्री बदरीनारायणजी तर्कवागीश कानपुर

जीवात्धत्ते हृदि मणिवरे मानसानि स्वचक्रे
शङ्के चाहं कृतिमसुभृतामिन्द्रियादेः प्रसूतिम् ।

आकाशाद्विश्य नपिहृति यन्त्यां गदायां
श्रीवत्से यत्प्रकृतिमतुलां "तत्वरत्नाकरोऽयम्" ॥७॥
(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं० श्री रामरत्नजी त्रिवेदी कानपुर

रघुवृषभ चरित्रो दाम मुक्ता मणीनाम् हृदय घन तमिस्रा धूनन शोचतानाम्। समुदयमुपजह्ने मानसात् प्राकृतेभ्यो जयति तुलसिदासस्तत्वरत्नाकरोऽयम् ॥८॥

इद मन्दिरं नव वैकुण्ठ धाम ह्यमी मानवा नोसु धाशस्तुदेवाः। अय वग्रहः सान्द्र भूषो मुरारेः जगद्भास कस्तत्वरत्नाकरोऽयम्। ९॥
(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं श्री लालमणि जी पाठक, कानपुर

श्रीराम कृष्ण चरितं श्रवणं सदैव मुरारेः कीर्तन करोति नितरां स्मरणं मुरारेः। सेवार्चनं चरण वंदन दास्य भावं सख्यात्म भावस्तत्वरत्नाकरोऽयम् ॥१०॥
(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं० श्री मुकुन्दलालजी सिद्ध, कानपुर

ब्रह्मैकः शंकरूपाज्जनयति गुणकं सात्विकाद्यं तृतीयं तच्चकोऽहं स्वरूपः प्रकटयतिगुणैर्देव भोगेन्द्रियाणि। भूम्यप्तेजः ख वायुर्भवति निजगुणाऽऽधार कोऽयं सदैकः सव जीवाद्यनेकं पृथगिव कुरुते तत्वरत्नाकरोऽयम्।
(तत्वरत्नाकरोऽयम्) पं० श्री रामबलजी वाचा) मिश्र आरा

यान्त्यापारं सतत विहगास्सर्वरत्नाकरस्य वध्वा काष्ठैर्गिरिवरगणैः पारमीयुःकपीन्द्राः। आवाल्याद्वै बहुगुरुमुखात्तत्वमस्यावबुध्वा पारं नेहुः सहिवुधगणास्तत्व रत्नाकरोऽयम् ॥१२॥

किञ्चादातुं गुरुवरपदं नौ ते नित्यं सुशिष्यः धृत्वा किञ्चा वहति हृदये सम्मदं सन्ततं यः। कश्चान्देव्य स्सतत विपुलैः विश्व कि वन्ना तु० कृ० कृष्णो लसति भुवने तत्त्व रत्नाकरोऽयम् ॥१३॥

(तत्त्वरत्नाकरोऽयम्) र० श्री [illegible] जी अवस्थी, कानपुर

देवानां देवस्सदा दुष्ट हंता लोकानां त्राता दयालुश्च त्राता। गोपानां मध्ये विहरी मुरारिः कृष्णो भवेत्तत्त्व रत्नाकरोऽयम् ॥१४॥

भक्तानामिष्टः सदा माङ्कारी राजन्यानां शासको रम्य मूर्तिः। लक्ष्मी नाथो भारतो पृथिव्याः राजा [illegible] रत्नाकरोऽयम् ॥१५॥

हरति सकल दुःख [illegible] दयालुः सकल भुवन धन्यो लोक नाथो मुकुन्दः बिहरति सुखकारी [illegible] जनानाम् जयति जयति कृष्ण-स्तत्त्वरत्नाकरोऽयम ॥१६॥

इति सं० १९९८ की समस्यापूर्ति संग्रह

अथ सं० १९९९ की समस्यापूर्ति संग्रह

आषाढ़ शुक्ला सप्तमी मङ्गलवार

श्रीसभापति— पं० **श्री ब्रजभूषण लाल जी "निश्चल"** जनरलगञ्ज, कानपुर

आप हिंदी कविता के अच्छे मर्मज्ञ हैं। आपकी कवितायें प्रायः पुराने ढंग की होती हैं। आप पुराने कवियों में हैं।

हिंदी समस्या—(१) चूक नहिं मौकारे। (२) टटका (३) दाठ तेरी कहूँ लागारी।

संस्कृत समस्या—(१) पारंगतः। (२) मां माधवौ।

स्वतंत्र विषय में—गोस्वामी तुलसीदासजी का सिर्फ १ छन्द।

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्री रामशरणजी शास्त्री, कानपुर

क०—अगनित असंख्य जन्म जन्म यम यातनायें, देखि देखि, अजौं भोग भूख नाहिं लौका रे। टूटि है निमेष में निमेषन की पांति जबै, चकित अचानक ही चौंकि हाय ? तौका रे॥ पीता जा पियूष घूंट राम नाम एक सांस, राम भक्ति गहि ले अंशकनीय नौका रे। खिच निशङ्क भव वारिधि में जौ लौ चह, जैहै राम धाम यासे चूक नहिं मौका रे॥१॥

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्री बालेश्वरजी तिवारी, कानपुर

क०—भीषम भयावह भव सिन्धु बीच बीचियों में भारी भवरों में फँसी पाप मयी नौका रे। करले कमाई कुछ धरम भलाई मूर्ख, मान तन मन से करु साधु द्विज गौका रे। मत्त क्यों पड़ा है मद माया काम क्रोध में तू, पार करना हीं है अपार सिन्धु भौका रे। आवो जुट जावो दिखलाओ भक्ति भाव भव्य, अबतो 'बिनीत बाल' चूक नहिं मौका रे॥२॥

(चूकि नहिं मौका रे) पं०श्री लक्ष्मीकिशोरजी (किशोर) तैलङ्ग कानपुर

स०—सजि दल राम चढ़े गढ़ लंकहिं निश्चर दल सब चौंका रे। त्राहि २ करि घुसहिं भवनमहँ तिरियन कहिय हौंका रे॥ कहत किशोर मंदोदरि सुनुपिय शवद मोर बड गौका रे। सियहिं समर्पि मिलहु रघुबर ते अजहुं चूक नहिं मौका रे॥३॥

क०-एरे मनमूर्ख तुम्है पूरा ये भरोसा था कि ऐसा ही रहूंगा सदा हृष्ट पुष्ट भौंका रे। लेकिन वो आस तो कपूर हुई वक्ति और जवरन बुढ़ापा दौड़ मूड़ चढ़ि दौंकारे ॥ अवहूं किशोर तुम्है होश नहीं आता अरे फिरभी वो जवानी लौट आवैगी धौंकारे। छोड़ यह मान कहा मान भज सीताराम होजा होशियार ऐसा चूक नहि मौंकारे ॥४॥

(चूकि नहि मौंकारे) श्री रत्नगर्भ जी तैलङ्ग कानपुर

क०-कोऊ परे हैं विविध पथ में विलीन "रत्न" कोऊ हैं कहत छू छू दूर दूर चौंकारे। कोऊ उमगे हैं इस देश की परिस्थिती में करत बिचार ढंग मिलत न गौंकारे ॥ हमने तो यही समझा है आजकल्ल यार भवसे पार होने को यही है एक नौकारे। करलें तीर्थधाम औ भजलें ी राधेश्याम पाया है समै तो फिर चूक नहि मौंकारे ॥

(चूक नहिं मौंकारे) पं० श्री शिवकुमारजी मिश्र कानपुर

क०-पार करि लश्कर, फौज, फाटा शिशुपाल की ाव, जाति उमा मन्दिर सकुचात हिय हौंकारे। उर ुःख भारी, वह रुकमणि बिचारी; तजिके समस्त साज ाज सुख भवकारे ॥ हिय घबड़ाती, चली जाती सहे- लन संग, नन्द के कुमार की मिलै की उर शौंकारे। ्रगट भये कृष्ण मनमन्दिर से समुहे आयं सुनिकें पुकार ेग चूकि नहिं मौंकारे ॥६॥

(चूक नहि मौंकारे) पं० श्री लालमणि जी पाठक कानपुर

क०-बालापन खेलि बाल संगमें गवाँय दीन्हो कौमार कोपाय फूल गए जिमि लौंकारे। जवानी कोपाय

दारा पुत्र सँग केलि कीन्हो माया लपटानी जिमि चिपटत जलौकारे ॥ तीनो पन बीते कर्मधर्म अरु दान बिन कैसेके तरौगे भवसिन्धु चढ़ि नौकारे। भनत मणीशए जन्म योंही सब बीत गयो सीताराम राम भज चूक नहिं मौकारे ॥७॥

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्री ब्रह्मानंदजी मिश्र कानपुर

क०–एरे नर मयिक प्रवाह अति वेग मों अधार बिन बहो जात जैसे कोउ लौकारे। तरल तरङ्गन के खाय के थपेड़े जैहै भंवर मो डूबि बिधि काहू न बचौकारे ॥ याते टेरु हरिको हरैंगे भव बाधा दहि ब्रह्मानन्द ताहि को अधार दृढ़ नौकारे। घूमि चौरासो लाख योनिन मनुज तन पाय भजु राम काहि चूक नाहिं मौकारे ॥८॥

छं०–जिनके है परतन्त्र महत दुख [illegible] नहिं चलत जिबौकारे। जिनके शासन में धन जन का [illegible]नो पड़त बनौकारे ॥ तिन भूपन में होय युद्ध यदि तो निज देखु बचौकारे। कर बल छल की कुटिल नीति रखि आपन चूकु न मौकारे ।९।

(चू० नहिं मौकारे) प० श्री मनेशशरणजी प्रेमप्रभा कानपुर

क०–कोटिन बिताये जन्म धामधन बामही में काम क्रोध लोभ मद मोह मन छौंकारे। दुखही को मानि सुख सम्पति नशाये तन रंचहू न पायो मुद मंगल बनौंकारे ॥ दींनबन्धु दीनानथ दीन्हो तन मानुष को पार भव वारिध बिचारि तोहि नौकारे। प्रेम प्रभा ध्यावै चरणारबिन्द रामचन्द्र तेरी बनि जावै अब चूक नहिं मौकारे॥

क०-जनम अनेकन अनेक योनि जन्मि २ लक्षचवरासी भये भ्रमत नशौकारे। रञ्चहू न पायो सुख शान्ति सपनेहू सांच आंच में तपाये तन काम क्रोध रौकारे॥ साधन सकल सिद्धि बाधन विदारन को दीन्हो : देह तोहि तेरही बनौकारे। प्रेम प्रभा पौका परि जाय जो निहारे हाथ जु रघुनाथ अब चूक नहिं मौकारे॥११॥

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्रीकालीप्रसादजी कानपुर

क०-उद्यम उपाय में बितायो सब जन्म सारो कीन्होना बिचार सार जौन तेरे गौकारे। चेतु अब चेतु चित्त मनहिं लगाय जपु सीताराम २ तारन जो भौंकारे॥ काहे माया जालन के फंदन फँसो है सब उमिरि गंवाये देत यामे काहै भेलोकारे। मानुष तन खोउना बनाउ भलीभांतिन सो हरिगुण गाउ अब चूक नहिं मौकारे॥

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्री राधाकृष्णजी कानपुर

क०-जनम नसावे अनमोल तन गवावे काहे ध्यान में न आवे गहु रामनाम नौकारे। नौका सहारे मौका ताकि भक्त रामलाल तुलसी जयन्ती आज रची सबके गौंवकारे। गौंका बिचारि राधाकृष्णने कही है छुन्द भजिले सियराम मन अन्तके सुखौकारे। ज्ञान मन्त्र देत विज्ञानी सुछन्द कहत समै पावे नहिं अन्त प्यारे चूक नहिं मौकारे॥

चूक नहिं मौकारे) पं० श्री रामगोपालजी शुक्ल कानपुर

क०-आती नहीं कहे करके कोई भी विपत्त होश्करमही कराता समै का चेत मौकारे। बनिके सुकर्मी हरिहर सों जो प्रेम होय दया करौ दीनन पैं ऐसा येह

मौकारे ॥ होनी अन होनी सन्त सज्जनहीं जानते हैं हिय के कपाट खोलो कपट का ना मौकारे। वरतमानहालतकी कठिन समस्या है नाम अमर चाहो तो चुक नहिं मौकारे॥

(चूकमत मौकारे) पं० श्रीरामयत्नजी मिश्र "वाचा आरा

क०-वाचा नू विचारे चित्तचञ्चल अचञ्चल कर लोक पारावार बीच डारे देह नौकारे। गिरिजा गिरीश गणराज गुरु को विहाय पालन भुलाय तात मात भ्रात गौकारे ॥ लालच बहादे दूर धूर में मिलादे मोह लोल ललना का लाभ ललित दश सौकारे। आज कल्हपरसे अघटित घटना क्या घटे शोचि हरिहरको भज चूक मत मौमारे ॥१५॥

क०-आया कर्मबंत बीच नीच क्या [illegible] कर डारे लिप्सु सब्य भूलादेह नौकारे। [illegible] इन्द्रियों से पांचों [illegible] पाय [illegible] कठिन असाध्य हाय चौकारे ॥ चेतजा चलाकी कर चतुर चौकन्नावन गुरु गोविन्द भज सद्गुणाधर नौकारे। बहुत पोया है अब उज्ज्वल प्रभात लख गया वक्त आता नहीं चूक मत मौकारे ॥१६॥

(चूक नाहि मौकारे) पं० श्री रामगोपालजी भट्ट कानपुर

क०-गर्भ में पुकारो तब प्रभु ने उबारो आनि बाहर बिसारो नेक पाप ते न चौंकारे। ज्वानी जोर जुवती के रंग से उमंग भरे विषैधार माझ क्यों डुबाये देत नौकारे॥ हरि सों न कीन्हों प्रेम कीन्हों परस्वार्थ नाहिं बार बार फेरि ऐसो बनै ना बनौकारे। अबहूं सचेत ह्वै कै भजिये गोपाल हिये जनम अमूल्य पाय चूक नाहि मौकारे।१७

(चूक नहिं मौकारे) पं० श्री नारायण सहायजी उन्नाव

क०–मोह मद छाके घोर निद्रा में अचेत सोवै एती वैस बीत गई अबलों न चौंकारें। कलि की कुचालियों से कुचला हुआ है खूब तऊ तेरे हीय मै न होत हाय! हौकारे॥ पापन के पाहनते बोझी मँझिधार माँहि तेरी भव सरितामें डूब रही नौकारे। नागर मनुज तन पायेगा न बार बार चैत कर चेत यह चूक नहिं मौकारे॥१८॥

(चूक नहीं मौकारे) प० श्रीजगन्नाथ प्रसादजी उर्ड

क०–सिंधु भवधार बेकरार नहीं वारापार गुरू कर्ण धार यार काम बना गौकारे। बित्त पर नारि को निवार नानिहार चित्त हित्त को बिचार करि होय नहिं जौकारे॥ कहिं जगदीश निकर चौपर चौरासी घर आशा त्याग पाँसा फेंकवारा और पौकारे। चाहै जो बनौका नर देह लागि रौका गयो राम नाम नौका चढ़ि चूक नहिं मौकारे॥

(चूकि न मौकारे) पं०श्री रामकृष्णजी तैलङ्ग कानपुर

तुमतो कहत पढ़ब अंग्रेजी ऐसा बढ़िगा शौका रे। लेकिन पहिले घरका देखो आटा मिलत न जौका रे॥ देखि देखि बाबू लालनन का बना चहत का भौंका रे। अबहूं रामू संस्कृत सीखो ऐना चूक न मौकारे॥

(चूक नहिं मौकारे) प० श्रीदेवीशङ्कर जी द्विवेदी कानपुर

समय है कराल काल नित्य घंटा घिरती चौंदिश श्याम वीचरे। भाई मित्रकलत्र भगनी सुत कुटुम्ब परिवार संसार धनरे॥ शङ्कर, विन कोऊ काम न आयेंगे भुवन के भ्रम जालन मेरे। जानत है जगति मध्य जन्म जङ्ग भारी तापे रेमन चूक नहिं मौकारे॥२०॥

इति प्रथम समस्या पूर्ति समाप्त

(टटकी) पं० श्री रामशरणजी शास्त्री द्विवेदी कानपुर

क०—अयुत गजेन्द्र बाहुबल की बिलानी धाक धर्म की धंसी त्यों धरा ज्योंही लट लट। झपटि न पायो झट झटकि अटकि हटि लटकि परयो न बाट आई हाथ पटकी॥ द्रुपद सुताके मुख कढ़न न पायो कृष्ण शाटी में पिताम्बर की पीत छुटा छिटकी। तुरी को न काम कतौं वेमा को न नाम घेरि अम्बर अंबारि लागी अम्बर की टटकी॥

(टटकी) पं० श्री शिवशंकरजी मिस्र शास्त्री कानपुर

स०—वीथियों में ब्रज गोपियों की प्रभु छीन लई शर से मटकी। थाम लई कर श्याम का बामने होने लगी झटकाझटकी॥ नट नागर गागर फोर दई हंसती सवहीं गृह को सटकी। बालन को संग साथ लिये मिलि लाई दही टटकी टटकी॥२॥

(टटकी) पं० श्री विश्वनाथजी शुक्ल कानपुर

स०—इक बात सुनो मनमोहन की ब्रजकुञ्ज में जाय हमें हटकी। गह के मम बाँह मरोर दई हंसके उनने अंगिया झटकी॥ बरजौ हमने बहु-भाँति उन्हें झकझोर हमें मग में पटकी। दधि खाय लियो सबने मिलके अरु फोर दई मटकी टटकी॥३॥

(टटकी) प० श्री दयारामजी त्रिपाठी कानपुर

स०—काजर आंनि मनोहर कोरन देरत देखि नवीन चकी। फूलसी कोमल सूलति मोमन देखत कान्ति कुचों कचकी॥ चन्द की चांदनी सी छिटकी मुख शुभ्र सभांरति भूमटकी। दामिनि सी वह भामिनि सुन्दर दर्गा-

रिनि जानि परी टटकी ॥४॥

(टटकी) पं श्री राधेश्यामजी अग्निहोत्री कानपुर

स०–अब श्याम कहाँ चलिके रहिये जब श्याम घटा सिर पै झटकी। वहु डूब रह्यो ब्रज चारहु ओर दिखाय न कोउ धनी भटकी॥ तब तो रहै इन्द्र सहार यहै अब सोउ भयो कपटी हटकी। अब लेहु बचाय हरी जलदी बिपदा बरसी टटकी टटकी ॥५॥

प०–सखे! आके खेलो बहुरि मिलि के ग्वाल जन में। करो मानौ-लीला दिन सुखद हों भारतिन के॥ भरो गीता-ज्ञान प्रगति शुभ हो धर्म—वर की। मिटें पापाचारी धरम-पथ हो नीति टटकी ॥६॥

क०–भारत के प्राण अरु, प्राण निज भक्तों के हो दुखद-दशा तो देख लेते धर्म भट की। एक द्रौपदी के काज, भागे द्वारिका ते नाथ सैकड़ों हैं आज करी जातीं बिन पटकी॥ मेरी राज्य लक्ष्मी से करिके च्युत हमें आज मांगने पै धक्का बक्का देते वहु झिटकी। प्राण! आके भारत में, गीता का सुज्ञान देके बिस्मृति अतीव को वना दे आज टटकी ॥७॥

(टटकी) पं श्री बालेश्वरजी तिवारी कानपुर

क०–पूछला पै कुछऊ न बोलेले 'विनीतबाल' हमरा से बतिया वतावे अट पटकी। हम हारि गईलीं धीरज धरु गम खाउ बाकीर न आदति गइलि झटपटकी॥ एक मन करेला निकाड़ि देईं घरवाँ से दूजे मन करेला उठाइ देईं पटकी। बाटे मन सोख कुछु कहलो न जात बाटे बसिया खियावे रोटी आप खाले टटकी ॥८॥

(टटकी) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

स०–हम जात हतीं दधि वेचनको मग कान्ह मिलो तो गई ठिठकी। लखि मोहन मूरति "रत्न" छुटा नहिं

जाय कही व व्यथा घटकी ॥ अकुलाय गई घबराय गई तो उतार धरी सरकी मटको ! झट आय के बाने उठाय लियो सखि आज ये बात भई टटकी ॥९॥

(टटका) पं० श्री शिवकुमारजी मिश्र "शिव" कानपुर

स०—सुन ऐरी सखी एक बात कहूँ, इय प्रेमिन की झफड़ा झटकी। हम जाति हुतीं दधि बेचन को 'शिव' गैल गही जमुना तटकी ॥ वहां श्याम धरे मुरली मुख पै अरु राधे खड़ी सरले मटकी। एक दूसरे पै इमि रीझ रहे अ टोना कियो उनकी टटकी ॥१०॥

(टटकी) पं० श्री लालमणि जी पाठक, कानपुर

स०—दधि बेचन जात सखी ब्रज में सिर पै धरे जात है वो मटकी। मटकी हित कृष्ण छिपे है वहाँ बर जोरी करी धरिकै पटकी ॥ पटकी न खबर है व्याकुल सी अकुलान चली गृह को झटकी। झटकी से चली नँद के घर में ए मणीश उलाहना दियो टटकी ॥११॥

(टटकी) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र, देवनगर, कानपुर

क०—सांझ समय गई जल भरन कलिन्दी कूल देखी थी अनूप छटा खड़े श्यामनटकी। पीत पट गुंजमाल कुं-डल मुकुट मोर धारिके त्रिभंगी गति गहे डालवटकी ॥ वंसी को बजावै राग सोहनी अलाप रहे भूलि सब जीव अस मनि गति झटकी। सचर अचर भये अचर सचर भये ब्रह्मानन्द पाय पाय मुक्ति लही टटकी ॥१२॥

क०—जादू सो करेजे लागो महि भहराय गिरी पड़ी श्याम पायन के पास जल मटकी। धाय के उठाय लियो गोद माहि नंदलाल चौंकि परी

ताकी छवि हिये जाय अटकी ॥ पानी पानी भई देह नेह से न भावै मोहिं घर वर कोइ सुधि आये नटखटकी। आली भइउँ बावली उनावली सी हिये मर्चा देखूं सदाश्याम रहे प्रीति नित टटकी ॥१३॥

(टटकी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

स०–यह देह कहै सुनरे मनुवा तुव संग में लागि बड़ी भटकी। बहुतेरक योनि में घूमी फिरी बड़ भाग से आय यहाँ अटकी॥ अब हूं नहिं छोड़त मोहि किशोर सुफेर चहै हमको पटकी। तुम दूर रहौ तजिदो हमको हम सूखी रहैं या रहैं टटकी ॥१४॥

स०—जबसे घनश्याम गये ब्रज से तब से सखि काह कहूँ घटकी। घबरानी फिरूं अकुलानी फिरूं बबरानी फिरूं ब्रज में भटकी॥ उस नंद किशोर ने ऐसो छल्यो हिरदे से लगाय दई झटकी। इतकी न रही उतकी न रही अरू सूखी रही न रही टटकी ॥१५।

क०–चलिये सखि आओ चलें मैया जसोदा ढिग कहिहैं सब बात या कान्ह नट खटकी। होत ही सकारे सगलीने ग्वार वारे रोज आवैं हम द्वारे बात बोलै खट पटकी॥ जबलों मैं अयानहुती तौलों मैं अयान हुती भई हूँ 'किशोर' बात जानू घट घटकी। कहे नो न मानै बातैं लहरी बखानै याते बरजो निज कान्हे बात ये है नई टटकी ॥१६॥

(टटकी) पं श्री प्रेमप्रभा जी कानपुर

क०–जाति रही एकही अकेली अलबेली अली बेंचैं दधि माखन को शीश धरे मटकी। सामुहे आवाज वृजराज सुनि बांसुरी की नेक सी विलम्ब सो अचम्भि रही ठिटकी॥ झपटि सपटि कान्ह छीनि दधि लाग्यो खान छीनो चह्यो बाल की प्रवाल माल लटकी। प्रेमप्रभा त्योंही बनमाल बनमाली जू की लाल लाल बाल कै उतारि लीन्ही टटकी ॥१७॥

क०–आली कालिह विथित विहाल परी श्याम विनु आई नींद तनक
तहाहीं चित्त भटको। देख्यो एक सपन सुनाऊँ तोहि आधी रैन माने
काहु आवन का अवाज कान खटको॥ हेरो हिय हरषि निहारी श्रं
विहारी जू के झलक परी री मोहि आभा पीत पटकी। पायो सुख
अमित खवायो मुँह मांहि वाके, मटका निकारि नवनीत मंजु टटकी॥१८

क०–स्वकर सँवारी वृषभान की कुमारी आज माहैं वृजराज म
मंजु वेणी लटकी। तार २ बारन के विपुल सितार बांधे साधे पुहमा
बीच बीचन सुघट की॥ छाई नभ मडल ते आइ महि मंडल लै
आभा चन्द्र भानु अप्रमान भूमि छिटकी। प्रेमप्रभा रञ्चहू न मोसो क
जात मानो विरची विरञ्चि संचि शोभा विश्व टटकी॥१९॥

(टटकी, पं० श्री नारायण सहायजी उन्नाव

स०–लटकी लटकी अनुहारि सदा मन मोहति है मु
सों लटकी। अधरामृत पान करै निन ही चित चौगु
चाह चढ़ी चटकी॥ नट नागर नेह नवीन अली कर कंज
मोंहि रहै अटकी। मधुरी मुरली मुरलीधर की नित नूत
तान भरै टटकी॥२०॥

(टटकी) पं० श्रीश्यामलालजी शास्त्री देवगांव, हमीरपुर

क०–जाकी इन्द्र बरुण कुबेर सदा कृपा चाहत जा
नारदादि ऋषि जोहत हैं बटकी। परम प्रचण्ड ख
खण्डिवे उद्दण्ड जाके दोऊ भुजदण्ड दीन दुख को
हटकी॥ ऐसे आनन्दकन्द नन्द के दुलारे को ब्रजाङ्गना
अपनाये अरु टेरै दै दै टटकी॥२१॥

(टटकी) पं० श्री श्यामसुन्दरजी दीक्षित कानपुर

स०–इक नारि चली जमुना जल को मग में ब्र

चन्द से जा अटकी। हटकी झटकी झटकी बहु सा अरु गैल में गागरि को पटकी॥ करिके नव केलि कला सुखदा गहि गागरि को गृह का सटकी। पुनि आइयो कालिह इसी क्षण में कह श्याम से बाल गयी टटकी॥२२॥

स०—नव नीरद श्याम कलेवर में शुभ कान्ति पिताम्बर की छटकी। कराकृति कुण्डल का छवि से मुख पै लटकीं अलकें चटकी॥ स्मित वक्त्र हो मातु यशोदा चलीं कर को कर सों गहि कै हटकी। उहां कुंजन में मति जैयो लला बहु भेप धरैं रहतीं टटकी॥२३॥

(टटकी) पं० श्रीकाशी प्रसादजी शुक्ल कानपुर

क०—जल को भरन गई यमुना निकुंजन में सघन कदंबन अंधियारी मांहि भटकी। संग ग्वाल बाल लिये आये नंद लाल तहाँ छीन बरजोरी लई पटकि दई मटकी॥ जाउँ घर कैसे सासु ननद रिसैहैं मोहिं धीरज न होत मैं अधीर भई खटकी! कैसे कोऊ जान पैहै बीरगृह छाँड़ि कहूं होति अनरीत यह तिहारी सौंह टटकी॥२४॥

(टटकी) प० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

स०—अति मोहनी वेणु धुनी सुनि ग्वालिनि ध्यान धरी वंशी वटकी। नव सप्त शिंगार करी सो करी सुधि नाहीं रही बिथुरे लटकी॥ इक चञ्चल अञ्चल बाँधी नहीं दृग एक में अञ्जन दे झटकी। पियके हियको सम-झाई नहीं चट राह चली यमुना टटकी॥२५॥

स०—अति देर करी घर आई अरी रही साथ में तू कितको भटकी। अब देखती हूँ रङ्ग और ही है कर में यह छूँछि लिये मटकी॥ अङ्ग

भूपन हैं लटके झटके दुइ एक चुड़ी कर की चटकी। कहु 'वाचा' सह्‌
अब गोपुन्हीं जनु राह गई यमुना टटकी ॥२६॥

(टटकी) पं० श्री रामगोपालजी भट्ट कानपुर

क०—चटकी चटाक चित हटकी विशेष मैंतो झटकी भई नीपूर्ति लेखहूं भटकी। बटकी बराई नीर तटकी मिलाई फेरि लटकी लपेट में बिचारी नंद नटकी। घटकी घटाई संत सठ की सटाई खूब गावत गोपाल यों तमाम रात रटकी। अटकी यहाँ पै मति भटकी कबीन की खटकी सबै को ये समिस्या देखि टटकी ॥२७॥

(टटकी) पं० श्रीजगन्नाथ प्रसादजी द्विवेदी चन्दौली—उरई

क०—आज सखी मथुरा को गई सिर पै धर गोरस की सटकी मारग में घनश्याम मिल्यौ रह्यो रोक मेरी बहियां झटकी ॥ हाथ धरो जगदीश गरे मेरे सीस तें खींच लई मटकी । खाय लियो दधि दी लुटाय गुराह लई जमुना टटकी ॥२८॥

(टटकी) श्री तारासिंहजी चौहान कानपुर

स०—अबकी छुटकी घटकी तरणी भव भौंर फिरि भटकी अटकी। उलझी जग जाल विषै हरिकी सुधि ह न जो ओट बसे पटकी ॥ झटकी कवि तारा गुरु ठटकी दई बोल पता घट केवट की। नटकी रटकी हठकी न अबौ तो उपाय न बैतरणी टटकी ॥२९॥

स०—सुधि बावरिया तोहि सूझ नहीं भव भौंर तरी तरणी अटकी छिन ही छिन डूब रहा नित ही नित जाय रही मग औघटकी ॥ अबि लम्ब न खेवन हार करै कबि तारा पुकार हरी तटकी। समया फिरि बीति गई न मिलै सुधि भूल न बैतरणी टटकी ॥३०॥ इति द्वि०स० स

(दीठि तेरी कहुँ लागीरी) पं० श्री वालेश्वरजी तिवारी कानपुर

क०-भूरि भक्ति भाव से भरी हों भव्य भावनायें आली ! मृदुवानी हू पीयूष रस-पागी री। भूली भटकी हौं अमितासी भवजालन में जागृति दशा में हू न जानि जिय जागी री ॥ जानी नहिं जोग जप जग्य जग जीवित जी भगवद्भजन में न नेकु अनुरागीरी। कैसे सतसंग का प्रभाव ग 'विनीत वाल' चित्त है कहीं पै दीठि तेरी कहुँ लागीरी ॥

(डीठ कहुँ लागीरी) पं० श्री लालमणिजी पाठक कानपुर

क०-जमुना के तीर नीर भरन को जात राधे कान्हू को बिलोक प्रेम बंध रस पागीरी। पागीरी आठहू याम ध्यान वाही मूरति में अधिक सनेह पूर्व पुण्य फल जागीरी ।। जागीरी वासर निशि प्रेमही में लग्न लागी लागीरी वात नहिं खुलत अनुरागीरी। रागीरी राग रंग औरही देखात मुहिको भनत मणीश डीठ तेरी कहुँ लागीरी ॥२॥

दीठि तेरी कहुँ लागीरी) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

क०-आली नित छीन होत जात तन मन ते उदासहू होति जैसे व्यथा देह दागी री। लेत जमुहाई अँगड़ाई अलसाने चाव मानौ काहू आवन की आशा रैन जागीरी ॥ काके तू वियोग माहिं योगिन सी बनी आजु बैठी है विरक्त भेष भूषा सब त्यागी री। साँचिहू बतावै तोहि शपथ है प्राण प्यारे होत अनुमान दीठ तेरी कहूं लागीरी ॥३॥

क०-सुनरी सहेली कहौं अकथ पहेली कहेन काहू से न सैनों अहौं निपट अभागीरी। सपने यो आय भेट्यो सुन्दर सलोनो श्याम बंशी को बजावत सो ताके नेह पागीरी ॥ जैसे आँख खुली भयो आँखिन ते ओट लाल भई मैं विहाल उर बिरह पीर जागीरी। आठोयाम मूरति बिमू-

रति करत माहिं आनन्द उसी से दीठ मोरी अब लागीरी ॥४॥

(दीठि तेरी कहुं लागीरी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

क०—लागीरी दुवार दै किवार ओट एरी बीर भर उसास ठाढ़ी गाढ़ी अनुरागीरी। रागीरी कौनौ छैल ह लिया रसीले से वो छलिके किशोर तोंहि बना गय दागीरी॥ दागीरी दवार बिरहाग्नि सों लखात मोंहि धरत न धीर मैन पीर जनु जागीरी। जागीरी बिलोक तुव तनकी अनोखी व्यथा होत अनुमान दींठ तेरी कहुँ लागरी॥

क०—काहे इतरात बतरात वो बोलन ते, अपने समान तू मुझे भी कहै दागीरी। मैतो किवार ओट निरखूं थी चरित्र तुव जानि गयी एहू जाके प्रेम अनुरागीरी॥ डालैंगल बहिंया तूं कन्हैया संग डोलैया औंचक किशोर मोहि देखि तुद भागीरी। आई मुकानि आपन लच्छन छिपाने दीठ मेरी नहि लागी दीठ तेरी कहुं लागीरी ॥३॥

(दीठि कहुं लागीरी) श्री सीतेशशरण जी (प्रेमप्रभा) कानपुर

स०—बौरीसी लखात बतरात बात भोरीसी ओरी पञ्चवान तीर तेरे जनु लागीरी कहुँ मुसकात जलजान नैन नीर भरे सांसहू उसास लेत अति अनुरागीरी॥ सांची तैं बतावै रँग रांची काके प्रेम आली अङ्ग अङ्ग उमँग अनङ्ग जनु जागरी। ह्वैहै बड़ भागिनी सोहाग श्रीमुरारि तन प्रेम प्रभा जोपै दीठ तेरी कहुँ लागीरी॥

स०—बीते जन्म दीनिन अनेकन में जन्मि २ वृथहि गँवाये दुख पाये सुख त्यागीरे। त्रिविधि प्रकार ताप तापन तपाये तनतौहूँ जग जीवन सों भयो ना विरागीरे॥ तीन पन बीते रीते हाथ न जाते मन

चौथो पन आयो अब सुमुक्ष अभागीरे । प्रेम प्रभा पीछे पछितैहैं कष्ट पैहै यदि तजि रघुनाथ दीठ तेरी कहुं लागीरे ॥८॥

स०—जागी रघुनाथ पद पंकज न प्रेम प्रीति स्वारथी हो मोतन सों रह्यो अनुरागीरे । चलत कुपंथ सदग्रन्थन भुलाये भूलि वाही ओर ओर उठि दौरत अभागीरे । मानै मन मेरी कही देर ना लगावै अब राम नाम ध्यावे पावै प्रमुद सुभागीरे । प्रेम प्रभा पीछे पछितैहैं दुख पैहै भूरि जो पै हरिछोड़ि दीठि तेरी कहुं लागीरे ॥९॥

स०—आई थी हमारे संग यमुना नहान नीके बात बतराती गीत गाती प्रेम पागीरी । बिछुरिगई तो नेक देर नहिं लागी अवै दशा अंग अंगन अनंग जनु जागीरी ॥ नैन बारि मोचै बोलै वचन सकोचै अब लोचे अङ्ग अङ्ग ज्यों पतंग उगमागीरी । प्रेमप्रभा मेरे मन रांची बात सांची यह मानै नहिं माने डीठ तेरी कहुं लागीरी ॥१०॥

(दीठि तेरी कहुं लागीरी) पं० श्री काशीप्रसादजी शुक्ल कानपुर

क०—एकै साथ आई फुलवाई गौरि पूजनको त्यागि कुल कानि कहुँ कौन रग पागीरी । भरी है उमंग तन पुलकावली अंग २ मनहु अनंग करि जंगदाग दागी री ॥ काशीराम मुखते न बोलै बैन मौन गहो गद २ कंठ कहु काके प्रेम लागीरी । मेरी जान बालतैं अजान भई जान बूझि मानै नहि मानै दीठ तेरी कहुँ लागीरी॥

(दीठ तेरी कहूँ लागी री) प० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—पूछति सखी है बाला पड़ी पलगाँ के बीच खीच पग शिरलों चीर रात कहूं जगीरी । पुनि पुनि अरगाती बात बात पै उछास लेती देती है दिखाई देह आंग जस लागीरो ॥ अरुचि है वेश केश बिखरे भया-

बने हैं भूषन शिथिल अंग कान्ति दूर भागीरी। कालि-न्दी कूल में किलोल करते बिलोकि कृष्ण केसरी पैं दीठ तेरी कहूं लागीरी ॥१२॥

स०—बेरबेर बरज गरज "बाचा" हारी एरी नित्य ऊठि मेरे द्वार आती क्यों भागीरी। तात मात भ्रात नात सब हो समझाय हारे निज कुल कीर्ति में लगावे मत दागीरी॥ नयन पूतरी सम मैं कान्ह को विलोकती हूँ देवों देवता को मानि निशिदिन जागीरी। ताहि सरवेड़ीं तेरे खाल में भरैहों भूस कान्ह पै जरी री दीठ तेरी कहूँ लागीरी ॥१३॥

(दीठ तेरी कहुँ लागीरी) पं० श्री रामनोखलजी भट्ट कानपुर

क०–ऐरी बीर लाड़िली नहान गई जमुना पै आई जा घरी सों परी नीगहू न भागीरी। नैनहू न खोलै मुख बोलै ना अचेत भई कहाँ जाउ कैसी करौं जासों उठै जागीरी॥ बोली ततकाल बाल हाल मैं बताऊ तुम्हें रोग कछु नाहीं यह प्रेम अनुरागीरी। गोकुल गोपाल हाथ बसो लिये डोलो करे याके नंद लाल केरी दीठि कहुँ लागीरी ॥१४।

(दीठ तेरी कहुँ लागीरी) पं० श्री जगन्नाथ प्रसादजी द्विवेदी उन्नाव

क०-आज सुकुमारी कहुँ निहारी का हिराईसी प्यारी मैं तिहारी दशा भारीसी पागीरी। बूझहूं न बैन मृग नैन कछु कहै न ये चित्रसी हलै न त्यों चलै न बड़भा-गीरी॥ कहि जगदीश छकछकीसी त्योंथकीसी है चकी सी जकीसी प्रेम छबी अनुरागीरी। कैधौं अदीठ दीठ काहूके बसीठ लागी कैधौं अदीठ दीठ तेरी सु कहुँ लागीरी।

इति तृतीय समस्या पूर्ति समाप्त

अथ संस्कृत समस्या पूर्तयः

(पारङ्गतः) पं० श्री बदरीनारायण जी द्विवेदी तर्कवागीश कानपुर

मृदु मधुर गिरा गीत नारायणम् । पुरुष मनुनिभं-मूलरामायणम् ॥ अभिलषित फल दातृ लोकस्ततः पठति जनि भयाज् ज्ञान पारङ्गतः ॥१॥

(पारङ्गतः) प० श्री रामशरणजी शास्त्री द्विवेदी कानपुर

यो जग्ध्वापृथुकैक मुष्टिमदिशद्विप्राय भूतिंपरां, क्रीडित्वा व्रजवल्लवोभिरनयत् ताःस्वंपदं वैष्णवम् । निन्दन्तं सदसि स्वभद्र वचनं चैद्यं चकारात्म सात् तं श्रीकृष्णमुदेत्य दुःखजलधेः कस्को न पारङ्गतः ॥२॥

(पारङ्गतः) विद्यासिन्धु पं० श्रीवैद्यनाथ जी मिश्रा मैथिल कानपुर

लज्जिता लज्जिता नोहिता नोहिता रञ्जिता रञ्जिता रञ्जिता रञ्जिता । राधिका राधको नैव हाराविनो योग-पारङ्गतो रङ्ग पारङ्गतः" ॥३॥

(पारङ्गतः) प० श्री रामकिशोरदासजी, बड़ास्थान दारागञ्ज-प्रयाग

यस्येदं निखिलं चराचर जगद्रूपं महन्मोहनं सूक्ष्म स्थूल विशिष्टभावमपरं वेदोमवस्थात्रयम् ॥ यन्माया-वशवर्त्यनन्त विभवं जन्मादिनत्वंपर चेत्थंनस्य समस्त रूपमनिशं ज्ञात्वैव पारङ्गतः ॥४॥

(पारङ्गतः) पं० श्री कामेश्वर जी शास्त्री मैथिल कानपुर

योगो ह्याभ्यसितोव्रतंहि चरितं दानञ्चदत्तं मया गंगातीर तरङ्गनिर्मलजलैः संस्नापिता सर्वदा । श्रीमद्

भागवतादिकश्चनितरामग्रेहरेः आविता इत्थं जन्मवृथा गतं भवनिधे नाद्यापि "पारङ्गतः" ॥५॥

(पारङ्गतः) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

तृष्णाघोर नदी तरंग तरला नित्य प्रवाहान्विता दुःसंकल्प विकल्प मीन मकराद्यंभश्चर व्याकुला। लोभावर्त युताचमोह सलिला तृण् निःश्वनाशातटा धन्याद् धन्यतमः सएव मतिमान् योस्याहि पारङ्गतः ॥६॥

(पारङ्गतः) पं० श्री काशीप्रसादजी अवस्थी कानपुर

सीतादर्शन कांक्षया च प्रययौ लंकामनल्पां पुरीं नत्वाऽनंतवलं चराचर प्रभुं रामाख्यमीशं हरिम्। तंवंदे पवनात्मजं गुणनिधिं सत्यप्रियं धार्मिकं यश्चोल्लंघ्य समुद्रयोजनशतं हर्षेण पारङ्गतः ॥७॥

(पारङ्गतः) पं० श्रीरामयत्नजीमिश्र "वाचा" आरा

आकाशादनल प्रवर्षणकरं तोयंच पृथ्वीतलाद् दूरादन्तिकतः क्षणादपदिशेभ्योवाण वर्षाकरम्॥ रामाज्ञां शिरसावधार्य समरे तं रावणिंसच्छरैर्हत्वा लक्ष्मण आतुतोप त्रिदशान्स्तुमन्नादम पारङ्गतः ॥८॥

क०—एकैव प्रकृति ह रम्यचहरंन्सद्धौलसंयम्सुधी साम्येनैव लिलेख ग्रन्थ रुचिरं राम यशे यच्चराः ॥ विष्णु स्तौतिकपर्दिने मधुरिपुं गङ्गा धरं नौत्यलम भेदाक्षेप विवर्जितऽस्ति तुलसी शास्त्राथ पारंगत ॥९॥

(पारङ्गतः) पं० श्री जगन्नाथ प्रसाद जी द्विवेदी उरई

श्लोक—रामायणं पठेन्नित्यं प्रेम भावेन योनरः ॥
सयुक्तोभुक्ति मुक्तिभ्यां भवार्णव परांगतः ॥१०॥

(पारङ्गतः) पं० श्री मुकुन्दलाल जी शास्त्री दतिया कानपुर

हे गोविन्दमुकुन्द कृष्णभगवन्नारायण श्रीपते हे श्रीराघवरामचन्द्र मुरहन् सीतापते मापते। अस्मिञ्जन्मनि नाम चैव भवतां संचिन्तयन्मानसे याचेऽहं भवतः सदेति भवतः स्यामेव पारङ्गतः ॥११॥

इति प्रथम संस्कृत समस्या पूर्ति समाप्ता

(मोमाधवौ) पं० श्री बद्रीनारायणजी तर्कवागीश शास्त्री कानपुर

गङ्गा वारिभिराप्त सँस्कृति तनुः पत्रैस्तुलस्या द्विजः वस्त्रालङ्कृति चन्दनैः सकुसुमैर्धूपैस्तथा दीपकैः। याति स्वादु फलैश्च मन्त्र सहितैः स्तोत्रैः पुनर्गीतिभिः सेवां मोहन रामयोः सुचरिता लब्धाश्रमो माधवौ ॥१॥

(मोमाधवौ) पं० श्री रामशरणजी शास्त्री द्विवेदी कानपुर

आर्द्रोत्खातमदा सृगाङ्कित महामत्तेभदन्तायुधौ तेजो दर्पतरङ्गित श्रुनिदधन्मल्लान्तराभी भरौ। प्रमोत्कर्ष विकस्वर स्वपितृदृक् पेपीयमानाननौ गोपान्नन्दमवेक्ष्य रङ्गभवनं यान्तौस्तु मो माधवौ ॥२॥

(मोमाधवौ) पं० श्री वैद्यनाथजी मिश्र मैथिल कानपुर

नन्दिनौ नन्दनन्दि व्रजानन्दिनौ चन्दिना विन्दुना विन्दुना चन्दिना। वन्दिनौ राधिका कालिका लोकयो र्वन्दिनाम्बिन्दतां चित्सु "मोमाधवौ" ॥३॥

(मोमाधवौ) पं० श्री रामकिशोर जी शास्त्री दारागञ्ज प्रयाग

रक्षन्तं तुलसीकृतं बहुमतं रामायणं मानसं यं ज्ञात्वा

निखिला जगतत्त्रयजनाः पारंगताः सान्वयाः । तादर्थ्यं त्विह साम्प्रतं हरिजनैरेषा जयन्तीकृता ताँस्तद्भाव समन्वितान्द हरिजनान् पातातु मोमाधवौ ॥४॥

(मोमाधवौ) पं० श्रीकामेश्वरझा जी शास्त्री "मैथिल" कानपुर

भाले विभाति वालेन्दुः नाभौ भातिच पद्मभूः ।
दुःखाम्बुधिनिमग्नानां कुरुतां शं "मो माधवौ" ॥५॥

(मोमाधवौ) शास्त्रीपं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

भंक्त्वा कोटिक मातृगर्भ जनन व्याधीश्च कर्मोद्भवा गत्वा यत्र निवर्तते नहि पुनस्तद्धाम दिव्यं महत् । संयात्यैहिक सर्वसौख्यमतुलं भुक्त्वा जनो निर्मलो हृत्स्थौ यस्य कृपार्णवावचिरनं प्रीतौ रमो माधवौ ॥६॥

(मोमाधवौ) पं० श्री रा[illegible]जी मिश्र "वाचा" कानपुर

भक्तानुग्रहकारकौ मुनिनुतौ स्वच्छन्द संचारिणौ श्वाशुर्यैच निवासिना वनितरां दुर्वृत्तमानापहौ । लोकालोकन तत्परौं दिविसुतामाशोभनौ सद्व्रतौ ह्यन्योन्यान मनदृढौच जयतः सर्वंगमोमाधवौ ॥७॥

क०—लोके पृज्य पराक्रमौ जनमनः सन्तोषदौ सद्गुणो रामातोपगतत्पराव नितरां सेवैर्वृतो नायकौ ॥ स्वच्छन्दप्रविहारिणौ सहचरानन्द प्रदौप्रात्कनौ नारिपश्यति यावव यत पुरुषस्तौ संस्तुमो माधवौ ॥

(मोमाधवौ) पं० श्री जगन्नाथ प्रसादजी द्विवेदी उरई

यथा वसंतेसंप्राते मोदंच भ्रमरावलिः । तथा वृज नारीमोदं दृष्ट्वा वनेमो माधवौ ॥८॥

(मोमाधवौ) पं० श्री मुकुन्दलालजी मिश्र शास्त्री इतिया कानपुर

देवौ चक्रकपालसज्जितकरौ सौन्दर्य्यरत्नाकरौ द्वौ
देवासुर सेवितौ सुर वरौ लक्ष्मीशिवातिप्रियौ भक्तानां
शुभभक्तिमुक्तिकरणौ सिद्धिप्रदौ ज्ञानदौ दुःखादुद्धरतां
द्रुतं हरिहरौमामेव मोमाधवौ ॥१०॥

इति द्वितीय संकुल समस्या पूर्ति समाप्त

अथ स्वतन्त्र कविता

(स्वतन्त्र) श्री जगन्नाथप्रसादजी "गुप्त" अमर वैश्य कानपुर

दोहा—कृष्ण कृपा सागर बिनय, सुनिये है कर जोर। उगै चन्द स्वार्थी-नता, चहकै चित्त चकोर॥ कृष्ण कनक की सुनिझनक जागे ऋषि मुनि लोग। माया रूपी कामिनी छलै छुटै जप जोग॥ कृष्ण कल्पतरू कलि कलुप समन करैं त्रयताप। कल्पलता वृसुभानुजा सहित करैं जे जाप॥ कृष्ण करो उर प्रेरणा, तन मन धन सर्वस्व। कृष्णार्पण पद पद्म पर पत्र-पुष्प-गज-अश्व॥ कृष्ण कान्ति चाहत मनुज, जग असत्य की रात। दया दृष्टि बिन आपके नाहीं सत्य प्रभात॥ सतन में उर व्योम, श्याम घटा घुमड़ी परै। जनु तरंगिनी-ओम, श्यामा छबि उमड़ी परै॥१॥

(सवय्या)

जब सों बहि राम सुधा सरिता, तब ते कलि कोंच गई धुलसी।
नवजीवनसा हित दान दियो, उर प्रीति उगी सुचि संकुलसी॥
नर किन्नर देव सराहिक हैं, धनि पुण्य मई जननी हुलसी।
भवतारण भक्ति प्रचारन को जिहि कै घर जन्म लियो तुलसी॥२॥

(स्वतन्त्र) श्री डा० पं० मधुकरजी मिश्र, हेडमास्टर कानपुर

मैं अजर अमर मैं अखिल सत्व, मैं सर्व व्यापक सूक्ष्म तत्व; मैं सकल सृष्टि का आदि अन्त। मैं चिन्तामणि मैं सुधा-भवन, मैं स्वर्ग-सदन, मैं बन-उपवन; भृगु के पाद-प्रहार से जो—अंकित प्रभु के

मैं शुद्ध चरण। यह भू-मण्डल क्रीड़ा-विलास, सागर मेरा उल्लास-हास; मैं प्रेम और मैं दिव्य ज्ञान, रवि-शशि मेरा मंजुल हुलास। वन-पर्वत मेरे कर कौशल, दृश मेरे शत शत चन्द्र सजल; मेरे शत मुख मेरे शत रव, मैं जलनिधि का कलरव कल कल। मैं उठा और वह विश्व हिला, मैं बोला जग को ज्ञान मिला, जिसको देखा वह हुआ अभय, मैं हँसा और वह फूल खिला। मुझ में है मेरा चिर यौवन, मैं ही सागर मैं ही जलकण मैं ही पतझड़ मैं ही बसन्त ॥३॥

(स्वतन्त्र) पं० [illegible] अवस्थी कानपुर

क०—जैसे भुशुंडि वैनतेय को सुनायो शंभु गिरजै बतायो जो महान मंत्र राज है॥ याज्ञ वल्क्य भाषी प्रयाग भरद्वाज प्रति सुमति गुनागर महा ऋषिन समाज है॥ सोइ रामायन अवतार बाल्मीक जूको कीन्हो विस्तार श्री गुसाईं भक्तराज है। ब्रह्म कुल कमल दिवाकर भे तुलसि दास कलि प्रगटायो भवतरन जहाज है ॥४॥

(स्वतन्त्र) पं० श्री [illegible] वैष्णव 'विज्ञ' छोटा-हला पुरी

क०—श्री भास्कर भ्युदय में शेष ना रहेगी रात्रि-रात्रि जब रहेगी भास-भास्कर न होगा तब, ज्ञान के प्रकाश में रहेगा नहिं किंचित मद मद जब रहेगा तब ज्ञान मन्द होगा सब। धर्म की सुबुद्धि में रहेगी नहिं अधम बुद्धि अधम बुद्धि होगी यदि धर्म भ्रम होगा सब। ऐसे प्रेम-नेम-में वर्णत वार वार 'विज्ञ' प्रेम जब रहेगा तब नेम भंग होगा सब ॥५॥ इति।

अथ रजत जयन्ती महोत्सव का परिचय

श्रीमान भक्तवर श्रीरामलालजी ने श्रीरामकृष्ण मुरारीजी का मन्दिर सं० १९७४ में बना कर भगवत्प्रतिष्ठा की थी। जिसको सं० १९९९ के साल में २५ वर्ष पूरे हुए थे। उक्त भक्तवरजी ने विद्वानों की अनुमति लेकर श्रीराम कृष्णमुरारीजी की पचीस वर्षीय 'रजतजयन्ती महोत्सव' मनाने का निश्चय किया। इस महोत्सव में विशेष पूजन, हवन, ब्राह्मण

भोजन, गायन, लीला दानपुण्य के साथ २ सुन्दर कवि सम्मेलन भी हुआ था। समस्या पूर्ति पत्र के अनुसार स्थानीय कवि वृन्दों ने अपनी अपनी रचनाएं सभा में भगवान को सुनाई। इस सभा के सभापति स्वर्गीय स्वामी श्री बदरीनारायणाचार्यजी नैयायिकजी हुए थे जो कि कानपुर कर्णु सल पाठशाला के प्रधानाध्यापक थे।

इस महोत्सव में भक्तवरजी के घर भर ने भगवान को उपहार में गिरनी, सोना, चांदी, रुपिया, अनेक अनमोल वस्त्रादि भेट किये थे। कबिता सुनाने वालों तथा अन्यान्य विद्वानों को योग्यतानुसार रेसमी साड़ियां, पीताम्बर, दुशाले, दुपट्टे, जरी के कामदार रंगबिरंगे पाट, मुकटा, अण्डी आदि सबको सब द्रव्य बिदाई माला चन्दन अतर पान देकर सबका सादर सन्मान किया। इस महोत्सव में पैसों की भांति रुपिया लुटाये गये थे। इस उत्सव में कोई भी विमुख नहीं फिरा। हृदय खोल कर यह उत्सव मनाया गया था। इस महोत्सव में जो जो कोई आये थे भक्तवर ने सब का मन प्रसन्न किया। कानपुर में अनेक धनवान विद्यमान हैं किन्तु ऐसा उत्सव तथा द्रव्य वस्त्र दान देकर विद्वानों का ऐसा सन्मान किसी ने नही किया। इस प्रकार की चर्चा कानपुर जिले भर में सर्वत्र होती रही और अखबारों में भी निकल चुकी थी। सबों ने भक्तवर जी की जय जयकार मनाई। इस महोत्सव में कई हजार रुपये खर्च हुए थे। इस उत्सव में भक्तवरजी की उदारता देख लोग आश्चर्य युक्त हो गये थे। यदि भगवान् धन देवै तो श्रीरामलालजी का सा उदार मन भी देवै। इसमें श्रीबलदेव प्रसाद जी श्रीकुञ्जीलालजी आदिकों का भी कार्य अति प्रसंशनीय था। इस मन्दिर के पुजारी पं० श्रीद्वारकादासजी (मन्ना) की भगवत्सृङ्गार रचना सर्वोपरि सुन्दर थी। छगनलाल (गोपाल) जी की झांकी तो अपूर्व सजी थी ऐसे प्रेमी अर्चक भाग्य से ही मिलते हैं। इस उत्सव में सबका फोटो भी उतरा था और रजत पदक भी वितीर्ण किया गया था।

आपका प्रेमभाजन

रामटहलदास प्रयाग

रजत जयन्ती महोत्सव में भी कवि सम्मेलन हुआ

श्रीसभापति---**पं० शास्त्री बदरीनारायणजी नैय्यायिक 'तर्कवागीश' कानपुर***

समस्या हिंदी—(१) जयंती मनाइये। (२) रजत जयंती की बजत बधाई है।

संस्कृत समस्या--(१) श्रेयान जन्तुत्सवः।

आशीर्वात्मक कविता।

* स्व० शास्त्री पं० श्रीबदरीनारायण जी नैय्यायिक सर्व देश पूज्य विद्वानों में अग्रगण्य थे। आप व्याकरण वेदान्त न्यायादि सभी दर्शनों के अध्यापक थे, आपके पं० श्रीरामशरण जी आदि बड़े २ धुरन्धर विद्वान शिष्य भी हैं। आप परम शान्तदान्त जितेन्द्रिय साक्षान्महर्षि थे, श्रीवैष्णव धर्म के परमैकान्तिक आलवार थे. आपके उपदेश से अनेक नर नारि मुमुक्षु होगये आपके पुत्र पौत्र सभी श्रीवैष्णव हैं। भक्त श्रीरामलालजी पर आपकी अत्यन्त कृपा रहती थी। सेवक—मुद्रक

(आशीर्वाद) पं० श्री बन्दीदीनजी तिवारी कानपुर

क०—विद्या को निधान शील धीरहू हृदै श्रीराम कृष्णमुरारी को प्रशन्न करिपायो है। धर्म प्रतिपालै औ पापहू जेहि देखि हालै अरि उरशालै सदा नेम प्रेम भायो है॥ शुचि नेह से जो आवै ताहि अति अपनावै जो माँगै सो पावै गुप्रताप जाको छायो है। उदित उदार गुणकर्म सब जाके प्यार ऐसो जानि बन्दी दीन आशीर्वाद गायो है॥१॥

दोहा—निन प्रति भक्ती भाव उर, बढ़ै धर्म और मान।
द्विज देवन परशाद से, होय सदा कल्यान॥२॥

(आशीर्वाद) पं० श्रीरामटहलदास जी प्रयाग

क०-जौलों विष्णु पूजा गुरु टहल है भूमि पर जौलों
नीश शीश अचलातु ठनी रहै। सन्त विप्र आशिष देत
ज्ञा रहे भूपे जौलों जौलो कर्मधर्म रीति लोक में गनी
है। जौलों श्रीरामकृष्ण गुणगण जगमांहि रहैं जौलों
न्तबुद्धि हरिप्रेम में सनी रहे। तौलों श्रीरामलाल कुल
रिवारयुत साहिबी समाज साज आपकी बनी रहै। ३॥

ामी प० श्रीहरिनारायणाचार्य जी महाराज का मंगलाशासन कानपुर

श्रीमान् परमधर्मिष्ट सेठ श्रीरामलालजी सपरिवार को आर्शीवाद
ापका आमन्त्रण पत्र पढ़ हृदय परम सन्तुष्ट हुआ, चलने को चित्त
ाहा भी उसी समय अति वेग से दास को ज्वर आगया अतएव ऐसे
लभ्य सुअवसर पर श्री १००८ श्रीरामकृष्ण मुरारीजी की रजत
यन्ती के महोत्सव में दास उपस्थित नहीं हो सका इसका प्रतिबन्धक
रने वाला इस अधम का पापही प्रधान है अतः क्षन्तव्यहो।

(जयन्ती मनाइये) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

क०-वेद मुनिग्रह इन्दु संवत्सु विक्रमीय फाल्गुण
ास शुक्ल पक्ष पाचैं को ध्याइये। धन्य तिथि जामे
सय राम और लखनलाल रामलाल मंदिर पधारे सुख
ाइये। तादिन ते सम्पत व सन्तति विभव विलाश कर्म
र्मयज्ञ वृद्धिन्यूनता न पाइये। आज भयेअब्द पंचविंशति
वितीत ताके आनंद उपलक्ष्मे जयन्ती ये मनाइये ॥४॥

(जयन्ती मनाइये पं० श्री लालमणिजी उपनाम 'मणीश' कानपुर

क०-सीताराम राधाकृष्ण मदन मुरारी जी की

कीन्ही है प्रतिष्ठा जन्मर्त्त भी कराइये ॥ मञ्जन कराय हवन पूजा शृंगार सब करिकै महोत्सव दान विप्रन जिवाइये ॥ पर्व पर्व उत्सव साज बाज गान भक्तीसों दैकै निमन्त्रण विद्वत्मंडली बुलाइये ॥ भनत 'मणीश' वर्ष गांठ करि नित्य साल रजत स्वर्ण शताब्दी जयंती मनाइये ॥५॥

(जयन्ती मनाइये) पं० श्री रामविलासजी त्रिपाठी कानपुर

क०—आसुरी प्रवृत्तियों से पीड़ित संसार सब सोचत सजीव प्राणि कहाँ भागि जाइये । जानत ना दुखी दीन ज्ञान से विहीन नर साधन से हीन जो मलीन चित्त चाहिये ॥ ऐसे कलि समय बीच नीच वृत्ति व्याकुल जो तिनको सदा सज्जन सुसंग समुदाइये । ब्राह्मण गुरु देव सेय सुन्दर वसन्त समै भक्ति भाव भूपित हरि जयन्ती मनाइये ॥६॥

क०-मंगलमय मय समय आज साजे हैं सकल साज रहे हैं विराज रघु-राज चित्त लाइये । त्यागि त्रिविध ईषणा निरत भक्ति भावना में भक्त भव भंजन को भव्य रूप ध्याइये ॥ दीनबन्धु प्रणत पाल दशरथ के ललित लाल भाव मय पुष्प माल इनको पिन्हाइये । ये ही करैंगे विश्व बाधा को दूर पुनि याते सब भक्त नित जयन्ती मनाइये ॥७॥

इति प्रथम समस्या पूर्ति समाप्ता

(बजत बधाई है) पं० श्री बन्दीदीनजी तिवारी कानपुर

क०—जनरलगञ्ज जगन्नाथ जी की गली मांहि उत्सव को सुनिकै नरनारी हर्षाई है । हर्षराय भागी हरिप्रेम अनुरागी भक्ति रस माहि पागी राग चहू ओर गाई है । ऐसन विधि हल्ला मचो सगरे मुहल्लाजे दर्शना भिलाखी ध्यान धरैं मनलाई है । बन्दी दीन आज श्री राम

कृष्ण मुरारी जी की रजतजयन्ती की बजत बधाई है ॥

(बजत बधाई है) पं० श्री ज्वाला प्रसाद जी कानपुर

क०—आज है बसंत अति प्रेम प्रमोद से सुन्दर सुखमा निज साथलै आई है। छाई है मही में अति सुन्दर जिसकी उपमा कबि लोगन को भाई है॥ कहैं कवि ज्वाला धरि ध्यान ऐ मित्रो सुनो त्रिबिधि समीर क्या मनोज छबि छाई है। करती है इशारा झकझोरि के हवायें यह रजत जयंती की आज बजत बधाई है॥२॥

(बजत बधाई है) पं० श्रीरामयत्नजी "वाचा" कानपुर

क०—लखतीं नहीं है शान रखती सबी का मान जानि के जहान यही हेतु यह आई है॥ ग्रीषम में लूक, भेक बारिस में प्रबल जान शीत में प्रवह मान दूर ही छाई है। कमल आतपत्र [illegible] चमर किये कोकिल कल बिरद ऋतुराज संगलाई है। [illegible] कुल शणी मिष बादकगण पाणी मिस रजत जयन्ती की बजत बधाई है॥३॥

क०—हुआ है कभी भी नहीं होता है कहीं भी नहीं होने सब ठौर यही हेतु यह आई है॥ मन्त्र पत्रिका के साथ सुजनन के हाथों हाथ देश औ विदेश दिग अन्त तक धाई है॥ रही कर्णपूर बीच राम कृष्ण मन्दिर माहि सुगुण बितान "वाचा" रुचिर अति छाई है॥ वर्ण वर्ण ह्वै वर वर्णन कराती देखो रजत जयन्ती

की वजत बधाई है ॥४॥

(बजत बधाई है पं० श्री लालमणिजी "मणीश" कानपुर

क०–सम्वत एकोन बिंश बाण सप्त फाल्गुण में शुक्ल पक्ष पाँचे रिक्ष अश्वनी सुहाई है । उत्तम सुयोग कृष्ण स्थापना मुरारी जी की अद्भुत शृंगार सर्व पर्व मे सजाई है ॥ वर्ष तीन पीछे धनुष लीला प्रारंभ भ साजे गाजे वाजे धूम धाम से कराई है ॥ भनत 'मणीश रामलाल जी की इच्छा ऐसी रजत जयंती की बजत बधाई है ॥५॥

(बजत बधाई है) पं० श्रीशिवकुमार जी मिश्र "शिव" कानपुर

क०–ताने है वितान आसमान सम भासमान, तामें चहूं ओर झालर लगत सुहाई है । भूमि में गलीचा दरी चाँदनि कालीनैं बिछि, गिर्दा चहुँ गिर्दा परे शोभा अधिकाई है । 'शिव' कवि भनत दुवार बंधे वन्दन वार, चितवन वास के चित्त लेते चुराई है। आओ देखि आई भाई मैफिल सुहाई जहाँ, रजत जयंती की सुबजन बधाई है ॥६॥

(बजत बधाई है) प० श्रीब्रह्मानन्दजी मिश्र "आनन्द" कानपुर

क०–कहूं रत्न दीपन की मालिका अखण्ड ज्योति, कहूं पुष्प मालन की पंक्ति घनी छाई है ॥ वन्दन पताका, फहरात द्वार द्वार धरे, मङ्गल कलस बीथी अरगजा सिंचाइ है ॥ श्यामा सुर बामा दिव्य भूषण बसन

धार आरती उतारैं वारैं द्रव्य मन भाइ है ॥ कहुँ कवि आनन्द ते विरद बखानै राम रजत जयन्ती केरी बजत बधाई है ॥७॥

क०—नगर डगर हाट बाट राज साज सजो फूली सब ओर ऋतुराज फुलवाई है। फूले फूले फिरत हैं प्रेमी नेमी राम कृष्णजी की दिव्य झांकी रत्नजटित सजाई है। कहूँ दान कहूँ ध्यान कहूँ यज्ञ वेद गान कीरति बखान कहूँ बाजे सहनाई हैं। कारण बताव मोहिं आनन्द बिशेष केर रजत जयन्ती केरी बजत बधाई है ।८।

क०—आये देश देशन ते भूप भेंट आदि धरि राम को जोहारि सभा सोभा हू बढ़ाई है। बैठे देव ऋषि मुनि धर्म की व्यवस्था देत करत प्रशंसा रामनीति सुख दाई है ॥ वार मुखी नृत्य गान कला हैं लखाता मिलि नभते प्रसूनन की वृष्टि झड़ी छाई है। जै जैकार राम दरबार में सुनाय परैं रजत जयन्ती केरी बजत बधाई है ॥९॥

दो०—रजत जयन्ती का परम उत्सव लखि कै आन।
भक्ति भीख मांगत खड़े द्विज आनन्द सुदान ॥

इति द्वितीय समस्या पूर्ति समाप्ता

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(श्रेयान जयन्त्युत्सवः) पं० श्रीरामटहलदासजी प्रयाग

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या भक्ता भागवताश्चये। जयन्त्युत्सव सम्प्राप्तास्ते यान्तु मङ्गलास्पदम्। सुखसम्पत्तिसौभाग्य विजयारोग्य मङ्गलम्। वर्द्धतां जयतामद्य जयन्त्युत्सव यद्गृहे ॥१॥

त्रैपादोक्तसुधासुभक्तिपरमानन्दैक तत्वप्रदः संसाराखिल वासना चितरा ताद्रुस्त्याज्य तन्नाशकः। भक्तानां

शुभवाञ्छिताय तनुते श्रीरामलालस्तुयः श्रीमद्राममुरारि कृष्णभवतां श्रेयान् जयन्त्युत्सवः ॥२॥

मध्येभारत भूमिपुण्यनिकरे श्रीरामलालेनयः श्री मद्राममुरारि कृष्णविभवं देवालयं कारितम् । भव्ये कर्ण पुराख्यये कलियुगे त्रैपाद धामाश्रयान् तान्नीतोभवतां भवन्तुनितरां श्रेयाञ्जयन्त्युत्सवः ॥३॥

(श्रेयान् जयन्त्युत्सव) पं० श्री रामशरणजी द्विवेदी कानपुर

प्रेम प्रह्व पवित्र मानसमति श्रीरामलालार्चित श्री मत्कृष्ण मुरारि रामचरणाम्भोज श्रियां बोधनः। भक्तानां भवपाप ताप शमनो भूयोजन प्रीतिदः पुण्यो भक्ति विवर्धनो विजयते श्रीमाञ्जयन्त्युत्सवः ॥४॥

शीतोष्णौ वसतः समौ सुसमये यौस्तः प्रतिद्वन्द्विनौ साम्येनैव सुकौशलेन कुरुतः सौख्याः समस्तादिशः संसारे सचराचराः कुसुमिताः हर्षेण चोल्लासितास्तस्मिन्यः खलु स्वीकृतो भगवतो श्रेयाञ्जयन्त्युत्सवः ॥५॥

(श्रेयान् जयन्तुत्सवः) पं०श्रीरामयत्नजी मिश्र आरा

योनिश्चीय रमेशमन्दिरमहं दिव्यं करिष्याम्यलम् नो कृत्वान्तिमवाक्यमात्मजनिभं भ्रातुस्सुतं प्रोक्तवान् तच्छिष्टिप्रतिपालकाय सदने रामादि पूजार्थिने देयाल्ला- लपराय रामवणिजे श्रेयाञ्जयन्त्युत्सवः ॥६॥

(श्रेयान जयन्तुत्सवः) पं० श्री सर्वनारायणजी झा

यस्मिंल्लोकयितुं पलास वसनैश्चाभूष्य पुष्पैर्वन

श्री श्रीमान् सुरभिः समेत्य सुरभि श्रीमद्भरद्भिःसुहृत
सानन्दं सुमतोरजांसि किरति द्राग्वः सकल्याणदःसीता-
राघवयोर्मुदं वितनुतां श्रेयाञ्जयन्त्युत्सवः ॥७॥

मन्दं मन्द ममन्द मञ्जुलमधु प्रोल्लासयन्मारुतः
सम्वातिश्रयते जगन्ति नितरां संलक्ष्ययं माधवः विद्व-
न्मण्डल देव मण्डलमपि प्राप्तं ससम्मोददः सीताराघ
वयोर्मुदं वितनुतां श्रेयाञ् जयन्त्युत्सवः । ७॥

(श्रेयान् जयन्तुत्सव) पं० श्री श्यामजी कानपुर

नीलेन्द्रामलकान्तिसोदरवपुः सौदामिनी सम्पदा
मुत्रासाय च राधया कृतधिया रासे समालिङ्गिता । दर्पं
वै दलयत्युदित्वरतडिन्मेघस्ययश्चाञ्जसा तस्यैवाद्य
विराजते सुविपुलः श्रेयाञ्जयन्त्युत्सवः ॥८॥

(श्रेयान् जयन्तुत्सवः) पं० श्रीचन्द्रकान्तजी पाठक कानपुर

क०—यौ ध्यातौ दधतौ धनुर्मुरलिके गीर्वाणवारेण
वै, स्वक्लेशान्विनिवर्त्तितुं रणविदौ कंसादिविद्वेषिणाम् ।
हन्तारावनिशं विभाति नितरां श्रीरामकृष्णाख्ययोः,
श्रीले कर्णपुरेऽद्य मानिमहिते "श्रेयाञ् जयन्त्युत्सवः"॥६॥

(श्रेयान् जयन्तुत्सवः) पं० श्री मणीलालजा 'मणीश' कानपुर

क०—श्री रामकृष्ण मुरारि उत्सवसभा कुर्वन्तिये-
मानवा जन्मर्क्षं शुभ पुण्य वासर तिथि भक्त सदासेवकः ।
पूजा मज्जन वेद पाठ भवनं विप्रान्सभाकारयेत् कुर्वन्
सज्जन प्रेमभाव सहितं श्रेयाञ् जयन्त्युत्सवः ॥१०॥

इति ०० १९९९ का समस्यापूर्ति समह

अथ सं० २००० की समस्यापूर्ति संग्रह

श्रावण शुक्ला सप्तमी मङ्गलवार

सभापति—**पं० श्रीबंदीदीनजी तिवारी वैद्यराज लोकमन मुहाल कानपुर।**

आप हिंदी कविता के सुयोग्य कवि और आयुर्वेद के विद्वान सुधार उत्साह परमोदार हैं।

हिंदी समस्या—(१) दाने की (२) गरूर गर्बीले हैं (३) मीठे हैं।

संस्कृत समस्या—(१) राधासमाराधितः (२) कुतूहलंकिम्।

विषय—(१) संसार। (२) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी।

(दाने की) पं० श्री बन्दीदीन जी वैद्य कानपुर

क०—दुर्जोधनगरूर गर्बीले है अनीति गामी पाप के परायन एक नाति मनमाने को। नेवत पठाय लीन्ह कृष्ण बुलाय व्यंजन मीठे है बनाय टेक तजत नहि बाने की। भक्तन हित कारी प्रेम विरतबिनिहारी बिदुगृह सिधारी इच्छा कीन्हे भोग पाने को। बहुभाग्य सनमानो विदुरानी मृदुबानी लैपानी भोग हे तुलाई लाई राम दाने की ॥१॥

क०—मूरतैरा का नामा नेकी देखौ सकी के पाने की भौ बाधाके टजाने की माला तुलसी के दाने की। हैया साधू सन्माने की ऋद्धी सिद्धी ताखाने की वृत्ती शुद्धा के लाने की माला तुलसी के दाने की॥ है पापों के हर्जाने की भै तारौ पै गजाने की श्री विष्णू के हर्षाने की माला तुलसी के दाने की। रामानंदी दर्शाने की भोगौ करे भर्जाने की है बन्दी के तर्जाने की माला तुलसी के दाने की ॥४॥

(दाने की) श्री सतिश शरणजी प्रेमप्रभा कानपुर

क०–ताने जौन तान तौमें करत सयाने रहो नेकहू न आने उर बात पलटाने की। वेदन पुरान माने सन्तन सुजान जाने ठाने रहो ठान दुख दुखिन मिटाने की ॥ मातु पिता गुरू की सेवा सनमाने करो लोक परलोक सत्य सुगति बनाने की। प्रेम प्रभा राम कृष्ण जपत जबाने रहो बात बतलाई वर बीर मर्दाने की ॥३॥

क०-तानै जौन तान तामें देर ना लगाने कभी दीन दुखियान दुख दरिद मिटाने की। वचन प्रमाने कहि फेरि पलटाने नहीं संतन सुजानै सदा मान सन्माने की। वेदन पुराने माने बात पर माने रहो मात पितु गुरजन की गुरुता बखाने की। प्रेमप्रभा वतन अपाने देत दाने रहो दानेदार लोग कहैं बात मरदाने की ॥४॥

क०–वस्त्र नहीं अगन कुअंगन के ढाकिवे को सुविधा न आठ याम एक बार खाने की। दूध दही दालि भात बात जनि पूछो कछू घात नहिं लागे हरि चनहु चबाने की। बाल वृद्ध ज्वान अकुलान विललान फिरैं दीसतन कोऊ कहूँ बिपति बटाने की। प्रेमप्रभा भारत अति आरत निहारौ नाथ फिकर परी है जहाँ एक एक दाने की ॥ ॥

क०–वेद पुरान माने सन्तन सुजान जाने जगत जहान जाने चाह अपनाने की। दान-भोग नाश खास तीन प्रकार देखी कानन सुनी है धन गति बतुआने की। जो धन भलीभाँति नहिं भोग गये दानहू न दीन्हो गयो नति अभिमाने की। प्रेमप्रभा सो धन अवश्य ही नसाइ जात अंत देखे फेरी फिरै एक २ दाने की।६।

(यहां कवि ने नाम नहीं दिया है)

कु०–तुलसी नर तरु रूप दो नाम एक श्रुति मान। एक मुक्ति दाता विमल ख्याता एक महान ख्याता एक

महान संत बुध जन मन राखें। गावें कीरत गान तान सुन्दर स्वर भाखे। सीताराम श्री नाम इष्ट जग पर जाने की। नभ मासिक तिथि सात दिवस रविकर पाने की ॥

(दाने की) पं० श्री सत्यनारायणजी त्रिवेदी "लालसुत" कानपुर

क०—माता के उदर तें जा दिन से जन्म भयो फिकर रही आज तक सिवाय एक खाने को। लड्डू और पेड़ा आदि जो भी पदारथ हैं आत्मा प्रसन्न चाह नाहीं कछु लाने की ॥ लेकिन कुछ देशन के भूपन की कृपा ते हुआ पृथिवी के ऊपर युद्ध राज फल पाने की। याही से आज कवि लाल सुत ऐसी दशा कि चारों ओर है पुकार एक एक दाने की ॥८॥

दाने की) पं० श्रीरामगोपाल जी शुक्ल कानपुर

क०—शिवजी ने उमासे बखान करें लीला वह मन माहि राखी भक्ति नर रामवाने की। सबदन की पोथि तौ न रुचि सुचि कै गूथी है सरल बनाई भवसागर पार जाने की ॥ रची है सुचारु रूप विस्व बीच तुलसी ने सुकलामन से निकारि जग मोहि जाने की। ऐसी पोहि दीन्ही दोहा सोरठ चौपाई छन्द मानो गज मुक्ता भास मोतियों के दाने की ॥९॥

(दाने की) प० श्री विश्वनाथ जी शुक्ल शास्त्री कानपुर

क०—विप्रन में देखी है हाय हाय पूजन की धनियों में देखीहै धनधान्य के कमाने की। कृषकन में रोज़ रोज़

बन्दे की हाय हाय राजन में देखहिं निजराज के बढ़ाने की ॥ यवनों में भारतीय धर्म के मिटाने की हिन्दुओं में देखहिं अंगरेज बन जाने की। विश्व में मची है चहुँ ओर पेट भर की हाय ! दीन दुखियों में हाय हाय मची दाने की।

(दाने की) प० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—झूलत हिंडोला बन श्याम और श्यामा दोऊ आज देखि आई जा तरेटी बरसाने की। दोऊ हैं किशोर दोऊ जोबन उमंग भरे दोउन के चाव खूब पैंगन बढ़ाने की ॥ दोऊ गले मोतिन की माल जो हिलोरें लेत तिन में दोऊ की मूर्ति डोले एह माने की। श्याम उर श्यामा झूलैं श्यामा उर श्याम झूलैं अजब लखात छबि मोतियों के दाने की ॥११॥

क०—जाते भी नहीं हैं वा किसी के द्वार माँगने को रखते नहीं हैं परवाह भी जमाने की। लाख बहकाव बहकाने में न आमैं कभी ऐसी दम किसकी है उनौ के बहकाने की। कहत किशोर हैं सिगट्ट में पचास लाख ठोकर लगाते धन मानों के खजाने की। गहली सी गहली जौन त्याग दी सो त्याग दी रखती है एकौटेक बीर मरदाने की ॥१२॥

(दाने की) पं० श्री जयनारायणजी त्रिपाठी शास्त्री 'महेन्द्र' कानपुर

क०—अति अलबेली संग ग्वालिनी नवेली बहु बेंचत दधि जात एक नार बरसाने की। राह में छिपे थे कृष्ण ग्वाल बाल साथ लिये आदत पड़ी थी खूब लूट लूट खाने की ॥ पास जब आई तब छेंकि लीन्ह्यो बीच ही में घात जब कीन्हीं कछु मटकी गिराने की। इधर

कर बोली वह दूर रहियेगा नाथ धूरि मिलि जैहै आज शान मरदाने की ॥१३॥

क०–भारत निवासी हैं श्रेष्ठ सब दुनियाँ में आदते हैं इनकी निशस्त्र लड़ जाने की। लड़ेंगे नित्य ये मुकदमा ही लड़ें क्यों न किंचित नहीं है खौफ दिल में हारजाने की। हारें जो अदालत तो लठैतों में जीत लेंगे खूब जानते हैं कला लकड़ी चलाने की। आन, बान पै निज तन, मन लुटाते सदा राखि रहे इज्जत औ शान मरदान की ॥

(दाने का) प० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०–भूलि गये राधावर बाधा हरने के लिये प्रतिज्ञा किये थे भूमि भारत में आने की। सुर महिसुर सुरभी औ धर्म सम्पदा को मार असुरों को आप सन्तत बचाने की॥ मिथिला की नारिन सम ब्रज की दुलारिन सम भारत भिपारीको विभूति तरसाने की। की है कृपा जो यही समुझ परी है वाचा ठीक है प्रतिज्ञाआप सरिस मरदानेकी॥

क०—कोऊ तीन बेर खात झूमत मदमाते नैन कोऊ दिन रैन चिन्ता करत नित खाने की। कोऊ करे सञ्चित धन धरणी में धरे निज कोऊ धन हान शोच करे धन पाने की। कोऊ नित्य नूतन उपाय शोचे शंकित है भूपन सताय जनता को वश लाने की। दीन तन छीन हैं मलीनता से भारतीय लाले पड़े जान के हैं तङ्ग दाने दाने की ॥१६॥

(दाने की) पं० श्री बाबूलाल जी त्रिवेदी 'लालकवि' कानपुर

क०–सतयुग का भारतवर्ष बिदित है पुराणों में स्वर्ग के सुरेश आदि चाह करें आने की। त्रेता का भारतवर्ष कहां लों बखान करूं राम दरश छोंडि आस नाहीं कछु पाने की॥ द्वापर का भारत वर्ष सुना है रिसि

मुनियों से गोरस की सरिता बहै चाह नहीं खाने की। कलियुग का भारतवर्ष देख रहे आंखों से लाल कवि चारों ओर त्राहि मची दाने की ॥१७॥

क०—देखि भवसागर चित्त अतिही दुखित होत व्याकुल मन होव है अधार कुछ पाने की। तबहीं प्रभु कृपा ते एक पुस्तक जो हाथ लगी नाम श्रीरामायण पाके चाह भई गाने की। जाऊँ बलिहार श्रीतुलसी के सपूत की मैं मारग दिखायो भवसार पार पाने की। लाल कवि हाथ जोरि बिनवें या समाज सों एक बार बोलो जय ऐसे मरदाने की ॥१८॥

(दाने की) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र आनन्द कानपुर

क०—कलि की कुचाल कहौं या तौ कर्म दशा भोग भारत के भाल विधि हाथ लिखे जाने की। कहौं या पिशाच कृत्य नरसंहारनीय कहौं या मनुष्यनमों पाप भर आने को॥ कहौं याकि रुद्र शक्ति जक्त की विनाश नीय कहौं याकि ग्रहों के विषम फल दाने की। भारत की आरत न देखी जात हाय दशा जनता में त्राहि मची एक एक दाने की ॥१९॥

स०—कलि के अघ पुञ्ज नसावन जीवन पावन हेत पढ़ै जो रमायन। सो भव सागर पारकरै करनी तरनी बिन ही मुदितायन॥ भालकलंक के अंकन से सियराम बसैहिय करत परायन। रचिगो तुलसी हुलसीसुत जाहि सो आनन्द आनुयेराम रसायन ॥२०॥

दो० नमों नमों तुलसी जयति बाल्मीक अवतार।
कलि जीवन निस्तारहित रच्यों ग्रंथ श्रुतिसार ॥२१॥

(दाने की) पं० श्री जगतनारायण जी शास्त्री "कुसुमाकर" कानपुर

क०—आया है ऐसा कष्ट-दाई विकराल समय लिखी जा सकती

नहीं खूबी जमाने की। खेती के कारण जो देश है कृषी प्रधान उसी देश वालों को है चिन्ता आज खाने की। दुखिया अनाथ हैं दुखी दाने दाने को हुये आशा नहीं है अब उन्हें भोजन पाने की। जिसे देखियेगा वही सोचता पड़ा है यह कठिन करना है समस्या पूर्ति दाने की ॥२३॥

(दाने की) पं० श्री राधेश्यामजी अग्निहोत्री कानपुर

का०—जिस भारत की स्वर्ण पताका दिश्वोपरि फहराई थी। जिसके वीरों की हुँकार से गगन धरा थर्रायी थी॥ दूध दही धन धान्य सुपूरित भूमी वैभव शाली थी। आश्रयदाता भारत था दुनिया मुँह तकने वाली थी॥ सुरगण भी इच्छा करते थे जिस पुण्य भूमि पर आने की। हो रही समस्या दूसर वाँ सुलझाने की अब दाने की ॥२४॥

(दाने की) पं० श्री काशीप्रसाद जी शुक्ल कानपुर

क०—हृदय अगाधि सिंधु सीप के समान बुद्धि स्वाती रूप शारदा सव कवित्त बखाने की। वर्षत वारि बर मुक्तामणि छंद चारु सुजन सनेहिन के कंठ पर आने की॥ बुध जंन बखानै यह जानि जिय आनें मन भारी भवसागर के तरनि पार जाने की। युक्ति न सों वेधि काशीराम शुभ तागनसों शोभा अनुराग योंहि दीन्हे मणि दाने की॥

इति प्रथम समस्या पूर्ति समाप्त

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री रामशरण जी द्विवेदी कानपुर

क०—भ्रकुटि विलास महा काल का निर्देश एक सूर्यचन्द्र नेत्र की कनीतिका कबीले हैं। उदर दरी में

लोक चोदहुँ निवास करैं शैल वनवारिधि सहस्रशो ग-
ठिले हैं ॥ शेष जू की शय्या सवारी पच्छि नायक की
नाभि कञ्ज मध्य में विरिञ्चिहृग मीले हैं। ऐसे प्रभु
श्रीपति शरण्य से विसारि नेह तुच्छ भव भोगी ह्वा
गरूरगरवीले हैं ॥१॥

(गरूर गर्वीले हैं) पं० श्री बन्दीदीन जी वैद्य कानपुर

क०—हनोमान बंका मन नेक नहिं शंका घेरि
लीन्हो गढ़ लंका डंका दीन्ह्यो भर्वीले हैं। रावन को
पकरि पछाडो गहि कुंभकर्ण पूंछि सो लपेटि मेघ
नादै हर्वीले हैं ॥ खर्भपरो है अति भभर गिरैं लबर
से हबर करै बर्वनिशिचारी दर्वीलेहैं। भागे भय पागे एक
एक न के आगे कहैं कहां गये बली जे गरूर गर्वीले हैं॥

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री सतिश शरण जी प्रेमप्रभा कानपुर

क०—ईश कृपा पायो तन सुन्दर सुजान शुभ
मनुज महान मति ध्यान ज्ञान गोले हैं। भारी भव
सागर अपार पार होने हेतु यतन न कीन्हो कछु कुम-
ति कुशील हैं ॥ तीन पनवीते रीते हाथन हमारी जान
चौथोपन आयो बने आजौ कोल भीले हैं। प्रेम प्रभा
छोड़ि सब काम भजुराम राम नाम अभिराम सुख
धाम गरवीले हैं ॥२॥

क०—आयो सखी सावन सुहायो मन भायो भूरि धावन घन लागे
नभ लाल पीत नीले हैं। अंग २ अमित उमङ्ग उपजावैं लागे मंद २

गरजि मुकुन्द बरषीले हैं। गावैं लागी सखियाँ शुभ सावन रिझावै लागीं दम्पति दुति देखि २ दृगउन्मीले हैं। प्रेमप्रभा रामकृष्ण सहित मुरारि लागे झूमि २ झूलन झुमकि गरबीले हैं ॥४॥

क०—श्याम घन सुन्दर सजीले शुभ शीले अंग अमित अनंग रति लखत लजीले हैं। नैन सेन बैन मन मोहन मनोहरायत छिन २ दुति दम्पति दृग देखत रँगीले हैं। शिव सनकादि सची शारदा सराहैं सदा नित्य नेति २ कहि शोभा सरसीले हैं। प्रेमप्रभा रामकृष्ण सहित मुरारि जू पै वारि वारि जाति शुभ गुण गर्बीले हैं ॥५॥

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री राधेश्याम जी अग्निहोत्री कानपुर

क०–मानसों से ईश्वरीय भक्ति ही है जाती रही करते अनीश्वर वादी तर्क तर्कीले हैं। गृह गृहिणी है सदा दीन दुखियारी रहै रंडियों के प्रेम हित अतीव खर्चीले हैं॥ दुखी दीन भाई हित पैसा नहीं जाय कभी साहब की दासता में शिरोधार्य शीलेहैं। क्रूर कर्म कारी श्वान भूंखते हैं बंधु देख हिंदु के सपूत यह गरूर गर्बीले हैं॥६

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

क०–वो हैं नन्दलाल तो हम हैं वृषभानु सुता वो हैं शानदार तो यहाँ भी चमकीले हैं। वह जो बजाय बंशी मोहत सब लोगन को उनके मोहन को यहाँ नैना रसीले हैं॥ कहत किशोर उनै एक गुन गुमान है तो यहाँ मेरे चौगुन गुमान भड़कीले हैं। बैठे रहैं कुछ दिन मजा चखैं मौज करैं देखूँगी कि कितने वो गरूर गर्बीले हैं ॥७॥

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री जयनारायण जी त्रिपाठी कानपुर

क०–रेशम की रस्सी को झूला पर्‌यो है चारु हीरा

दिक रतन तामें जड़े चमकीले हैं। सुंदर नक़ासी कढ़ी मोतिन की मालन की बीचन में मूँगा लसैं अति भड़को लेहैं॥ संग लै झूलै वृषभानु की सुता को तामें जाकी दृग कोरैं देखि खंजन लजीले हैं। अनुपम छटा को विखे-रत हिंडोलापै नयन अमोले औ गरूर गर्वीले हैं॥८॥

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्रीरामयत्न जी मिश्र "वाचा" आरा

क०—देखत जोहे प्रिय ताही पै मचलिजात नन्द के दुलारे कारे वड़े ही हटीले हैं। चितवत चित चोरि लेत छोरिदेत ही के ग्रन्थि और नहीं आवे ध्यान छैलचे छबीले हैं॥ आप नहीं खाते हैं खिलाते औरों को खूब लूट दधिमाखन वे बड़े ही खर्चीले हैं। जगन्नाथ होके वे आते क्यों यहां हैं नहीं "वाचा" नाम पाय के गरूर गर्वीले हैं॥६॥

क०—लाख समझाया पै न माना है किसी का कहा दुःख भाव धार्त्तराष्ट्र बड़े ही हठीले हैं। सूची भर देंगे नहीं सूची भर देंगे मुख सन्धि की बात मन कील समकीले हैं। मेरे घर दूत क्यों पठाते हैं बकाया हेतु कह दो जाय उनके नहीं हम कर्जीले हैं। राजन्! जो कहा है दुःशाशन दुर्योधन वर्ण वर्ण वर्ण वर्ण वे गरूर गर्वीले हैं॥१०॥

(गरूर गरबीले हैं) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र कानपुर

क०—सुने और देखे पढ़े बड़े२ शाहन के जीवन चारित्र जिन युगों सुख मीले हैं। कीन्हे वस देवदैत्य सम्पदा अनंत भोगि प्रजा के सकलदुख न्यायकरि कीले हैं॥ तिनका पताही नहिंकहां रहे कहांगये अब के

नरेन्द्र आत तायी जो हठीले हैं। देखना है सारि वी कहां लौं चलै एक दिन गिरेगी अवश्य जे गरूर गरवीले हैं ॥११॥

क०—कारे कजरारे रतनारे अरबिन्द सम चपल दृगाज अनियारे शरमीले हैं। खंजन कुरंगन के मानहू मथन हार प्रेमी हिये बेधै दृष्टि बाण जहरीले हैं। झाँकते झरोखन ते झुकि झुकि मानै नाहिं हटाके तिहारे नयन बड़े ये हठीले हैं। मानौ या न मानौ हिये आपने ते जानौ ये अनङ्ग मद माते सो गरूर गर्बीले हैं ॥१२॥

(गरूर गर्बीले हैं) पं० श्री लालमणि जी शर्मा 'मणीश' कानपुर

क०—वाक्य कटु भाषै रोषनैनन में राखै सदा थोड़ी थोड़ी बात में वचन जहरीले हैं। धर्म अरु दान हू में कौड़ी ना छुदाम देत कर अरुवाह चंदा देन को हठीले हैं॥ मेरे समान कोई जग में ना दूसरो ऐसो खानवान शान छैल चपल छबीले हैं। भनत मणीश दया मित्र ना कुटंवियों की बोलत हैं गर्ज बैन गरूर गर्बीले हैं ॥१३॥

(गरूर गर्बीले हैं) पं० श्री रामगोपाल जी कानपुर

सहज सजीले लाल लाज सों लजीले गोल जस सो जसीले ये दरद दरदीले है। नोकन नुकीलें चंच-बाई चटकीले चित्त छिपत छबीले अति शील सों भरीले हैं॥ सुन्दर सुशीले सुचि दारिद दरीले दुख सुख सरसीले हैं और आंजन अंजीले हैं। गावत गोपाल गुण गुणन गुनीले नैन राधे महारानी के गरूर

गरबीले है ॥१४॥

इति द्वितीय समस्या पूर्ति समाप्त

(मीठे हैं) पं० श्री रामगोपालजी ब्रह्मभट्ट कानपुर

क०—कृष्णजी विदुरग्रह आये विदुरानी देखि भोगलाई कदली फल अम्बहू चपीठे हैं। छीलि छीलि छिलका खवावैं गूदा गेरै महि ह्वैगई बिहाल सुख तीनों लोक इठे हैं। ऐते माहि विदुरजी देखिकै कहन लागे छिलका खवावै जान स्वाद माहि सीठे हैं आपदे गूदा पूछो कैसे तब गोपाल कह्यो भाव के बसीठे स्वाली खाइबे के मीठे हैं ॥१।

(मीठे हैं) पं० श्री जगन्नाथ प्रसाद जी द्विवेदी कानपुर

क०—सतत सुकुमारी प्राणप्यारी गृहलक्ष्मीको मरम प्रवीण नीति विज्ञ हरे बैठे हैं। भारत सुपुत्र हुए बाधक जो मार्ग में हैं गृद्ध के समान उन्हें मारमन ऐठे हैं॥ स्वार्थ रत दनुज अधर्म तल्लीन रहें भगवन न जाने चुपसाध क्यों बैठे हैं। क्रूरकुविचारी साधु सन्त दुख-कारी प्रभो होते हुए भूरे तुम्हें जाने कहा मीठे हैं ॥२॥

(मीठे हैं) पं० श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

क०—मीठे हैं तनदुल सुदामा ने दीन्हेन जौन खाय खाय कृष्ण जी सराहैं बहु मीठे हैं। मीठे हैं बदरी फल शिवरी ने दीन जौन कहत लखन राम भैया बहु मीठे हैं॥ मीठे हैं विदुर घर पत्नी जौन केला दीन छिकला खाय कृष्ण कहत भैयाये मीठे हैं। मीठे हैं चावल द्विज

पत्निन ने दीन जौन सखा संग खात कहैं मिश्र बहु मीठे हैं ॥३॥

(मीठे हैं) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

क०—प्यारी तेरे वैन हैं कि मैन के हैं प्रेमपाश याती मोह माया के मंत्र ये अनूठे हैं। चन्द्र मुखी हांसते तिहारे चंद्रिकासी झरैं वनते चकोर वे भी विषय से जो रूठे हैं। जाके हैं समाते मन सुधि बुधि बिसर्जाती कुछ न सुहातो स्वर्ग सुख कहैं झूठे हैं। एतो मिठास नहि पायो जग मिठाइनमो जेते प्राण वल्लभा तिहारे वैन मीठे हैं ॥४॥

(मीठे हैं) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—आप डटे पाके पास प्रभु के निकट ज्यों दास दुर्बल सुदामा को विठाये हेमपीठे हैं। कुच्च से छिनाय विन पूछे लिन्ह तन्दुल ग्रन्थि छोरिलगे खाने यदुनाथ बड़े ढीठे हैं ॥ सत्यभामा रुकिमणी निहारती पटरानी सबे जीर्ण शीर्ण वस्त्र कालिमा से अति रीठे हैं। दोई मूठ खाय पछताय कहैं वेरवेर वेरहू से ढेर दधि माखन से मीठे हैं ॥५॥

क०—राजन! राम सविनय कहे हैं प्रणाम तुम्हें नेक नाहीं रञ्जित वे प्रसन्न मुख दीठे हैं। कहियां ना वचन व्यङ्ग लक्षण कहे हैं अभी जोई मन आवत सोई कहत अति दीठे हैं। "वाचा" राजतिलक पाय भरत नहीं छांड़े नीति ईश की रजाय सब ही के शीश पीठे हैं। इतना ही कहके चलाये नाव गंगापार रहा मे बिचार शब्द सरस अति मीठे हैं॥

क०—जीव अरु ईश को एकत्र दिखलाये खूब गौर गात्र श्याम मरदाने मृदु ढीठे हैं। यद्यपि गरूर गर्वीले लिखे एक जने दूसरा शान्ति मूरति लखाति स्वर्ण पीठे हैं। गौर का कथन वीर रस से भरा है सदा श्याम का शान्त पारावार समदीठे हैं। "वाचा" जी विचार तुलसी के सखा मानस को मधुर मकरन्द सुधास्यन्द सम मीठे हैं ॥७॥

क०—बड़े ही गरूर गर्वीले हैं वहाँ पै लोग शान मरदाने की ढिंढोरा मारि पीटे हैं। चढ़े बलि पशु ज्यों प्रसन्न होत कन्धहूँ पै त्योंही पद पाय के प्रतीत अति ढीठे हैं। शोचत नहीं हैं धन धाम धरणी को "वाचा" किंशुक कुसुम के समान सब सीठे हैं। इसका परिणाम क्या ? घटेगा ध्यान कीजै खूब विष के समान वहाँ होगा यहां मीठे हैं ॥८॥

(मीठे हैं) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

क०—सूने महँ राम के जो लाया हरि जानकी को (तो) तेरे अब जान की न खैर ढंग दीठे हैं। धूर मिल जांयगे गरूर तेरे चूर होके दूर दिन नहीं हैं काल लावत घसीटे हैं॥ वालि किशोर कहै अवहूं तूं मान रावण रामचंद्रजी के जोन भेजे वसीठे हैं। शरणागत आवै जो ताके अपराध छमिलेत अपनाय देखु कैसे राम मीठे हैं ॥९॥

क०—मीठे हैं वो केवल हमारी सौतन के हित हमरे लिये तो वह सर्वसही सीठे हैं। सीठे हैं सखीरी सत्य उनके व्यौहार सबै हमैं न सुहाय आली उनके पसीठे हैं॥ कहत किशोर हम अबलौं अयान रहीं तासों मन मानी मुझै खूबही घसीटे हैं। अब तौ हम आली खूब मोहन को जानगईं दिल के कठोर बस ऊपरै के मीठे हैं॥

(मीठे हैं) पं० श्री सतीश शरणजी प्रेमप्रभा कानपुर

पद०—प्रेमिन को अति मीठे लागत लगत मूरखन सीठे हैं। मधुर मधुर मृदु लगत सुहावन पाप प्रनाशन दीठे हैं॥ अति अभिराम धाम पहुँचावन श्रीगुरु कर बर चीठे हैं। श्रीराम कृष्ण मूरारि नाम अति प्रेम प्रभा मुख मीठ हैं॥११॥

पद०—जग विष विषयन विवश होत हरि नामहि रहत उबीठे हैं।
उनकी बात न चालहु रंचहु जग प्रपंच दिये दीठे हैं॥
भावत संघ न सन्त जनन को विचुकावत अति सीठे हैं।
तिन्हें त्यागि श्रीराम नाम जपु प्रेमप्रभा मुख मीठे हैं॥१२॥

इति तृतीय समस्या पूर्ति समाप्त

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(राधासमाराधितः) पं० श्रीरामशरणजी द्विवेदी कानपुर

वृन्दारण्य कलिन्दजा तटरुहच्छ्रीमत्कदम्बाश्रितः प्रेङ्खत्युढ्यभराभिरामवलयच्छाखावनद्धश्रियाम्। दोलायामुदयद्दिवाकरनिभस्वर्णेन्धितायां प्रियः श्रीमान्नन्दसुतो जयत्ववनिभृद्राधा समाराधितः॥१॥

(राधासमाराधितः) पं० श्रीरामकिशोरदासजी कानपुर

श्रीकृष्णः परिपातु रामचरितं गौरीपते मानसम्। भक्तानामवनीतले प्रियतम रामायणं मुक्तिदम्॥ ब्रह्माण्डोद्भव पालन क्षय करो धर्मस्य संस्थापकः। गोपीनां शुभ भाव भावित तनू राधा समाराधितः॥२॥

(राधासमाराधितः) प० श्री काशीनाथ जी अवस्थी कानपुर

श्रीवृन्दावन मध्य गोप बनिता गो-बाल-गोपैर्वृतः।
गोबिंदाख्य समस्त सिद्धिद सदा गोचारणे तत् परः ॥
यं ब्रह्मादि सुरा नमन्ति मनसा गायन्ति देवर्षयः।
बाधाविघ्न विनासनः स भगवान् राधा समाराधितः ॥३

(राधासमाराधितः) पं० श्री भूषणजी शास्त्री कानपुर

गोपी निर्मित शुभ्र पुष्प शयने देवद्रु कुञ्जे मुदा।
सख्या नर्म गिरा प्रसाद्य कथमप्यानीतमाराद्धनात् ॥
प्रेयासं प्रति या मनोज सरसा वृतीश्चकाराथताः।
श्रीकृष्णं परिरभ्य गाढमभजद्राधा समाराधितः ॥४॥

(राधासमाराधितः) पं० श्री श्यामसुन्दरजी त्रिपाठी कानपुर

कृष्ण ! त्वां किमपि ब्रवीमि हृदये भावो मया
रक्षितः। तज्ज्ञाने प्रयतो विधाय मननं तस्यातु रूपं कुरु ॥
नोचेश्वोंभुवि बेदधर्म रहितैः कालेन दुर्भिक्षितैः। त्यक्तः
साधु जनः सुखेन भविता राधासमाराधितः ॥५॥

(राधासमाराधितः) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

हित्वा मित्र कलत्र पुत्र सहजान् यत्पाद पद्मं श्रिता
हा सो न्यां सुजुषेत गर्हित तरां कुब्जाभिधामुद्धव
सो जः से दुरवीस एव हुत भुक् जानामि नो दुष्यति
व्रीडेयं विदितोत्र कृष्ण इति यो राधा समाराधितः ॥६॥

(राधासमाराधितः) पं० श्रीविश्वनाथजी शुक्ल शास्त्री कानपुर

सद्योयान्ति कुभाग्यभाग्य जनिताः पापादयो दुःखदा
ये चान्येऽशुभकारकाः सुख हरा माया गुणा जन्मदाः

भक्तिस्तस्य विजायते हि विमला शान्तिप्रदा मुक्तिदा चित्ते यस्य समागतो निशिदिनं राधा समाराधितः ॥७॥

(राधासमाराधितः) पं० श्री रामयत्नजीमिश्र 'वाचा' कानपुर

का कंशारिमनो विमोहनपरा का लोक पापंहरा आयातिव्रजतीहका अहरहः को गण्यते प्रोषितैः। कीदृक् पूरयते मनः पशुपति का नाथचेतो हरा आरोहादव रोहतोऽन्त पददो राधासमाराधितः ॥८॥

क०—का कान्ता कमनीय कंशकरिणः कण्ठीरवस्यावनौ का धत्ते हृदये स्वके ऋतुवरान् कीदृक् शिवः शर्मदः कृष्णः केशिनिषूदनो भय हरः कालीय सम्मर्दनो वाधावाधनतत्परो भवतुवै राधा समाराधित ॥९॥

क०—राधा समाराधित पाप पद्मं कृष्णंत्रयोऽचिन्तयदङ्गमूर्त्तिः। कुतूहलः कोऽवनिमण्डलेऽत्रपशुप्रतीकाश जनुर्नरोऽसौ ॥१०॥

(राधासमाराधितः) पं० श्री मुकुन्दलालजी मिश्र दतिया कानपुर

क०—कालिन्दी निकटेऽर्धरात्रिसमये चन्द्रप्रभा भासिते आहूता मुरलीरवेण वनिता राधा स्वयं नर्त्तयन्। प्रेमालोकनहास्य भावसहिताः कृष्णो मुदा हर्षयन्—राधानर्तन कौतुको ह्यवतु मां राधासमाराधितः ॥११॥

(राधासमाराधितः) पं० श्री लालमणि जी मणीश कानपुर

पुत्रैर्भ्रातृकलत्र मित्रपशुभिर्मोहे वयो मेव्ययो नालोक्यं शुभ मात्मश्रेयसि करं गर्भेण ज्ञानङ्गतः। वेणुं वाद्य विभूषितो नटवरो गोपाङ्गनाभिर्वृतः श्रीमच्छङ्कर शेव्यते भावमनिशं राधासमाराधितः ॥१२॥

अथ द्वितीय संस्कृत समस्या पूर्त्तय:

(कुतूहलंकिम्) पं० श्री रामशरण जी द्विवेदी कानपुर

जीवो भवाब्धौ विवशोनिमज्जन् नशर्म विन्दत्यन वाप्य राम। ज्ञात्वा गुरोनार्चिति तं विमूढो विमुक्तयेऽनोस्ति कुतूहलंकिम् ॥१॥

यश्चाप मौग्रनभन क्वचिद्गु लीलयैव [illegible] ।
लङ्केश शत्रु [illegible] सेतुर्निर्मयेदिवं [illegible] कुतूहलं किम् ॥२॥

(कुतूहलंकिम्) स्व०प० श्री रामकिशोरदासजी शास्त्री [illegible] प्रयाग

यस्मिञ्जनाः कालमुखेविशन्ति तत्रापि दुःखानि सुखं वदन्ति। भजन्ति नो राम पदारविन्दं ततोऽधिक-स्त्वत्र कुतूहलःकः ॥३॥

कष्टानिभुक्त्वा बहुजन्म जाताः विदन्ति नाद्यापि च मुक्ति बीजम्। शृण्वन्ति नो रामचरित्र गाथानतोधिकस्त्व त्र कुतूहलःकः ॥४॥

(कुतूहलकिम्) प० श्री श्यामसुन्दर जी त्रिपाठी कानपुर

'निर्दोश' राज्ये सुनिवासकेन [illegible] हानिः [illegible] तस्यदोषः। प्रक्षाल्य कन्दे समुद्रर्चि मनि [illegible] यदि स्यात्तु कुतूहलः कः ॥५॥

(कुतूहलकिम्) पं० श्री [illegible] मिश्र "[illegible]" कानपुर

यः सर्वलोकोद्धरण प्रसक्तस्त देवकी [illegible] । गोवर्द्धनोत्तोलनमात्र काले स्तुन्वन्ति लोकानु कुतूहलःकः

एकोऽप्यनेको मिथिलानगर्याम् बभूवरामोजनदृष्टिमार्गे।
सचैव सुतादृशस्य मनोऽरविन्दे चतुर्भुजोऽभूच्च कुतूहलःकः ॥७॥

(कुनूहलः कः) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

यत्पाद पंकज विनिः छत वारि धारा भस्मी कृता नपि नृपान् मुनिनोज्जहार। तद्विष्णु धाम जपनाच्च तदीय धाम संलभ्यते यदि तदात्र कुतूहलः कः ॥८॥

योलीलया सृजति पाति तथात्त्रिलोकान् सोंतः प्रविश्य जननी जठरान्तरस्थम। द्रौण्यस्त्रतः सकल जीव निकायधामा श्रीविष्णुरातमगुपन् नु कुतूहलः कः ॥९॥

(कुतूहलः कः) पं० श्री वन्दीदीनजी वैद्य कानपुर

भर्तागमे केवटराजरित्थं भृत्यान्समाहूयकृतोपदेशः। कृत्वा तटारोध युधिस्थिरेच्छा दृष्ट्वा ह्यहं सद्य कुतूहलकः ॥१०॥

इति द्वितीय संस्कृत समस्या पूर्ति समाप्त

अथ स्वतन्त्र कविता

(तुलसीदासजी) प० श्री काशीप्रसादजी शुक्ल कानपुर

क०—अति अनुराग सों मनाय सब देवन को अंचल पसारि बहु विविधि मनावहीं। होय सुतराम पद पंकज पराग लीन मीन जिमि नीर भाय हिय हुलसावहीं॥ भक्ति से विहीन दीन सब भाँतिन सों ऐसे बाल बलिजादि वाला हीन उपजावहीं। सुर नर नाग तीन लोकन की नीय सबै तुलसी समान सुत होय यह गावहीं ॥१॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र कानपुर

स०—कलि के अघ पुञ्ज नसावन जीवन पावन हेतु पढ़ै जो रमायन सो भवसागर पार करैं करनीतरनी विनहीं मुदितायन। भाल कलंक के अंक नसैं सियराम बसैं हिय करते परायन। रचि गो तुलसी हुलसी सुत जाहि सो आनन्द जानु ये राम रसायन ॥२॥

दोहा—नमो २ तुलसी जयति बालमीकि अवतार।
कलि जीवन निस्तार हित रच्यो ग्रंथ श्रुतिसार ॥३॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री गणेश शङ्कर जी मिश्र विद्यार्थी कानपुर

क०—एक समय वो था जब भटक रहे थे लोग सूझे थी न पंथ तिनहि रास्ता दिखायदी। लुप्त होरहे थे सद्ग्रन्थ वेद आदि सबै, तिनका उद्धार कर भाषा बनायदी॥ कहत गणेश रचि राम चरित मानस को मानुष व मानस की कालिमा मिटायदी। ऐसे श्री तुलसीदासजी की जै बोलो सबै जने जने जिनन राम भक्ति सरसायदी ॥४॥

(गोस्वामी तुलसीदास श्री रामकृष्ण तैलङ्ग विद्यार्थी कानपुर

क०—आनन्द कंद रामचन्द्रजी की भक्ति भक्तन के बनिके गोस्वामी जिनहि वेद दृढ़ायदी। तुलसी बनि जन के अज्ञानतम नाशन को रवि रामायण एक ज्योति चमकायदी। कहैं रामकृष्ण स्वयं दास कहलाय जिन नीति उपदेसि सब की दासता मिटायदी। ऐसे गोस्वामी श्रीतुलसी-दासजी की जै हो जिसने स्वर्ग जाने की रास्ता दिखायदी ॥५॥

(गोस्वामी तुलसीदास) प० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—लुप्त हो रहे थे सद्ग्रन्थ वेद आदि जब धर्म कर्म भी तो रह गये थे बस नामको। अपने मन माने मार्ग ही में सब मस्त हते स्वप्न में भी कोई नहीं जपता था राम को। कहत किशोर ऐसे समय में स्वजन्म धारि कीना ज्ञानवास जड़ जनता तमाम को। धन्य २ तुलसी तुम्हैं कोटि २ धन्यवाद तेरे उपदेश लोग पावैं राम धाम को ॥६॥

इति प्रथम स्वतन्त्र समस्या समाप्त

(संसार) पं० श्री रामशरण जी द्विवेदी कानपुर

अजोऽप्यस्मिन्नाना जनि जनित दुःखोपि जनिता। स्वतः साक्षी जीवो भवति खलु भोक्ताभि मतितः॥ पर ब्रह्माऽज्ञात्वा बहु विषय मोहान्ध तम से। विचिन्वन्संसारे व्रजतिन पुनर्मोक्ष पदवीं ॥१॥

क०—बाल्य में बलैयाले बलायें दीन्हीं बाप मानें, यौवन में कामिनी के नीके नीके नैन गड़िगे। कितने बिताये दिन आनन्द सुधा में न्हाय, हाय हाय पानी में कमाये दाम पड़िगे ॥ जरन जरा के ज्वर बीच लागे नीच तबौं नारी सुत धाम धराधन ना छड़िगे। बीत गई रीतियों प्रतीति की, अतीत भये, गम जाय चेते जब रोते पांय अड़िगे ॥२॥

(संसार) पं० श्री ब्रह्मानंदजी मिश्र कानपुर

स०—अकबर साह सभाविच सूर अरु तुलसी दोउ हरि भक्ति बिराजे। भूप कह्यो कविता तुम दोउ में काकी अहै सबसों सिरताजे ॥ सूर कह्यो कविता अति उच्च मनोहर भाव भरी मम गाजे। तुलसी कविता कविता न कहो वह मंत्र सजीव सजीवन साजै ॥३॥

प०—है संसार असार क्षणक में इसका रूप बदल जाता। पर न बीज बसता है अन्दर ब्रह्म रूप जो कहे दाता ॥ प्रकृति ताहि सत्तासो रचती पुनः वही भरता त्राता। बीज वृक्ष में वृक्ष बीज में भेद न इसका कोइ पाता। ४॥

प०—यह प्रपंच शक्ती से जिसके दृश्यमान वह अबिनासी। शांत चित्त निर्मल व मुक्त है ईस सभी घट घट वासी ॥ कर उपासना जिसकी होता जीव सोइ आनंद रासी। ब्रह्मानंद भजताहि रामको जक स्वप्न वन दुख फांसी ॥५॥

(संसार) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

क०—दाने दाने की तो लगी है फिकर लोगन को लेकिन सिनेमा रोज रोज जाये चहें। कोई जो गरीब एक पैसा भी मागै तो पैसा तो न देंग बल्कि अलबी तलबी कहें ॥ सट्टा और फाटका जुवांमे बड़ प्रेम राखैं कहत किशोर चहें लालन घाटा सहें। वाह संसार तेरा महिमा अपार सदा तेरे बहकाए लोग माथे उलटे बहें ॥६॥

इति द्वितीय स्वतन्त्र समस्या समाप्त

इति सं० २००० की समस्यापूर्ति संग्रह

अथ सं० २००१ की समस्यापूर्ति संग्रह

श्रावण शुक्ला सप्तमी बुधवार

सभापति--पं० श्री ब्रह्मानंदजी मिश्र 'आनंद' देवनगर कानपुर *

हिंदी समस्यायें—(मीठे) (२) उवारोगे (३) लगी रहै (४) मारत चोंच अचानक तोता।

सम्कृत समस्यायें—(१) नदी (२) वने (३) माध्यन्तोके प्रमिद्रम्

स्वतन्त्र कविता—(१) युगल झाँकी (२) उद्यान।

(मीठे) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

स०-भावै नहीं षट नौं रस चित्त विषय के विहार लगैं सब सीठे। जेते प्रपंच हैं मायिक बंधन जांनि सबै मनते हैं उबीठे॥ क्षण भंगुर देह का नेह नहीं चहुँ ओर

---

*आप भद्रपुर (भद्रस) के निवासी हैं आपकी कविता शिक्षाप्रद भक्ति भाव पूर्ण हृदयग्राही होती है। आप श्रीवैष्णवधर्म के परम प्रेमी हैं। आपके पास सभी सम्प्रदायों के ग्रन्थों का बड़ा ही सुन्दर संग्रह है। आप रात दिन हरिभजन, पूजन, पाठ एवं सत्सङ्ग में लगे रहते हैं। मानवधर्म के जीवन का सुन्दर फल यही है जैसी आपकी दिनचर्या है। आपने कई धार्मिक ग्रन्थ भी लिखे हैं, कुछ मुद्रित भी किये हैं। देवनगर कानपुर में आपका ब्रह्मानन्द आश्रम स्थान है।

सम्कृत के द्वितीय सभापति—साहित्याचार्य-व्याकरणागम शास्त्री वै० क०ध० म० पं० श्री कामेश्वरजी झा मु० जोंकी जनकपुर थे। आप क्षमा सन्तोषादि गुणों के कारणही सन्तोषी नाम पाये हैं। श्रौतस्मार्त कर्म के विद्वान होते हुये भी गायन एवं हरमुनियम बजाने आदि गुणों में प्रवीण हैं। मुद्रक—

ते आनन्द रामहिं दीठें ध्यान सुधारस छाके फिरैं मतवाले जिन्है हरि लागत मीठे ॥ प्रपंच हैं मायिक बंधन जानि सबै

(मीठे) पं० श्री बन्दीदीन जी वैद्य कानपुर

स०—लरिकाई की बानि परी सो परी यशुधा दुलराय किये अति ढीठे। पाय वराहनो गोपिनको तबहू पुचकारिकै ठोकत पीठे॥ गोपिनके दहीभात को खात सुधासम व्यंज न लागत सीठे। खात रहे हरिमाठी सुनी सत्तमानी चबात लखे कनमीठे ॥२॥

(मीठे) श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

स०—घेरि रहे नभ मंडल मेघन बिज्जुछटा मिलि बाँधत गीठे। दादुर दूंद मचावत हैं झनकारत झिल्लिन के गन दीठे॥ आय गोपाल मिलैं तो भले नतु साज समाज सबै रंग सीठे। मोर मरौ जरौ कूप परौ पपिहा तेरे बोलन लागत मीठे ॥॥३॥

(मीठे) श्री रामकृष्ण तैलङ्ग कानपुर

स०—धर्म गयो धन, धाम गयो अरु मान गयो तबहूं नहिं दीठे। भक्ति गई सब शक्ति गईं अरु प्रेम गयो तबहूं रहे ढीठे॥ दान गयो अरु पुण्य गयो सब ज्ञान गयो किमि हो गये सीठे। आवत क्यों नहिं 'राम' प्रभू जग में जब आप कहावत मीठे ॥४॥

(मीठे) श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

स०—रिपु खंडन को रघुनंदन हैं दुख मोचन को

तुलसीदल मीठे। तुलसी बिन भोग न भावत है नम-कीन कि हों अथवा रस मीठे॥ तुलसीकृत मानस मानस में किमि भाव भरे तुलसी सम मीठे। तुलसी न कहीं यदि होत यहां दिखते नहिं रामपदाम्बुज मीठे॥

(मीठे) श्री वागीश्वरी प्रसाद जी वर्मा कानपुर

स०—तत्व वितत्व वितान तने त्रयलोक लखो दिव दीठि वरीठे। जहं चेतन योनि अनेक जने छवि छोट बड़े विरचे विधि शीठे। सब रूपन में शृङ्गार वही शशि शृङ्ग शिरोमणि हैं जग पीठे। सुन्दर आनन्द कंद सदा जिन-के उर पूरि रहे रस मीठे॥६॥

(मीठे) प० श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

स०—मीठे शक्कर की मिठाई बनै विविध भाँति गुड़ की बनत वस्तु कहत सब मीठे। शहद अवलेह की प्रशं-सा करत वैद्य बनत है पाक रस कहत सब मीठे। आम मिठाई सब रसन नसों मीठी लगे चाटत अनेकन बार अहह क्या मीठे भनत मणीश सब रस में अमियरस अमृत हू से मधुर भाषण अति मीठे॥७॥

(मीठे) पं० श्री गणेश शंकरजी मिश्र कानपुर

स०—चाल है मीठी सुढाल है मीठी रुरंग है मीठे सुढग है मीठे मीठे है मन्तव मीठे हैं कर्तब मीठे हैं खेल किलोलहुँ मीठे। मीठा है लेनब मीठा है देन मीठे हैं बैन रुसैनहूँ मीठे। मीठे ही लोगनते सु "गणेश" कहैं सब मीठेन में हम मीठे॥८॥

(मीठे) श्री पौराणिक बलभद्रजी तैलङ्ग मथुरा

स०—दधि माखन तो मोहि भावत हैं मधुमोद कहू

अति लागत मीठे मठरी। अरू ठोकर कठोर लगें गुझिया पपड़ी मुख जातहि मीठे। मिसरीरू गरी की कटोरि भरि अरू खाजा औ खुरमाहु लागत मीठे। बलभद्र कहैं सुनु मातु जरावहि दीजै पदारथ होइ जो मीठे ॥९॥

(मीठे) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

स०—तनछीण मलीन नवीन निहारि महीसुर को बैठे वर पीठे। हैं कहती अबला हरि की सब क्या लखती हमरी सखि दीठे। करुणा वरुणालय पायपखारि खिला-रिके चाखत चाँवल मीठे। "वाचा" बखानत हैं ब्रज के नवनीत सिता से अहैं अति मीठे ॥१०॥

स०—कहूँ कहूँ अवतारधरे हमने बहुधा बसुधा पर पीठे।
[illegible] बहु भक्तन को गहि के नभ ओर न आवत दीठे।
[illegible] कलेवर हैं सब अङ्ग सुभाकिते रीठे।
चारु चक्रावति चिन्हि चक्रेक [illegible] 'वाचा' कहे अनहद हैं मीठे ॥११

(मीठे) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

स०—आवन आवन कहि तो गए पर आए न मोहन अंतर सीठे। ऊधोजी नेक विचारिय तो यहँ भावत काहि जो भेजे बसीठे। आप तो भोग करैं कुबजा संग मोहिं लिखे यह योग के चीठे। जानिगई यह खूब किशोर कि दूर के बोल सुहावन मीठे ॥१२॥

स०—मीठो है आज जयन्ती को रोज जहाँ सब आप जुरै कवि मीठे।
मीठे बैनन ते कविता पढ़ि शीठहु को कर दें मग मीठे।
काह प्रसंशा करैं जू किशोर यहाँ सब देखत मीठे ही मीठे।
रामहु मीठे अरु कृष्णहु मीठे यहाँ के प्रसाद के पेड़हु मीठे ॥१३॥

तुम पाप नसावन हौ करता हम पाप के बोझ धरे रहें पीठें ।
तुम निर्गुन होहुँ किशोर गुनी तुम पंडित हो हम मूरख ढीठे ॥
तुममें हममें बहु अन्तर है तुम माया परे हम माया के दीठे ।
भूले हैं जो सोऽहं मन्मि कहें कहूं होत इंदोरन के फल मीठे ॥५॥

इति प्रथम समस्या पूर्ति समाप्त

(उवारोगे) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—वेदन पुरानन में लिखी चलि आई साखि युगन युगन से ते कस न सम्हारोगे । तारे जब पापी हैं अनेक कोटि जन्मन के आनन्द को अन्त समय कैसे कै बिसारोगे ॥ ब्राह्मण बिचार गुरु शरण निहार निज नाम की पुकार सुनि तऊ देर पारोगे । ह्वै है सब ज्वार नय महिमा अपार राम कलि में न आय मोहि नर्क ते उवारोगे ॥१॥

भारत है आरत विशेष अब दीन बन्धु भोजन वसन दीन दीनन निहारोगे । याकी दीन दशा लखि मृतक समान जानि मारे पाप ताप जो दयाल हो न झारोगे । जायगो रसातल में साथ साथ आपहूको नाम धाम भक्त उक्ति गीता भुला डारोगे । याते द्विज आनन्द विनय यें करे वारवार अब न उबारोगे तो कब आ उबारोगे ॥२॥

(उबारोगे) पं० श्री अमरनाथ जी कानपुर

क०—जड़ता की जड़ जो गड़ी मेरे मानस में नाथ कब आके वेगि उसको उखारोगे । अंधकार पुट जो पड़ा है मेरे मानस में नाथ कब आके बेगि उसको उघारोगे ॥ नैया पड़ी है मेरी गहरे भवसागर में बन पतवार मुझे पार कब उतारोगे । दरश दिखाओगे नाथ कब आके मुझे लेकर निज शरण कब जग से उबारोगे ॥३॥

(उबारोगे) पं० श्री गंगाराम जी पाण्डेय कानपुर

क०—आज हम कर्म हीन दुखी दीन बन्धुओं को दीन बन्धु दीनानाथ क्यों ना सुधारोगे। हम सब शरण में आये हैं विनम्र तेरी आगत शरण वाले को क्यों बिसारोगे ॥ हमको दयालु कोई विश्व में न दीखता है मम रोग शोक दुःख आप ही निवारोगे। अखिलेश आज तुम दीन देश जननी को गर्व परतन्त्रता से आपही उबारोगे ॥

(उबारोगे) पं० श्री लालमणिजी मणीश कानपुर

क०—अगणित संख्या नर वृक्ष पशु विनाश में चढ़ कर गरुड़ नाथ कब उद्धारोगे। जितनी वस्तु स्वामी पैदा करी जीवन हेत मिलहि नहिं नाथ कौन यत्न उपचारोगे ॥ राग भोग पूजा पाठ जप यज्ञ धर्म कर्म होन ना देत भार कब उतारोगे। भनैं मणीश भूमि भारत आरत में पड़ो प्रभू छोड़ कै बैकुंठ नाथ कब तक उबारोगे।

(उबारोगे) पं० श्री बंदीदीनजी वैद्य कानपुर

क०—गावत जहान तुम्हैं अधम उधारनहौ अधम शिरताज हम काहे हमते तुम हारोगे। गणिका गजग्राह भील सेबरी अजामील तारे तौनि कौनि भूता गति करि डारोगे ॥ बन्दी दीन ओर देखि दृढ़ता हिये में धरी देखैगे कैसे बानि कानि निस्तारोगे। जो यै बात साची सब सासन ने बांची तौ मानि मन साची नाथ मोहु को उबारोगे ॥६॥

(उवारोगे) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आगरा

क०–कुपथ कुचाली कुलदूषक भये हैं बहु लैके अव-
तार कब उनको सुधारोगे। साधु सुर सुरभी महिसुर
हैं दुखित अति पालन हित उनके कब भूप पग धारोगे॥
सावधान आया मैं न भय को हृदय में लावो 'वाचा'
सुधासा कब आयके सुनावोगे! गणिका अजामिल गज
गीध को उबारे तब भारत अति आरत याको कबधौं
उबारोगे।७॥

क०—कनक कसिपुको मारि जग के हटाये दुःख भक्त प्रह्लाद जन
अब भी उबारोगे। बालिको नशाय सुग्रीव को शरण राखे राखे धन
धाम दिये अब भी सुधारोगे। अशरण शरण प्राय गज को बचाये
धाय अशन बसन हीन लोक है विचारोगे। तब जो उबारे सो कबहूँ ना
नहीं है 'वाचा' सत्यव्रत जाने देश अब जो उबारोगे॥८॥

(उवारोगे) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०–एहो दयाल करुणा वरुणालय दयासिंधु कबहूं
ये दास पै भी कृपया निहारोगे। योग तप ज्ञान ध्यान
आदि कुछ कर्त्ता नहीं चाहत निर्वान भलो कैसे याहि
तारोगे॥ लेकिन किशोर कुछ नामहू मे है तो असर हो
जौ दयाल तौ फिर दया क्यों बिसारोगे। आशा है कि
जैसे अजामिल को उबारो नाथ वैसे ही मुझे भी भव
सिंधु से उबारोगे॥९॥

(उबारोगे) श्री गोस्वामी व्रजगोपालजी वृन्दावन

क०–तारे हैं गणिका गज गीध औ अजामिल से

अधम उबारे सदना सेन जो सम्हारोगे। सबरी रैदास धना और में अनेक गना इन सों कछु घाटि बाढ़ि मोंकों निहारोगे ॥ तारे हैं जेते तेते नभ में न तारे प्रभु एते जो तारे तो कहु दया हू न धारोगे। दीनबन्धु दीनानाथ व्रजनाथ श्यामानाथमो अनाथ हाथ गहि आपही उबारोगे॥

उबारोगे) कवि का नाम अज्ञात है

क०-श्रीराम के पदारविन्द बन्दत हौं बार बार चित्त में महान दुःख इसे कब निवारोगे। काम क्रोध लोभ मोहमत्सर ईर्षिणां षट शत्रु, अब प्रबल बहुत नाथ कबहु टारौगे। टारौगे न अब तक पुकारौं नाथ बार बार आप हैं हमारे हम आप को पुकारैंगे। सीताराम श्यामसुन्दर बूड़त हौं जलधिमाहि मोर मुकुटबारे नाथ मोहि कब उबारौगे। ११॥

इति द्वितीय समस्या समाप्ता

(लगी रहै) ब्रह्मानन्दजी मिश्र "आनन्द" कानपुर

क०-साधन अनेक कोन जीवन कृतार्थ हेतु प्रभुपद पंकज में बुद्धि ये पगी रहै। संचित प्रबल तीन पांच के कुघेरे परि आनन्द की मति गति माया ते ठगी रहै। हारि मानि आपही की अंतिम शरणलीन नाम के प्रभाव सबै आपदा भगी रहै। हाहा करि राम बिनवैया करो रोय रोय नाथ से लगन काहू मिसतें लगी रहै ॥१॥

(लगी रहै) पं० श्री अमरनाथजी कानपुर

स०-शशि आनन को लखि भक्तन की सब

आपदा दूर से जाती भगी रहै। ज्यों मुसकानि की आनि सेही कवि मानस में शुभ ज्योति जगी है। ज्योति से प्राप्त है काव्य कला जिससे मतिमानो की बुद्धि ठगी रहै। कामना नाथै मेरी यही एक ही ज्योति से ज्योति हमारी लगी रहै ॥२॥

(लगी रहै) पं० श्री दयारामजी त्रिपाठी कानपुर

क०—कानन में पाठन हो कुल गुरु द्वारा किसी शान्ति के वितान में तरङ्ग उमगी रहै। साथियों समेत सभी सींचते हों सेवसाग साहस सुदृढ़ताहो भीरुता भगी रहै। सादगी सरलता सुहावनी सदा ही रहे सत्त्विकी सुयुक्त बुद्धि मगन खगीरहै। विरत फिरत हो न मन मेरा ईश कभी ज्ञान के कमाने ही में लगन लगी रहै ॥३॥

(लगी रहै) पं० श्री लालमणि जी पाठक 'मणीश' कानपुर

क०—जैसी प्रीत श्री किशन राधे से भई है वीर तैसहि श्रीराधे अरु कृष्णं से पगी रहे। जैसो ध्यान निश औ बासर रहत मेरो मेरे मन मंदिर में ज्योति जग मगीरहे। सावन को आवन सुहावन लगत है आली बर्षत मेघ बिन्दु बिद्युत घटा जगी रहै। भनत मणीश झूला झुलिये कदंब बीच नटनागर मोहन सेलगनलगीरहै ॥४॥

(लगी रहै) पं० श्री बन्दीदीनजी वैद्य कानपुर

क०— ताके घर जाते जाके रहौ मदमाते वासे जोरो है नाते कहौ ता निकासगी रहै। बातै कनाना करौ हमसे बहाना नितप्रति तह जाना सोऊ प्रेम मे पगी

रहै। आवत है हांसी उपहांसी होत चहूं ओर मोहन तु-म्हारे मोह तागमेंतगी रहै। रात न जगी रहै सो बातन बगी रहै ठगी रहै भगी तुम्हारे पीछे लगी रहै ॥५॥

(लगी रहै) पं० श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

क०—जबलौं गंग धारा को महिमे प्रवाह वहै जबलौं अहीश शीश अवनी खगीर है। जबलौं प्रचंड़ मार्तण्ड को अखंड तेज जबलौं ब्रह्मांड़ बीच चांदनी पगीर है।गोपाल गुन गौरव बखाने संत जाग्रत औ सती सत्यता जबलौं सगीरहै तब लौं हमारे हिय धाम श्याम सुन्दर के युग पद कंज मजुल लगन लगी रहे ॥६॥

(लगी रहै) प० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

क०—झांकी सुझांकी जबसे मनमोहन की तब ते हिया की गति विधि ठगी रहे। घरनो सुहाय तरुतर ना सुहाय चाय चहुँधा चंगी रहै। देंरकवि कहत सुवेर वेर हेर फेर जांऊ मिलि आऊं ऐसी भावना जगीरहै। काते मैं बतांऊ तासे कैसे मिलि पांऊ सखि दारी ननंद तो दांये बांये ही लगीरहै ॥७॥

(लगी रहै, पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी 'लालकवि' कानपुर

क०—काम क्रोध लोभ मोह मत्सर मदादिक अरु जेते दुराचार तासों बुद्धी भगी रहै। वेद और पुराण यश गाय रहे बहुत भांति मेरी मति सदैव तुव महिमा में जगीरहै। चन्द्र में चकोर जैसे वारि मांहि मीन जैसे

ऐसी मति नाथ तुलसी कवितामें पगीरहै। ऐ हो जगदीश कवि लाल मांगें जोरिकर मेरी दृष्टि नाथ रूप विन्दु में लगी रहै ॥८॥

(लगी रहै) पं० श्री रामगोपालजी शुक्ल कानपुर

क०—शांति चित्त सों घरीक सुमिरे हिये राम योग धारणा का ध्यान उर में पगीरहै। जौन मेरे पापन के पुंजन के ढेर लगे छार सों बिलाय जांय सुरति जगीरहै। ऐसे असमय में जाय ढूँढ़ू किसे मैं नाथ आह के सुनैया रघुरैया पै दगीरहै। दुःख के टरैया नाथ अवध बिहारी सुनो तुलसी की प्रीति श्रीचरणों में लगीरहै ॥१०॥

(लगी रहै) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—देनाजब जगमें जनार्दन जनम "वाचा" तन मनधन भावना सुभक्तिसे पगीर है। सन्तत सचाई से समय सब संयुत हो चेतना अनन्द्रित हो हृदय में जगीरहै। दुष्टता दरिद्रता दुरन्तता दुरित हो पास नहीं आवे अतिदूरही भगीरहै। गोगुरु गोविन्द गरुड़ध्वज गुणगान करती कामना सदैव लोक रञ्जन में लगीरहै ॥११॥

क०—आवो पैनआवो "वाचा" सुमिरण करेंगे सदा अशरण शरण का भक्ति हियमें वनीरहै। रहते है कहीं तो पुनि आना ही पड़ेगा तुम्हें धारया सराहा नवरङ्क में सनीरहै। रहै जग जन के तन मन में चाहना तुम्हारी नाथ चलत फिरत ऊठत बैठत जमीरहै। फणि के तन मणि जैसे मीन मन जल जैसे कृपण हिय धन जैसे लालसा लगीरहै ॥१२॥

हैं ममता बश खातहजारन गोता। पीछुड़ बोलन जानत हूं जड़ मारत चोंच अचानक तोता ॥६॥

(मारत चोंच अचानक तोता) पं० श्री लक्ष्मीनारायण अवस्थी कानपुर

स०—गर्भ में वास कियों नव मास रह्यो अति त्रास नें लोचन धोता। ज्ञान भयो उरमें न कछू मुद नर्क में आनि लगावत गोता। पदमेशजी रैन भई औगई पै न चेत है मोह कीनीदमें सोता। सोवत सोवत सोय गयो अब मारत चोंच अचानक तोता ॥७॥

(मारत चोंच अचानक तोता) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

स०—है वृषभानुजा भानुजा के तट भूयाम बिश्रा मन धैर्यन होता। "वाचा" किये नवसप्त शृङ्गार विकल्पमें खाय रहामन गोता। जावक युक्त पदाङ्गुलि देखि विचारि के दाख प्रफुल्लित होता। पद्मविनिन्दक पायपैं आय के मारत चोंच अचानक तोता ॥८॥

(मारतचोंचअचानकतोता) पं०श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

स०—झूलत झूलन श्यामा औ श्याम झुलावति वाम सुसाजि सजोता दोउ किशोर उमंग भरे रसरंग भरे लंय पैंग उठौता। झूमि झुकैं प्रिय प्यारी सरोज तु भान किशोर हिये अस होता। मानहुँ दाड़िम के फल पैं झुकि मारत चोंच अचानक तोता ॥९॥

स०—क्यों मन मूरख मूढ़ भयो—भ्रम माहि पर्यो नित खात है गोता।
ये विषयान के जाल फंसे—हूंचि मानुष जन्म अकारथ खोता॥

मान किशोर कहा अबहूँ यह जानतहू नहिं ज्ञान न होता।
मारत है इमि काल सबै जिमि मारत चोंच अचानक तोता ॥१०॥ इति

अथ स्वतन्त्र कविता

(युगल झाँकी) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—नख सिख सिंगार किये दम्पति विहार करैं सियाराम महलन समीप घने बागन में। डारि गलबहियाँ चलैं मन्द मन्द बीथिन में देखैं फलफूल वृक्ष भरे अनुरागन में॥ त्रिविधि समीर डोलैं डोलैं पात हहर हहर पक्षी किलोलैं करैं बोलैं बोल डारन में। उड़त फुहारे नहर कुण्डन में रङ्ग रङ्ग आनन्द कहूँ झूला पड़े बंगलन अखारन में ॥१॥ इति

क०—वेदी हो सुचारु मणि फटिक रचित शुभ्र कनक सिंहासन पै प्रभु जी विराजे हैं कुण्डल तिलक कीट मुकुट सुहावै शीश मोतिन अरु फूलन के हार गुहे ताजे हैं। पीत पट धारे धनुबाण को सम्हारे अंग अंग हू सवारे जिन्हें देखि काम लाजे हैं। व्यजन चँवर छत्र लीन्हे कर भरत अरु लखन दमन रिपु कपि जू निवाजे हैं ॥२॥

(युगल झाँकी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—कारे कजरारे मेह बरसैं करारे नभ परत फुहारे बुंद रिमझिम सुढङ्ग हैं। हरे २ वृक्ष नव पल्लव प्रसून भरे गुञ्जत सुभृङ्ग परन विहरत विहङ्ग हैं। सुन्दर कदम्ब डार २ के हिंडोरा श्याम राधिके झुलावैं लखि लाजत अनङ्ग हैं। दोऊ सरसावैं दोऊ कजरी मलार गावैं दोऊ हरसावैं हिय अधिक उमङ्ग हैं ॥३॥ इति

(उद्यान) क०—आयोरी सावन सुहावन मन भावनोरी आओरी आओ चलौ कानन विचरिये। देखि २ शोभा अपार स्वच्छ कुञ्जन की विकसे प्रसून नव पेखि पीर हरिये। चुहुकत विहङ्ग रम्य चुहुकत मधुप जहाँ कुहूकत मयूर लखि मोद मन भरिये। शीतल सुगन्ध मन्द बहत समीर जहँ नन्द के "किशोर" संग तहँ पै विहरिये ॥४॥ इति

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(नदी) पं० श्री लालमणिजी मणीश कानपुर

पुरेवृन्दावनेरम्ये नृत्यन्ति यत्र केकिनः ।
स्नानार्थञ्च ययुस्तत्र गोप्यो यमानुजां नदीम् ॥१॥

(नदी) पं० श्री रामयलजी मिश्र "वाचा" आरा

अद्रेन्द्ररितटा घटश्रुतिजला मारीचनीलोत्पला लंका ग्राहवतीखरेणवहतीहस्तेनवेलाकुल । विद्युन्मा लि सुमालि घोर मकरा या रावणावर्त्तिनी कैवर्त्तो ननुराघवो वनचरै स्तीर्णाः समीका नदी ॥२॥

(नदी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

सुराः सर्वे प्रायः स्तुति भजन सेवार्चन विधेः प्रसन्नाः संतश्चेन्निजवसतिदातार इतिह । विना पूजां यस्या अभि विशति तद्धाम परमं ऋथक् मर्त्यः पाप्मा प्यहह खलु- धन्या सुर नदी ॥३॥

नदी) पं० श्री रामटहलरामजी दारागञ्ज प्रयाग

श्रुत्याम्नायनिबद्धानां वैष्णवानां परात्मनाम् । परमै- कान्तिनामेव लभ्यातु विरजा नदी ॥४॥

(नदी) पं० श्री वैद्यनाथ जी मिश्र मैथिल कानपुर

दीनपालक दासेन वावीता गतिदासदा ।
दासदातिगता वीवा नसेदा कलपा नदी ॥५॥ इति

(बने) पं० श्री वैद्यनाथ जी मिश्र मैथिल कानपुर

तदङ्घ्रि युग्म ममचित्त वेश्मनो धरात्मजायाः कुर्न्तांनमः शमम् । यदब्ज पुष्पादधि कोमलंगृहे बभूवका- ष्ठादपिकर्कशंवने ॥१॥

(वने) पं० श्री [illegible] जी [illegible] कानपुर

धवल धूलिमयो नवकान्तिमान् करविराजित वेणु सुयष्टिकः। कलनिनादमये प्रभु मोहनः सह चचार शुभैः सखिभिर्वने ॥२॥

(वने) पं० श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

कृष्णः कदम्बमारुह्य चीर हरणं करोतिसः। सर्वा-गोप्यः कम्पमाना याचन्तितच्छुभेवने ॥ ३॥

(वने) पं० श्रीरामयत्नजी मिश्र "वाचा" कानपुर

तानाज्ञांपरिपालयन्रघुवरः प्रागान्कुनः सानुजः। सर्वस्वं प्रसमर्प्य धर्मनृपतिः कुलैत्सभार्यैःपुरा। क्वाभूव-न्नृषयो वशिष्ठप्रमुखाः शास्त्रार्थवादंवदा गोसेवां क्वचक्रा रवै रघुपिता सर्वंसहायां बने ॥४॥

(वने) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

यस्या एक कटाक्ष मोक्षण वशान् मंदोप्यमंदायते। सा लक्ष्मीः किल यत्र सं विहरति प्रत्यद्रि कुंजेष्वहो ॥ देवा अप्यमरद्रु शोभित वनं संत्यज्य वासोत्सुकाः। को वांछेन्नहि तत्र वस्तुमनिशं कृष्णेज्य वृंदावने ॥५॥

(भाष्य लोके प्रसिद्धम्) पं० श्रीरामटहलदासजी प्रयाग

द्वैताद्वैतं सम्बिवच्छिवमधुकरयोर्वल्लभस्यास्ति शुद्धम्। भेदाभेदंहि निम्बार्कमुनिवरगुरोः पञ्चसिद्धान्तमाद्यम्। श्रीमद्रामानुजस्यागमनिगमविदो जीवमायाहरेर्वि-शिष्टा द्वैतं अतीष्टं सकलगुरुमतं भाष्यलोके प्रसिद्धम् ॥१॥

(भाष्यलोके प्रसिद्धम) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" कानपुर

एकोव्रते वसति मुरजित क्षीर सिन्धौ द्वितीयो गो-लोकेऽसौकथयतिकविः प्रागावोवैनितान्तम्। अन्यः कश्चिन्मधुपुरमलंभासते तस्यवासाद्भुमोलोकाः? खलुनिवसनं भाष्यलोके प्रसिद्धम् ॥२॥

(भाष्यलोके प्रसिद्धम्) प० श्री रामकिशोरदासजी शास्त्री कानपुर

अखिलहेय प्रत्यनीक कल्याणैकतान सर्वेश्वेरेतर समस्त वस्तु बिलक्षण ज्ञानानंदैक स्वरूपः। ब्रह्म प्रतिपादितार्थं चारीतकः, श्रीभाष्य लोके प्रसिद्धम् ॥३॥ इति

अथ सं० २००८ की समस्यापूर्ति संग्रह

श्रावण शुक्ला ७ बुधवार कवि सम्मेलन के

सभापति—श्रीमद्देवमुरारी द्वारा गादीस्थाचार्य 'वैष्णवसेवा भूषण' श्रीमान महन्त श्री १०८ **श्रीरघुनाथदासजी महाराज** बड़ा स्थान दारागज प्रयाग।※ हिन्दी समस्या—(१) कलपावैना। (२) चाँदनी। (३) बोलेना। (४) मुरारीकी। (५) भूमती डाली।

संस्कृत समस्या—(१) नभः। (२) सुंदरः।

विषय—(१) वर्षा। (२) कवि शक्ति।

※आप अपने सम्प्रदाय के रहस्य सिद्धान्त उभय वेदान्त के प्रखर प्रवतक उत्तर भारत में एक ही हैं। जैसा आपकी चतुःसम्प्रदाय वैष्णव सेवा में प्रेम है तैसे ही स्वकर्म धर्म प्रचार में भी अपूर्व निष्ठा है। ऐसे कठिन समय में बड़े २ कोठीवालों के धर्मद्वार बन्द होगये हैं किन्तु हमारे श्रीमान के तेज व तपस्या, भजन के प्रभाव से सन्त सेवा अटाटूट होरही है अतएव आपका सुयश चारों धामों में सर्वत्र प्रख्यात है। अन्यान्य महन्त सन्त आपका अनुकरण करें तो भारत का भाग्य जाग उठे।

आपका सेवक—मुद्रक

(कलपावैना) पं० श्री [illegible] भट्ट कानपुर

क०–ऊधो वनिसूधो आयो जोगको संजोगलैकै वे तौहैं संयोगीभोगी तऊ कलपावैना। सांगिनो विचारी कसयोगिनी वनैगीअब विरह वियोगिनी वनाय कलपावैना। छाड़ो है गोपाल वृज बालन विहालन को गऊवै गोपग्वाल हाल हाय कलपावैना। एसे कलपावै हैं तौ एसेकलपावे श्यामएसे कलपाये सुनोफेर कलपावैना॥

(कलपावैना) पं० श्री गुरुवर [illegible] के पुत्र कानपुर

क०–चाहती हैं नन्द ढोटा कोटि चन्द वारो श्याम बँसुरी बजाय हायहमैं तरसावैना। नैनन लड़ाय दिव्य कला दरसाय सखि मधुरी हँसनि हँसि जिय तड़पावैना रसपूर्ण हावभाव बोलनि मिलनि नित मोहन दिखाय तजि और कहुँ जावैना। कलपि कलपि अस्थिपिञ्जर दिखात तऊ तरस न खात अब और कलपावैना॥३॥

क०—चन्द्रमा की चाँदनी पपीहा की पुकार कहूँ, सावन फुहार मोहि नकहूँ सुहावैना। प्रीतम के प्रेम के पगान में प्रमत्त ह्वै कैं, मोह नहि छोड़ि मन और कहुँ जावैना। रैन अँधियारी प्यारी प्रकृति सिंगारी भट्ट तऊ हिय पिय बिन छिन सुख पावैना। जब से गये हैं श्याम मथुरा सिधाय हाय तब से हमारो मन नेक कलपावैना॥४॥

(कलपावैना) पं० श्री बन्दीदीनजी वैद्य कानपुर

क०–हे बन्दीदीन देखी अवधमांहि कलएसी दिन-राति सीतागुण बखानै और गावैना। ताके देखि वैको देशदेशनके भूपआय यतन करत हैं बहु महिमे

सो आवैना। कोऊ रामयश गावैं तब चुपह्वैजावैं के किशोरी यश चौगुनो औ सौगुनो औ भावैना। पावैं नाय याने हैं अयाने औ सयाने धावैं हाथ को उठाय जाय छ्वै कलपावैंना ॥५॥

क०—कलि के कलकी क्रूर कपटी भरे गरूर मातु पितु द्रोही औ हौं देवन भुकावैना। गुरुन को सतावैं द्विज साधुन धमकावैं ध्यावैं सासु ससुरारि जोरुऔं भावैना। धर्म को न मानै नहि आनै दया हिये बीच नीचन की भावना पवित्र धाम जावैना। गावैना गोबिंद गान कान ना सुनै पुरान हरि को ना धरैं ध्यान नर ते कलपावैना ॥८॥

(कलपावैना) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र "आनन्द" कानपुर

क०—वेदरु पुरान इतिहासन मों आये बहु लेख पढ़ि देखि कोऊ मनमाँहि लावैना। भावनाहि आपनी है मित्र शत्रु कार्य रूप कैसहू बताय बात कर्म को छिपावैना। नैन बैन सैन हू प्रगट करिदेत भेद शुद्ध हिय मुकुर है नेकु वो दुरावैना। आनंद भनत यह लोक उक्ति सत्य अहै औरे कलपावैं जौन तौन कल पावैना ॥६॥

(कलपावैना) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—दुरित हुआ है कहाँ तुरित न आता अहा रहा अब होथा यहाँ रूप दरशावैना। या पापरु "वाचा" तेरो सरबसधन तु है मेरो हेरी चहुँ ओर मेरी सुरत निसरावैना। रैन सुखकारी भै भारी दुःखवारी आज ए हो ब्रजराज कान्ह मोहि तलफावैना। घर को बिसारी

तेरे चरण को निहारी वेगि आवो गिरिधारी अब मोहि कलपावैना ॥७॥

क०—घर का अनाज नाको खेतहू बीच डारि दीन्हे काहि कहो सुख से मुख बात कहि आवैना। जलद बिन गगन जरत अवनी को देखि ज्येष्ठ सम आवण लखि कहूँ कुछ भावैना। "बाचा" घनश्याम घनश्याम को कभी जो देखों पकरि लै आइबे को कछुक बलपावैना। हा हा करों पाय परों सौ सौ बलैया लेऊ अबना कलपावै नाहीं तू भी कलपावैना ॥८॥

(कलपावैना) पं० श्रीहीरालालजी कानपुर

क०—घुमड़ घन छाये चपला चमक डराये आली रितु है सुहानी पर मोंहि कछु भावैना। झूलत ब्रज नारि गावैं ताल धुन प्यारी २ मेरो चित चाहे कोऊ शबद सुनावै ना। कहत कवि हीरा कोई धीर को धरैया नाहिं श्यामके बिना मेरो मन सुख पावैना। विरह सतावे दाह दूनी उपजावे पीर कान्हबिन देखे मेरोजिया कलपावैना

(कलपावैना) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर।

क०—काह कहैं ऊधौजी अपने हम जी की व्यथा राती दिन आठोयाम धीर नेक लावैना। घर औ दुआरे ब्रज जमुना किनारे सदा उनहीं की याद रहे तनक भुलावैना हमको जो दीनी सीख सोसवे हम लीनी सीख भलै रहैं जहाँ रहो किशोर चहै आवैना। यह तो जरूर कह देना उन मोहन से प्राण हरलेंय पैकिसीको कलपावैना॥१०॥

क०—बाजे तो राते रहे हर के धर काँधै परजोतैं जाँय खेत नेक

दिन टहलावैना । वाजिनको देखौ तो निराय रहे खेतन को लागत है घाम पै किशोर घवड़ावैना । वाजे वैठि नालिन के पास डटे पानी तकै जिसमें कि दूसर कोऊ फोर लै जावैना । चारा करैं पानी करैं ढोरन की सेवा करैं धन्य ही किसान दिन रात कलपावैना ॥११॥

(कलपावैना) पं० श्री लालमणिजी 'मणीश' कानपुर

क०- जब से श्रीकृष्णचन्द्र मथुरा से गये उधौ तव से गरीबिन की याद तक आवैना । रुक्मिन को पाय श्याम ऐसे गिर्मों ही भये प्रेम को करिकै फिर इतना सतावैना । ऊधौजी कहियो जाय खवर हमारी तुम वर्षा रितु आई कहूं अनत गवांवैना । भनत मणीश जोई हम को कल पावैहो तो हमहूं कहैं ऊधौ कृष्ण कलपावैना ॥

(कलपावैना) पं० श्री काशीप्रसादजी अवस्थी कानपुर

क०-उमड़ि घुमड़ि नभमंण्डलमें आये सखि छाय घन श्याम घन श्याम विन भावैना । जवते गये हैं जाय मथुरापुरी में वसे लसे यहिभांति कवौ कोऊ इत आवैना । प्रीति को वढ़ाय रीति प्रीतिकी वताय हमैं रहे वरकाय धामकोऊ सुधिलावैना । मन की मनै में रहि जात कहि जातनहीं यातेमन मेरो छिनएकौ कलपावैना॥१२

इति प्रथम समस्या पूर्ति समाप्त

(चाँदनी) पं० श्री रतनेश जी कानपुर

प०-सुरनर पशु खग तरुन को सब प्रकार आह्लादिनी । विविध रूप धरि गगनते भू तक फैली चाँदनी ॥

(चांदनी) पं० श्री ब्रह्मानंद जी मिश्र कानपुर

क०–यों तो शुद्ध शीतल सुधाम्बु सरसावनिमयंक किरण माला है हिय को सुहावनी। जीव उत्पादिनी तिमिर घोर वासिनी कुई को हरखावनी जलधि हुलसावनी। लता व मोद कारिनी कुताप की संहारिनी अनङ्ग रंग दम्पति हिये में बसावनी। आनन्द भनत सोई चोर और वियोगिनि को महा दुखदाई है गुणन खानि चाँदनी ॥२॥

पद–कहुँ प्रकाश कहुँ बसन कहुँ पुष्प रूप उत्पादिनी।
कहूं रजत मुद्रा बिहारि हरखावत मन चाँदिनी ॥

(चाँदनी पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०–जब से गये हैं श्याम तनिक न पायाराम जो थी प्रिय लागती वो होय गई बाँदनी। अङ्ग नहीं डोल हा अनङ्ग जारे डाल गात तात मात भ्रात बात डारैं करैं माँदनी। हँसती और बोलती दुराय गई दारिद्र बन डोलती हेराय गई कूदनी औ फाँदनी। "वाचा" चारु चन्दन चपटिजात तापदेत अनल सम लागत हैं चन्द्र आज चाँदनी ॥४॥

(चांदनी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री कानपुर

क०–मार मद नाशन को मंडप बनाय बन बांसुरी बजाई काहू प्रेम रस की सनी। सुनि ब्रजबाला ह्वै बिहाला सब दौड़ परी त्यागि काम धाम वाम जैसे पागल बनी नन्द के किशोर कृष्ण उनके संग रास कियो सरस राग

गावैं औंर नाचैं सबैजनी। देखि यह नभ में मयंक गति थगित भई लम्बी भई रात तो विलम्बी भई चाँदनी ॥५

(चाँदनी) प० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

क०–चाहें तो मयंक को पतंग सा बनादें कहै चाहैं तो मयंक में दिखादें उष्णता घनी। चाहैं अति नीच को बनादें अति उच्चतम राव को बनादें रंक रंक को महा धनी॥ बड़े बड़े सूरवीर राजा महराजन को चाहैं तो भगादें बिन आयुध बिना अनी। है ना अत्युक्ति ऐसी कवि न की शक्ति है जो चाहैं तो अमावस में चमका दें चादनी ॥६॥

सो०–वन्दौ तुलसीदास, जिन रामायन रचि कियो।
रामभक्ति परकास, जगमगात जिमि चाँदनी ॥७

इति द्वितीय समस्या समाप्ता

(बोलैना) प० श्री रतनेश जी कानपुर

क०–सांझ समय आये दशरथ पटरानी भौन केकई कुटिल पड़ी सर्पिनी से डोलैना। भूषन उतारि पट धारे तें मलीन दीन रोष भरी सांसलेत मर्म हिय खोलैना॥ कपट कुपाठ पढी मंथरा गुरू के पास आंसू ढरकावै पर-राउनैं चिनै लेना। मानवती भामिनते पूछत विवादहेतु भूमिते उठाते रतनेश तऊ बोलैना ॥१॥

(बोलैना) पं० श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

अजब अनोखी एक तूही सुकुमारी भई देखिकै

गोपाल काहे झटपट खोलेना। तूही रूपवान गुनवान जो गुमान करे श्यामको अजान जानि करत कलोलेना॥ तू जोइतरैहै कस कान्ह इतरैहै अरीपाछे पछितैहै रंगरूप अनमोलेना। प्रेम तन तोलै है न लेत मन मोलै हैन लाल लटू देखि भटू काहे मुख बोलेना॥२॥

(बोलैना) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—बुधजन नीति ये भनत है विचारि देखु गेहको कलंकनिज मित्रहूसे खोलेना। मंत्रयंत्रतन्त्रअरु औषधि सुनीति निज कहत प्रतेक ठाम ठाम नर डोलेना॥ करि उपकार धर्म भावे नाहिं मित्र तासु दृढ़ थापि ताके बीच फेरि विष बोलेना। सभा बीच पूछे बिना बोले नाहिं बोले यदि कटुक कुढंगी अश्लील वाक्य बोलेना॥३॥

(बोलैना) पं० श्री रामयत्नजी "बाचा" कानपुर

क०—धावो धावो धावो आवो तनक लावो देर बेर बेर यशुमति चिल्लावे हठ छोड़ेना। यमुना में कूदूँ ढूँढ़ लाऊँ लाल अपने को कालीदह देखि दीडहूँ के पल डोलेना॥ ऊँची भरैं स्वांसैं ग्वाल ग्वालिनि उदासे बैठीं नयन नीर डारैं कोई नेत्र पट खोलेना। दाऊ बलि जाऊ हाहा खाऊँ कहो कान्ह मेरो कूद्यो कहाँ 'बाचा' साचा मेरे हित बोलेना॥४॥

क०—जन्महूँ से पहले मात स्तन में जो दूध दियो स्वनारमित नाम ताकैं कभी छोड़ैं ना। आशा अरु तृष्णा सब मारि जारि बैठे रहो पर

घर अमानित हो निशिदिन कभी डोलैना ।। पीयूष पवित्र पुण्य पूरित पढ़ो वा पाठ तनमन हूं से 'बाचा' विपरस बोलैना । कपटी कुकर्मी कुल कुण्ठित जनों से द्वेप अधिक बढ़ाइवेको अरुचि नैन बोलैना ।।५।।

(बोलैना) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग 'कानपुर

क०–राततै चकिया पीसैं पानी भरैं चौका करैं सबका खवावैं आपु सरबतौका घौलैना । सास औससुर की तौ लाज करना है ठीक पास औ परोसिन से घूंघट को खोलैना ।। रातदिन नंद औ जिठानी दिउरानी से दबीरहै बैठी इधरउधर डोलैना । ऐसीबहूकी कहुकदर होत आज काल गारीखाय मारीजायतौभी कछुबोलैना।।

क०–आई बहू आई बहू सबै दिल खुशी भई आई परोसिन उनहुते मुख खोलैना । जाइ गई भीतर सोइ कब्जा जमाइन् जाय फिर काहे लागी सब चीज न थथौलैना ।। धीरे २ नंदन ते गारीका सुरु करिन सास औ ससुरन तक लागी खखोलैना । ऐसी कुलच्छिन ते ईश्वर बचावै भइय्यासंइतुक की कौन कहै सपनौ में बोलैना ।।७।।

(बोलैना) पं० श्री लालमणि जी "मणीश" कानपुर

क०–वर्षारितु आई है घटा गगन में छाई सखि चपला चमकैहै पै मेरो जिय डोलैना । झमक झमक बर्षै नीर मेरे जिय उठत पीर कहा कहौं एरी वीर नैन पल्क खोलैना ।। सपने में देखे कृष्ण अजहूंना आए सखी आयकै अंधेरे कहुँ अनत टटोलैना । भनैं मणीश श्याम-सुन्दर बिन व्याकुल हैं हमारे पपीहा पिव २ शब्दबोलैना ।।

इति तृतीय समस्या पूर्ति समाप्त

(मुरारी की) पं० श्री बन्दीदीन जी वैद्य कानपुर

क०-राधा जी के गोलमाहि कृष्ण लै गोपाल झुंड गेंद खेलिबेमें निजपच्छै पच्छदारीकी। गोपन को गोपी गेरि गुलचामारि गारी की वारी को झपेटि जीति केरी निजपारी की। तारीकी औ पकरि कन्हैयै साजिनारी की झारी की औ भारीकी सजाव साजि सारी की। बन्दी-दीन मोरे मुखहसनि देखि वारीकी ऐसी गति कीन्ही राधा कृष्ण मुरारी की ॥१॥

क०-ग्वालन को रूप धारि देवता गोपालजी को झूलना झुलावैं गावैं तालदे ततारी की। झूमती डाली उन चांदनी कदम्ब न अंब राधा को झुलावैं गोपी नारि त्रिपुरारीकी॥ एक कल कृष्ण कलपावैंना किशोरी बन बोलै तापै करैं सैन साज आइ सारी की। उतै जय जयभारी किशोरीकी जयजरी बन्दीदीन जय बोलै कृसन मुरारीकी॥२॥

क०-देखे दरबार बहुवार सानदार बार जम्मति जमाति साजबाज सभाभारी की। पर कृपिणाई लखिपाई सब ठामन में सूर तिन देखो राजकता उपकारी की॥ बन्दी दीन मन में विचारि जहाँ रामलाल से संचालक जे धर्मधुर धारी की। आरथिक अस्थिती के गर्जीए अरजी कै शेवा में निवेदन करत कृष्ण मुरारी की॥३॥

(मुरारी की) पं० श्री रामकृष्ण जी 'सौरभ' कानपुर

क०-आये इतै उधौ सुनि गोपिकायें बता वह बौरी सबै भूलीं सुधि बुधि तन सारो की। खाती हती कोऊ कोऊ लरिकन खावाती हतीं उनहू बिसारी सुधि भोजन की थारी की। करती हतीं सेवा कोऊ पीतम पिया की जबैलें बन्द करि तारो वोऊ भूली सुधि तारी

की। अति ही अधीर हैके पूछैं ब्रजबाला सबै ऊधो तुम चीठी कछू लाये का मुरारी को ॥४॥

(मुरारीकी) पं० श्री विश्वनाथजी शुक्ल शास्त्री कानपुर

क०—सघन घटाओं से घिरा है नभ चारों ओर देख देख आती याद शखि बनवारी की। चपला चपल चौक चौंक चीर देतीहिय आर पार होती एक एक बूंद वारी की। कड़क गिराते वज्र मेघ तड़पाते हाय लाज कौन राखे आज दीन ब्रज नारीकी। निपट रिराश हो शरण में गई हूं रोय सर्व दुःख हारी नन्द नन्दन मुरारी की ॥५॥

(लगी रहै) पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी 'लालकवि' कानपुर

क०—सच बोलो सदा सब सो जनावो न घमंड अरु दीन्हीं विताय वयस जैसे मुरारी की। देखि द्रव्य रूप अरु सन्तति में भूलि रह्यो कीन्ही आश पूरी निज प्रेमिका दुलारी की। खोई सो खोई अब आँखें पसार देखु मस्तक नवाय शरण आजा पुरारी की। सभी कार्य होंगे पूर्ण लाल विधि बताये देत एक बार बोलो जै रामकृष्ण मुरारी की ॥६॥

(मुरारीकी) प० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

प०—जय हो मोर मुकुट बनमाला धारे श्रीवनवारी की।
जय हो लकुटी कामरिया युत सावलिया गिरधारी की।
जयहो मुरलीधर धरनी धर असुर सैन संहारी की।
जय हो राधारमण हरण दुख माधव कृष्णमुरारीकी ॥७॥

पद०—का अनमन घूमति बनबन सखि दशा बनी मनवारी की। अलकैं खुलीन पलकैं झपतीं लगी झड़ी चख वारी की॥ अधर सूख लेनी उसास गति कौन ये कंचुकि सारी की। भूत प्रेत उन्माद प्रसी या जादू लगी मुरारी की॥८॥

पद०—सत्य सत्य कहु सत्य सत्य कहु शपथ तोहिं गिरधारी की। बनी बियोगिनि योग सों काके तन मन की यह सवारी की॥ नैन मूंद के ध्यान है करती लाज न पितु महतारी की। जानि परत आनंद तुव हिय सों बसिगै छटा मुरारी की॥९॥

(मुरारीकी) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आगरा

क०—पद जलजात से लजात सतकामछवि कटिको विलोकि शोभा लज्जति गजारीकी। नाभी गम्भीर छाती विस्तृत कपाट हू से यमुना भँवर बज्रहू की शक्तिहारी की। ग्रीवा कपोल मोल राजै जहाँ कुण्डल लोल मोल लेत चेतना को सनातनरनारी की। मुख छवि कही ना जात "वाचा" कहै कौनी भाँति वन्दित पुरारी की जैवोलिये मुरारी की॥१०॥

क०—समझ में आवै नाहिं काके कर्म सेवा जाय वृषभ बिहारी याकी गरुड़ सवारी की। माधव की भक्ति या उमाधव कि शक्ति पाऊं पर्वत परचारी याकी गिरवरधारी की। गले मुण्ड माला जाके भूषित बनमाला वाके काम भस्मकारी याकी काम जन्म कारी की। जय जय उचारूँ "वाचा" सन्तन बतावो का की प्रथित पुरारी रामकृष्ण हरी मुरारी की॥११॥

(मुरारीकी) पं० श्री हीरालालजी कानपुर

का०—गरजत हैं बादल दल दुंदुभी बजायें मानो पवन झकोरे झोरे देत लाज नारी की। उतर जात बार

बार चूनर सिर ऊपरते सकुच लगत मोंहि बातै सुनत वृज नारी की। परत है फुहार झूला झूलो न सम्हार प्यारी भीजी जात कोर देखो सब्ज रंग सारी की। कहत कवि हीरा चीरा देओ न उढ़ाय लाल जाऊं बलिहारी प्यारे सांवरे मुरारी की ॥१२॥

(मुरारीकी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री कानपुर

क०—जाने कई बार तू अनेको जोनियों में जाय जन्मा मरा जन्मा मरा कितनी उहारी की। ऐसा भी न तोसों हो सका की करै कोई कर्म फेर नहि आवै जावै गोद महतारीकी। अब भी किशोर मन चेत सावधान होजा गहिले तू शरण औधेश पापहारी की। ये भी नहीं जो कर सकता है तो एक बार बोलो जय होय रामकृष्ण श्री मुरारी की ॥१३॥

क०—साजि के शृङ्गार बन झूलत हिंडोले आज देख्य हरी शोभा श्याम श्यामा प्राण प्यारी की। दोनो है किशोर दोनों योवन उमग भरे दोनों में विनोद केलि निज रे पैंग भारी की। दोनो के सुभोभित अमोल हिरदे में माल हिलुरन विलोकि बात मैंने विचारी की। मानों उर श्याम के हिलोरे लेत श्यामा अरु श्यामा उर नाचै मानौ मूरति मुरारी की॥१४

(मुरारीकी) पं० श्री महादेव प्रसाद जी कानपुर

पद—कहें राधिका प्यारी—मेरो कृष्ण मुरारी। मा सम धन्य न दूज—जो बनी कृष्ण की प्यारी। जो छबि तीन लोक में नाहीं—वह है कृष्ण मुरारी। कहैं महादेव सुन भई सज्जन—मेरो प्यारो कृष्ण मुरारी ॥

(मुरारी की) पं० श्री लक्ष्मणसिंहजी 'मणीश' कानपुर

क०—वर्षा को आवन सुहावन लगत कैसो छाई

है घटा गगन घोर असुरारी की। गर्जि नभ मंडल में चपला चमक जात जैसे भाल पूर्ण चन्द्र शोभा त्रिपुरारी की। झूलत आनंद कंद कनक सिंहासन में श्यामा श्याम शोभा होत है जैसे असुरारी की। भनत मणीश झूला झूलत है राधेसंग झांकी अनोखी बनी श्री अद्भुत मुरारी की ॥१६॥

इति चतुर्थ समस्या पूर्ति समाप्त

(झूमती डाली) पं० श्री रतनेश जी कानपुर

स०—सावन मास सुहावन मौअलि देख सबै दिगभो हरियाली। बगरी बन बागन औ नर्टनी नट खेतन में मन भावन शाली। हरे हरे अम्बर साजिके झूलत झूलन गोपिन संग बन माली। रतनेश बिलोकि सौं गीत की वृद्धि उन मलही वायू से झूमती डाली ॥

(झूमती डाली) पं० श्री विश्वनाथजी शुक्ल शास्त्री कानपुर

स०—छाई छटा शुचि सावन की मन भावन की सुधि आवत आली। डर पावत कोमल मानस है घन घोर घटा लख के नभ काली। यह दामिनि सांपिन चञ्चल है बिन श्याम भई मम काल बकाली। हूलती सी हियमेरे त्रिशूल यह सौतिन फूलती झूलती डाली॥१

सोरठा—मानव चित्त चकोर, क्यों नहि नाचै मोद में।
जब देखै चहुँ ओर, माधव मुख शशि चाँदनी ॥२॥

(झूमती डाली) पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी 'बालकवि' कानपुर

स०—पावस की ऋतु सोभा भई सखि छाई घटा

नभ मंडल काली । श्री घनश्याम गये मथुरा सों कहो बहियाँ केहिके गल डाली । कुबजा के संग जोड़िके प्रीति कियो हरि ने ब्रज मंडल खाली । भूलि रहे हरि झूलन लाल झकोरन में सखि झूमती डाली ॥४॥

(झूमती डाली) पं० श्री ब्रह्मानंद जी मिश्र कानपुर

पद०—हरे हरे तरु वन हरी लतानन हरी डोर अरु डाली । हरे वसन सखि सखा संवारे राधा संग वन माली । झूलत झूला वृन्द्रावन में फैली हरि उजियाली । हरे हरे पच्छी हरि गुन गावै हरिते झूमती डाली ॥५॥

पद—ग्रीषम वेग घट्यो पावस तें नसिगै सबै रुजाली । शांति शीतल वायु बहै निज वर्षा गौरव शाली । हरित मखमली बिछा बिछौना तिल भर भूमहिं खाली । हरी भरी सी बनी किये शृङ्गार झूमती डाली ॥६॥

पद—गरजि तरजि हिय भय उपजावैं दामिनि दमकि निराली । इन्द्र धनुष की छटा मोहिनी अरु बगुलनन की पाली । गावत गीत मल्हार रुमावन नर नारी दे ताली । बागन झूला झूलत दम्पति भार झूमती डाली ॥७॥

(झूमती डाली) पं० श्री रामरत्नजी मिश्र "वाचा" कानपुर

स०—हेजहाँ कृष्ण के साथ गई कहाँ जानमें आंवती री नही आँली । कान्ह के ध्यान में है रहती वह वाहिके ध्यान में है वनमाली । लाख शिखाय के हारचुकी धम काय चुकी नहीं छोडती चाली । देखु उनै यमुनातट में झुलना को बनावती झूमती डाली ॥८॥

स०—झूल रहे झुलना पै चढ़े हैं मुरलीवारो दोउन को सब आली । देखत ही नयने सब रूप अनूप छटा नख शीख निराली ।

राधिका ऊपर जाती कभी कभी झोंकने चलत है बनमाली
दोउन के पग चूमती है नव पुष्पन नीचे को झूमती डाली ॥९॥

(झूमती डाली) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

स०—सावन मास सुहावन है सखि आवो चलै वनमें सब आली। देखे बागबहार अपार विनोद भरी गहरी हरियाली। फूली फली नवेली लता लपटी द्रुम है किशोर निराली। दूनी घटा छहरे द्रुममें जबवायु झकोरन झूमती डाली ॥१०॥

स०—राशन कन्ट्रोल लगे सबमें मिलै नाहिं शक्कर नाज मुचाली
बम्बन के असलाल कि उधारें हि देह फिरैं सब ग्वाली।
लेकिन मैं तो कहूँगा यही कि किशोर रहैं सब रामकी चाली
वे मरजी उस ईश्वर के सों हलै नहिं वृन्तन झूमती डाली ॥११॥

(झूमती डाली) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

स०—केशर खौर लगी मुखमें झमके अलकैं अति सुन्दर काली। शोभित हैं मुक्तावलि सी अधराधर दंत की पंक्ति निराली। गोप वधूटिन संग लिये कर रासरहे वनमें वन माली। देर कहैं धुनि नूपुर की सुनि वायु झकोरन झूमती डाली ॥१२॥

इति पञ्चम समस्या समाप्ता

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(नभः) पं० श्री भागवत प्रसादजी मिश्र कानपुर

संसार सिन्धू परिशोभते सदा श्यामाङ्ग वर्णो गुण निर्गुणोऽप्यथ। विष्णो गुणानामनुकृत सुनिर्मलो दाता फलानामति सुन्दरो नभः ॥१॥

(नभः) श्री वागीश्वर प्रसाद जी वर्मा कानपुर

अपि रत्नमहानिचयं विनिवेश्य ददाति सुनां हृदयेऽधिरिहः। अभिवर्षमभिःस्फुटसाध्यघने कथमप्यकलितं प्रतिभाति नभः ॥२॥

(नभः) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

कासारेऽमलजीवनेऽम्बरतन्ताराङ्चितं सुन्दरम् सेन्दुं वीक्ष्यच विम्बितं शशिमुखी काचित्सखीं पृच्छति। जाने जातु जनार्दनस्य महिमा केनापिनालोचिता यज्जातं मम चात्र दृष्टि पदविं भूमौ सतारं नभः ॥३॥

(नभः) पं० श्री लालमणि जी "मणीश" कानपुर

अधुना समय विपरीत महा संसार कराल विकराल महा। हे नाथ हे कृष्ण यदुनाथ प्रभो आपद् बहुलकरणीय कृपा। नचान्न न वस्त्रं प्राप्त प्रभो स्ववस मरणं नरनार्य सदा। सतत भूमन भुवभार हरं विमल यशमान्च प्रकाश नभः ॥४॥

इति प्रथम संस्कृत समस्या समाप्ता

(सुन्दरः) वागीश्वर जी वर्मा कानपुर

भूतभूतहृदाकाशे शश्वत्केतनवान् हरिः। शोभते पुरुषाकारः सर्वप्रकृतिसुन्दरः ॥१॥

(सुन्दरः) पं० श्री काशीप्रसादजी अवस्थी कानपुर

नन्दीश्वरोपरि विराजित शंभु शंकरः। ऐरावतोपरि यथा शुशुभे पुरन्दरः। नागारि पृष्ठ गत चक्रधरो यथा तथा प्राचीदिशोपरि नवोदित चन्द्र सुन्दरः ॥२॥

(सुन्दरः) पं० श्री विश्वनाथजी शुक्ल शास्त्री कानपुर

अनन्त जीव सङ्कुले विलोक तुङ्ग वीचिभिर्भया

वहे प्रचण्ड वायुघूर्णिते भवाम्बुधौ । निराश्रयं स्वकर्म दाम बद्ध पाप विग्रहं स्वनन्त्रमाशु दुःखिनम्प्रपातु सर्व सुन्दरः ॥३॥

(सुन्दरः) पं० श्री रामयन्त्रजी मिश्र "बाचा" आरा

बालो बालपतङ्ग शोभनमुखो रामो जगद्रक्षको विश्वामित्रसमो जगाम समुखो यज्ञं मुदा रक्षितुम । मारीचश्च सुबाहुकं रणमुखे हत्वा बलंरक्षसाम् सज्यं चापिचकार शङ्करधनुर्लोकोत्तरस्सुन्दरः ॥४॥

"बाचा" वै नवनील नरिदवपुः पीताम्बरः शर्म्मदो गोपीनां नवनीत चोरण पटुर्वंशी निनादव्रतः । सक्तान्पालयतीह कालयति यो गोविप्रसन्धि-द्धतान सो भूयाज्जगताहिताय सततं दामोदरस्सुन्दरः ॥५॥

(सुन्दरः) पं० श्री देवनारायणजी अवस्थी कानपुर

यद्रूपन्तु विलोक्य शेषवरुणौ सम्मोहितौ शाम्भवी दृष्ट्वा कान्तियुतं प्रसन्नवदनं प्रेमाकुलाशारदा । मोहन्ते-न्यचराचरा सुरनरा श्रीनारद शङ्करौ पृथ्वी व्योमरसा तलातल प्लुताः कोजायते सुन्दरः ॥६॥

(सुन्दरः) पं० श्री लालमणिजी मर्गाग कानपुर

द्वारावत्यां गतः कृष्णो व्यतीयुश्चषट् मासिकः । समागताचतुवर्षा नभः परम सुन्दरः ॥७॥

(सुन्दरः) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

समस्त सुंदरेषु यः प्रगण्यतेति सुंदरो रतेः पतिः सकृष्णहेप्युवाच नास्मि सुन्दरः । तदान्य सुन्दरेषुभा-मनां करोमि किम् नदृश्यतेऽथ कुत्रचित् भवादृशो नृ सुन्दरः ॥८॥ इति

अथ वर्षाऋतु विषय की स्वतन्त्र कविता

(वर्षा) श्री डा० वागीश्वर प्रसादजी वर्मा कानपुर

पद—पुलकित करि प्राण कमल सर्व प्राणि वर्गन में। लक्ष्मी निज राज रही ऐरावत वृन्दन में। शीतल शुभ शान्ति कर दिन हरणि ताप तामसखन। पवन रूप पालन अति स्वान्तः प्रसादिनी॥ आह अहो०॥

(वर्षा) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—सावन सुहावन विदेश तिन आये मन भावन संदेश केरी पातिहून दीनी है। कोयल समान कूकि कूकि उठी मोर सम नाचि नाचि आंसुन की झड़ी लगी पीनी है। झुलसे जवास सम आली सब अंग शोभ वदन मलीन घटा छाइ, युति छीनी है। आनन्द विहीन मन विद्युत समान डोलै मार मारि मारि दशा पावस की कीनी है॥२॥

(वर्षा) पं० श्रीहीरालालजी कानपुर

क०—छाई हरियाली चलो झूलिबे को प्यारी कहूँ पहिर तन सारी ओढ़ चूनरी हरी हरी। हरित मणियों से जड़ा डाल के हिंडोला कहीं रेशम की डोर जामें लगी हो हरी हरी। ब्रज के विहारी गिरधारी के बगीचा बीच छाइ है रंगीली वेल सुन्दर हरी हरी। हीरा कहैं झूलिये वही न चलो राधे प्यारी जहां नित देखूँ उत दीखे व हरी हरी॥३॥

(वर्षा) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

धुन०—तड़ तड़ तनड़ गहर घर घर कर घुमि घुमि गगन सघन घन बरसैं। कड़ कड़ ककड़ ककड़ कर विद्युत चमकि २ विरहिन मन करसैं। सननन सनन पवन वह निसदिन मदन झड़प झड़ तन तन सरसैं। धनि धनि इनहि सजन संग वन वन विहरत फिरहिं किशोर मन हरसैं॥४॥

(वर्षा) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

धुन०—उमड़ि घुमड़ि घन गरज गरज घेर फेर फेर आवत अकाश उड़ उड़कै। निशि अँधियारी कारी बिजुली चमक जोर मोर की कुहुक

सुनि मोर मन कुड़कै। पवन झकोर संग मदनमरोर रयो करै झकझोर जोर पोर पोर फड़कै। बिन बरसात मोहि कछू न सुहात यह कौन बरसात साज लाई गड़ गड़कै ॥८॥

इति वर्षाऋतु प्रथम कविता पूर्ति समाप्त

(कवि शक्ति) पं० श्री वागीश्वर जी वर्मा कानपुर

क०—आज जयन्ती है तुलसी की मित्रो सुनिये कान लगाय, रामायण की कथा जिन्होंने भरि रुचि कविता रची बनाय। बड़े बड़े भावों की जिसमें महिमा गहगह लेत उफान। महा गहन सागर में मानो नाचत पर्वत गज महान। नाचत बन रूप कैलासी शंकर शब्द रहे घहनाय। शब्द शब्द में सीतापति की भक्ति भावना रहे बढ़ाय। जयतु जयंती तुलसिदास की जय हो जय हो सीताराम। जय हो कविकुल तारागण में शरद्‌बुंद ज्यों अभिराम। प्यारे कविजन काव्यकल्प कैसे हो सुमन समेत लगाय। क्या है शक्ति तुम्हारी देखो शीम तुलसीदास बनाय। षड्‌रस शोभा अमृत सिंधु है प्रकृति सुन्दरी परम निधान। हैं जहँ आदि रूप नारायण शयन समाधि लिये भगवान। कवियों का उर भी सागर है जो है नवरस सुन्दर धाम। काव्य भगवती भक्ति भगवती का है पारस हरे राम ॥१॥

दो०—जे जन प्रेम उमंग भरि देत कविन को मान।
तिन कर कीरति कौमुदी बाढ़त चन्द्र लपान ॥२॥

(कवि शक्ति) पं० श्री पद्मेशजी अवस्थी कानपुर

क०—छत्र पतियों के छत्र छण में विनष्ट होवें पूँजी पतियों का तो दिवाला ही निकल जाय। इन्द्र और वरुण कुबेर का मिटा दे मान तारे टूट जाँय और अम्बर भी हिल जाय। उथल पुथल मच जाये पहुमी में शीघ्र कम्पजाये दिग्गज औ शेष भी विचल जाय। रज होय मंदर समन्दर लौं सूखि जाय शक्तिशाली लेखनी कवि की कहीं चल जाय ॥३

(कवि शक्ति) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र "आनन्द" कानपुर

क०—शारदा भवानी वरदानी के सपूत कवि नव रस सजीव नाचै

खड़े जामुवानी में। कुन्न बनात मृग सृजन उद्धार करते सन्तति प्रदान करने वाँकन भी गानी में। पानी में लगाते आग करते अग्नि शांत रूप रोते को हँसाते एक हास्य की कहानी में। आनन्द से कवित केर आदर करै न जौन डूब मरैं उल्लू वह चुल्लू भरे पानी में ॥४॥

कु०—कवि विधि ते सब विधि बड़े नवरस जिनके पास। पटरस विधि की सृष्टि में जड़वन नहिं उल्लास। जड़वन नहिं उल्लास जीव नहिं मारि जियाते। कवि की देखो शक्ति मृतक यों प्राण उपजाते। कहें 'ब्रह्मानन्द मिश्र' कविन वानी सो रिधि सिधि। योगिन की उक्ति शक्ति सों मिलती कवि विधि ॥५॥

(कवि शक्ति) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर।

क०—रविहि उठाके कवि भूतल पै लावैं उसे भूपों के प्रताप माँहि जोड़त सयुक्ति हैं। चन्द्रो विचारे को तिरियन मुखलेप रहैं हम मृग कीरन पै पूरा अनुरक्ति है। कामदेव की तो छीछालेदर हमेसा करैं लज्जित करि अपनी दिखावत विरक्ति है। हरि को भी लायके बिठाय देत नीच घर भाख्यों किशोर ऐसी कवियन की शक्ति है ॥६॥

इति द्वितीय स्वतन्त्र कविता समाप्त

सं० २००२ अधिक मास प्रथम चैत्र शुक्ल ७ मंगलवार को विशेष कवि सम्मेलन हुआ

सभापति—पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा। आप मैथिल ब्राह्मण हैं संस्कृत के सुयोग्य विद्वान हैं। आपकी संस्कृत एवं हिंदी की कविताएं अत्यन्त सारगर्भित हृदयग्राही होती हैं। आप कूट रचना में भी प्रशंसनीय ज्ञान रखते हैं।

हिंदी समस्या-(१) राम बोला की। (२) विनय पत्रिका। (३) पवि नहीं परहोत त्रिताप।

संस्कृत समस्या -तरुणायते।

विषय-(१) पुरुषोत्तम। (२) शृङ्गार राधाकृष्ण।

(राम बोला की) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—नारद सिहान शेष शारद सकात लखि मति सकरात पेखि शंभू शिव भोला की। यद्यपि अगस्त्य औ वसिष्ठ बालमीक आदि रचि रामायण शुद्धि कीन बहु चोला की। लेकिन किशोर कोई समता न पाई वैसी केतिक कवींद्रन ने भरसक रटोला की। जैसे रचि रचना तुलसी जग को उद्धार कियो जाहिर जहान राम भक्ति राम बोला की ॥१॥

(राम बोला की) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

का०—जन्मते ही तात मात परिजन पुरजन से त्यक्त होके हरि पुर में बालकेलि अनमोला की। गिरिजा गिरीश की गिराकोमान खान पान देके दयनीय बाल पालन भलि भोलाकी। नरहरि दया सेसर्व गुणगण गरिष्ठ होय देखि वातजातराम सफल निज चोला की। देश औ विदेश॰ "वाचा" दिग और दिगन्त बीच विचरति सदा है स्वच्छ भक्ति राम बोला की ॥२॥

क०—गणिका पढ़ा के कीर पुत्ररटि अजामिल गीध गति पाई "वाचा" साहस अनडोला की। केवट चरण धोय दुखड़ा मुकंठ गाय शरण विभीषण होय सेवा अनमोला की। लक्ष्मण जँह तँह कोपि अंगद पद सभा में रोपि बात जात संगर में पौरुष अनतोला की। ए सब भये तो क्या भये हैं भूमि भारत में मुक्ति है मारीच की जो भक्ति राम बोला की ॥३॥

(राम बोला की) पं० श्री लालमणि जी पाठक 'मणीश' कानपुर

क०—भक्ति कीन्ही जैसी प्रह्लाद औ ध्रुवजी ने

ध्यान प्रभु कीन्हे व पवित्र करिन चोला को। भक्ति ही के कारन शिवरी औ गीध तरे वीन वीन बेर देत डारत प्रभु झोला की। भक्ति श्री राम जी की करी शिव शंकर ने राम ने कीन्ही अटल भक्ति हू बम भोला की। भनत 'मणीश' राम भक्ती जो करै कोऊ जगत सराहत सब भक्त राम बोला की ॥४॥

(राम बोला की) पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी कानपुर

क०—नारी उपदेश ते विराग ज्ञान जाको भयो सैयापैन आनेकी प्रतिज्ञा किया चोला की। ताही के दरश काज काशी हम गए आज भौन भौन पूंछि फिरे पुरी बम भोला की। लाल कवि बखानै पुनि मथुरा पयानै कीन ढूढि नहि पायों शरण लीन्ही तब खटोला की। आये फिर कानपुर श्री राम कृष्ण मंदिर में हो गये कृतार्थ मूर्ति देखि बम बोला की ॥५॥

(रामबोला का) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—पूर्व बहु जन्मन की पुण्य जो एकत्र होय होय संस्कार क्रिया शुद्ध जवै चोला की। देव गुरु कृपा होवै भारती सजायें कंठ विद्या ते व संगति हो सिद्ध संत टोला की। सेवा सिद्ध पुरुषों की हनोमान इष्ट होय मिलै जो प्रसादी सिद्ध नाथ सिव भोला की। आगम निगम मांहि बुद्धि का प्रवेश होय पावै तब आनन्द सुभक्ति राम बोला की ॥६॥ इति

(विनय पत्रिका) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

पद०–यह असार संसार सकल जग जानत नीके। होना इससे पार कठिन येहु मानत ठीके। लोकन परि-भ्रम जाल मोह में ऐसे जकड़े। भर सक छूटन चहैं छूटैं नहिं माया पकड़े। कह किशोर छूटन चहहु मानहु मोर ये फकि का। माया पति हरि को भजहु पढ़ि २ सुवि-नय पत्रिका ॥१॥

(विनय पत्रिका) पं० श्री रामचन्द्रजी "वाचा" कानपुर

क० कठिन कुपन्थ में कभी न जाने देती यह निग-ड़ित चरण करने की यह यन्त्रिका। दुर्लभमनोरथ पुराती अति शीघ्रता सेसिद्ध विद्या करसमसुसिद्ध भागमंत्रिका। तमतोम तुरत तरेरि तारिवेको "वाचा" ज्योतिसम दि-गन्त में लखाती यह अत्रिका। हुलसी के गर्भ से जनम पाये तुलसीका शर्वमयशर्वदा सुहाती विनय पत्रिका ॥२॥

क०—कौन पहुँचाती है महीप ढिग शीघ्रता से देखत नहीं हो नित्य चलति गगन यन्त्रिका। ईश को बुलाके कौन मौन हो जपो जो आप द्वादश वा षडक्षर सुआसन बैठि मन्त्रिका। शक्ति कौन देती कितनी है जगतीतल में उत्साह तंत्र औ प्रभावमय मंत्रिका। "वाचा" जो कि जाना पहिचाना क्या जनम पाय यह सब जाना जो विजाना विनय पत्रिका ॥३॥

(विनय पत्रिका) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

कु०–विनय पत्रिका विनय युत राम भक्ति का ग्रंथ। भेरा विद्वता ते अगम मधुर सरल हरि पंथ। मधुर सरल हरि पंथ चलत जेहि मिलत परम फल। पाप

ताप मिटि जात रामजी निवसत हिय थल। कहे ब्रह्मनंद मिश्र मनहु निग्रह को यन्त्रिका। भक्त जनन को कल्प वृक्ष सम विनय पत्रिका ॥४॥

(विनय पत्रिका) पं० श्री शम्भूनाथजी कानपुर

क०—जैसी विनै सूरदास कीन्ही कृष्ण चन्द्र की तैसी विनै स्वामी रचि कीन्ही विनय पत्रिका। जैसे पद गायन में बनाए श्री स्वामी ने तैसे गुसाईं की अद्भुत विनय पत्रिका। नख से शिखा पर्यन्त रचना सूर जी की तैसही सीताराम श्रृङ्गार विनय पत्रिका। भनै द्विज शंभू सूर स्वामी पद्य गाथा सुभ तैसेही बनाई। गुसाईं विनय पत्रिका ॥५॥

इति द्वितीय समस्या समाप्ता

(पावै नहिं पर होत मिलाप) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

स०—का कहूं ब्रज की जू दशा जुलखी निज नैनन ते चुप चाप तेरोइ ध्यान धरैं सखियाँ सब भूली फिरैं करती है विलाप। केतिक ऐसीहु दीख परी जु "किशोर" विलोकि लियो हम भाँप। वो स्वप्न में आपसे रोज मिलैं चहै पावैं नहीं पर होत मिलाप ॥१॥

(पावैं नहिं परहोत मिलाप) पं० श्रीरामयत्नजी मिश्र "चाचा" कानपुर

स०—थल को थल पाय सकेगा नहीं शिर राखि लखे अनिम्बच्छ गिलाफ। नहीं तेज को तेज भी पाय सके अति ध्यान करे चहे औ दिखिदाफ। जलको जल खोजा

करे हसिं के नहीं पावे करे बहुवार विलाप। त्यों ईशको ईशभी जानो सखे कहीं पावे नहीं परहोय मिलाप ॥२॥

(पावै नहीं पर होत मिलाप) पं० श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

प०—वारिधि मथ्यो देवासुर आप। निकसी लक्ष्मी लेगे बाप। जब हिं हलाहल निकस्यो आन। शंकर जी फिर करिगे पान। अमृत घट जब निकल्यो आय। देवासुर सब गये हर्षाय। अमृत पान होन जब लाग। दैत्य एक वहै उठिके भाग। सूर्य चन्द्र विच बैठो जाय। उन राक्षस का दीन्ह बताय। चन्द्र अमित पर करि संताप पावैं नहीं पर होत मिलाप ॥३॥

(पावै नहीं पर होत मिलाप) पं० श्री चन्द्रीदीनजी वैद्य कानपुर

स०—आवत श्याम ललीकेरे गेह में बांसुरी को करिराग अलाप। औचक मूंदिलई अखियान को छोड़ौ हटौ कहि कोटि कलाप। प्रेम दुहू दिशि को लखिगोदिन पीटि ढ़िढ़ोलो मचाय प्रलाप। धावत है गहिबे को तिन्है कयौं पावै नहि पर होत मिलाप ॥४॥

(पावै नहीं पर होत मिलाप) पं० श्री रामगोपालजी भट्ट कानपुर

स०—सब साजि शिंगार सुहावन सेज पै पोढ़ि गई करिकै संताप। पियप्यारे अजौं लगि आये नहीं यह सोच हिये मह होत प्रलाप। पुनि सोचत सोय गई सजनी औ गोपाल को ध्यान धरैं करैं जाप। सपनेमह श्यामसो कोल करैं कुछ पावैं नहीं परहोत मिलाप ॥५॥

(पावैं नहीं पर होत मिलाप) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—आगम निगम इतिहास औ पुराण सब जीव ब्रह्म एकता की करते मधुर अलाप। माया अरु ब्रह्म मयी भाषत जगत सब प्रथक न कोई ब्रह्म सत्ता का अहैं प्रताप। शुद्ध ज्ञान ध्यानहू से अनुभव लखाय परे सब सत्य भाशता है शक्ति ज्योति रूप आप। ताहू पै न इंद्रिन से गृथो जात रम्यो राम स्वप्न ही सा पाता नहिं होतापर है मिलाप ॥६॥

इति तृतीय समस्या समाप्ता

अथ संस्कृत समस्या पूर्तयः

(तरुणायते) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

पश्यानंग प्रभावोयं यद्वशोंगी तदिंगतिः।
तरुणीमंगनां दृष्ट्वा वृद्धोऽपि तरुणायते ॥१॥
पुराणैः पठितः पूर्वं पुराणेषु निगद्यते।
जीवे ज्ञेयं पुराणोऽपि देहीसंस्तरुणायते ॥२॥

(तरुणायते) पं० श्रीरामयत्न जी मिश्र 'वाचा' कानपुर

अनवद्दानशीलस्य कीर्त्तिवच्चमनस्विनः।
प्रत्यहं पाठशीलस्य विद्या हि तरुणायते ॥३॥
लक्ष्मणं गच्छ कल्याणि सभार्योऽहं विचारय।
अलङ्करिष्णुस्सम्भूयात्तारुण्यं तरुणायते ॥४॥

(तरुणायते) पं० श्री लालमणि जी 'मणीश' कानपुर

पुत्रौ द्वौ ज्ञान वैराग्यौ जीर्णं क्षीण कलेवरौ।
कृष्णा जन्म ब्रजे भूत्वा ह्युभौ द्वौ तरुणायते ॥५॥

(तरुणायते) पं० श्री कामेश्वरजी झा शास्त्री कानपुर

यथा राधिकयासार्द्धं श्रीकृष्णस्तरुणायते।
तथा तुलसिदासस्य सत्कीर्तिस्तरुणायते ॥५॥

(तरुणायते) पं० श्री मुकुन्दलाल जी शास्त्री कानपुर

सर्वशास्त्रं समालोच्य निश्चितन्निजमानसे। भक्ति ज्ञान विरागाभ्याम् श्रीकृष्णे तरुणायते ॥६॥ इति

अथ स्वतन्त्र कविता

(पुरुषोत्तम) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

कु०—अति उदार करतार सबन के पार करैया। मत कोऊ घबड़ाय भजहु श्रीकृष्ण कन्हैया। वहि सबके आधार दुःख दारिद्र हरैया। अशरण शरण सहाय सभी कलमष विनशैया। कह कवि किशोर लख लेहु किन है मलमास उदाहरन। खुद आपहि हे पुरुषोत्तम करत सबहि तारन तरन ॥१॥

(परषोत्तम) प० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—हुआ है न होगा न है परम प्रतापी कोय चक्रवर्ती तीनों लोक माँहि रघुवीर सम। जाको ये नवाते शीश देव दैत्य राक्षसादि ऋषि मुनि ध्याते खड़े बाँधे हाथ इन्द्र यम। विद्या गुण कर्म राजनीति दया धर्म शांति क्षमा के स्वरूप रहे सूरवीर निरभ्रम। एक नारि वृत धारि दैत्यन संहारि रामचन्द्र ही कहाये एक मात्र पुरुषोत्तम ॥२॥

क०—तिथिन की वृद्धि क्षय होने त्रयवर्ष माँहि मासों में निकृष्ट मलमास एक माना है। होते न सकाम कर्म संस्कार यज्ञ आदि एक हरि भक्ति ही को माहात्म्य बखाना है। मास भरि न्हाय सुरसरि कथा श्रवण करै पूजे तुलसी व विष्णु धारै संतबाना है। नातोरहै ब्रह्मानन्द माँहि ध्यान ज्ञानयुत पाय पुरुषोत्तम जो जीवन बनाना है ॥३॥

क०—विप्र गुरु संत [illegible] की सेवा करै अन्न वस्त्र जलदान मुख्यव्रत ठाना है। नित्य ही दुहारै [illegible] केशव न [illegible] न देय यदि

हियतम अज्ञता नसाना है। इन्द्रिन बटोरि टोरि ममता सुदेह गेह केरी हरि मांहि तीसों दिनन लगाना है। ब्रह्मानन्द सीताराम सीताराम जपे नित्य मास पुरुषोत्तम का यही तो विधाना है ॥४॥ इति

(शृङ्गार राधाकृष्ण) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—तेरे शिर मोरके पखौवा को मुकुट राजै मेरे शिर चन्द्रिका सुचन्द्रिका लजावनी। तेरे अंग पटुका पितम्बर की जो नोखी छटा तो मेरे अंग सारी अमोल मन भावनी। तेरे तन भूषण जे मेरे तन भूषण की अजब अनोखी ही किशोर शोभा बनी। तेरी और मेरी कैसे सरबर हो सकत श्यामा कहाँ रैनकारी कहाँ चाँदनी सुहावनी ॥१॥

(शृङ्गार राधाकृष्ण) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—हिय सदन माँहि कनक सिंहासन पै श्यामा श्याम युगुल को लायके बिठाऊँ मैं। देखूँ पद कंजन के नखन की भव्य ज्योति नूपुर अरु पायल की ध्वनि मन लाऊँ मैं। पीत पट नीली सारी तापै किंकिणी ललाम सजे मुरली की नाद सुनि वार जाऊँ मैं। सीस सोहैं मुकुट चन्द्रिका विशाल अति अंग अग भूषण विलोकि रीझ जाऊँ मैं ॥२॥

क०—दोऊ चन्द्रानन के नाक में बुलाक सोहै श्याम केश आनन की शोभा बढ़ावते। कानन कनक फूल चूमत कपोल हिलि डाले गल बहियाँ कोटि मैनको लजावते। देखे कनखैया पान खात मुसकैया देखि मोहे सुर नारद जू कीर्ति गुण गावते। "आनन्द" मगन सुधि बुधि हू भुलाय दई झाँकी झाँकि झुकि झुकि आपै न समावते ॥३॥

(फुटकर) पं० श्री अम्बिकाप्रसाद जी त्रिपाठी कानपुर

दोहा—भाषा में अद्वैत है रामायण प्रिय पंथ।
इसके सानी आज कल नहीं दूसरा ग्रंथ ॥४॥

स०—सत वस्तु लई निगमागम से भरदी दोहा चौपाइन में।
किये युक्ति नवीन प्रकासित है नहि कीर्ति सकू कर गायन में।
भ्रम के बस आपु गँवाय रहे नहिं है कुछु सार बड़ायन में।
परखो सब वस्तु तेरा हित है तुलसी कवि की रामायण में ॥५॥

इति द्वितीय समस्या समाप्त

अथ सं० २००३ की समस्यापूर्ति संग्रह

श्रावण शुक्ल ७ रविवार को कवि सम्मेलन हुआ

सभापति—पं० श्री रामचन्द्र जी वाजपेयी*
जनरलगंज, कानपुर।

हिंदी समस्याएँ—(१) फेकदई चादर उतार आसमानते। (२) कन्हैया की। (३) गुलामी में। (४) मुसक्यान की। (५) जुन्हाई में नहाई सी। (६) बुत्तू।

संस्कृत समस्यायें—किममृतम् (२) गतानवागतः।

विषय स्वतंत्र-(१) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी। (२) बसुन्धरा।

(फेक दई चादर उतार आसमानते) पं० श्री रामचन्द्रजी वाजपेयी कानपुर

क०-उमड़्यो उछाह रास रचिवो ब्रजाङ्गना हिय धीरज ना धरैं पीर बाढ़ी जिय जानते। एरी सखी कैसी करूं पावस अन्धेरी रैनकाम ना सरैगो नेक चपला चपलानते। कारज सवाँरिवे को प्रीतम हिय प्रीतिलागी चांदनी बगारिवे को मधुर मुसक्यान ते। चार मास पावस की 'श्याम' घनघोरकारी फेकदई चादर उतार आसमानते ॥१

---

*आपका विद्या वैभव प्रकाश दिगन्तव्यापी है अर्थात सर्व देशदेशान्तरों के कर्म काण्ड यज्ञादि प्रतिष्ठा कार्यों में आचार्य पदारोहणाग्रगण्य आपही होते हैं। आप सभी शास्त्रों में पाराङ्गत हैं। इस देश में आपके सदृश अन्य कर्मठ कोइ नहीं है। चारों वेदों के शाखाओं की पूर्ण शिक्षा का अपरिमित ज्ञान आप में ओत प्रोत है। आप वैदिक पाठशाला स्थापन कर ब्रह्मचारियों को नित्य वेदाध्ययन कराते हैं। आप के दिव्य दर्शन से भवसतप्त जीवों को शान्ति मिल जाती है। आप प्रसन्न मुख इस युग के महर्षि हैं। आपका सेवक—मुद्रक

(फेंकदई चादर उतार आसमानते) पं० श्री प्रेमनन्दन द्विवेदी कानपुर

क०—कालिन्दी कूल कदम्बतरु नरें कान्ह की मुरली बजी कुछु ऐसी आन वानते। देव नर मुनि गन्धर्व सबै मोहि गये खोयेसे धाये रोकि प्रानऔ अपानते। श्रीराधे घनश्याम संग लाजे कोटि रति अनंग माधुरी बखेर चली लता वितानते। बाँधवे सोमाधुरी भई प्रकृति बावरी चन्द्रिका की फेंक दई चादर उतारि आसमानते ॥२॥

(फेंकदई चादर उतार आसमानते) पं० श्री रत्नगभजी तैलङ्ग कानपुर

क०—कच्छुप के लोमन ते बनायो कंबल एक दोनो उड़ाय शशक श्रृंग देख ध्यानते। औसर पाय सूरज हू शीतल भये देर चंद्र भये तप्त अति तुषार के स्नानते। बावरी वसुंधरा कै कर्न लगी हाय खाय श्वान दवन लगे बिलार के सद् ज्ञानते। काल को वितिक्रम देख अरुंधतीने शीघ्र फेंक दई चादर उतार आशमान ते ॥३॥

(फेंकदईचादरउतारआसमानते) पं० श्री काशीप्रसादजी अवस्थी कानपुर

क०—कलित कलिंद जाके निकट जाय वंशीवट मुरली बजाई मधुर स्वरतान ते। कानपरी जवै धुनि सबै ब्रजवालन के धाई धाम काम तजि भरी अति सानते। शिव चतुरानन विमानन में मोदभरे केलि रस देखन हेतु चले सुखमान ते। पुष्प बरसावैं दरसावैं शुभअंजुलिलै फेक दई चादर उतार आसमानते ॥४॥

क०—उतरि विमान सुर छाये लोक लोकन ते देववधू नाचती तरंग भरी तानते। काशी रामजन्म सुनि मोद उरधारि अति सुकृत सरा है

अवधेश सुखमान ते। टेरमुनि धाये गाभूमि द्विज काज प्रभु भक्त न उबारि दुष्ट कीन्हो विनप्राण ते। उमंगि उमंग सुधिभूली है सुअंग सबै फेंक दई चादर उतार आसमानते ॥५॥

(फेकदई चादर उतार आसमानते) पं० श्री चन्द्रीदीनजी वैद्य कानपुर

क०-जोन्हाई मे नहाईसी नवेली मुसक्यान की कान्हैया की गुलामी में सदा रहै सानते। राधा मुख जोय कहैं वृत्त तुमसीन कोय आजुते विलोकयो जो बताती कवौ कानते। भरम गवाई सरमाई ना बतात नेक तू है रस बोरीगोरी कृष्णो लखुध्यानते। ऐसी उतरानी फारिबादर समानी तापै फेंकि दई चादरि उतारि आसमानते ॥६॥

(फेकदई चादर उतार आसमानते) पं० श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

क०-रावन भयावन सो सीयके चोरावन को निज गति पायनको कीन्हो प्रणप्रानते। यतीरूप आवन आय अलख जगावत लैगोदी उठावत वैठावत विमान ते। धावत गोपाल हाल गृद्ध युद्ध जीत्यो जब सिय अकुलानी बिलखानी जिय जानते। बैठे सुगरीव देखिराम केचिन्हारी हेत फेकदई चादर उतारि आसमानते ॥७॥

(फेकदई चादर उतार आसमानते पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी कानपुर

क०-सुर्पनषा रोदति बदति आई बहुत भांत वैठो जहँ रावण सभा बीच सान ते। सुनि सब कथा उठि आयो दंडक बन माहिं हरि लीन्हों सिय को फिर भागा अभिमानते। परबस परी बिलखान बहुत भांतिन

ते राम राम रटत जात ऊपर विमानते। ताही समय गिरि पर निहारि कपि पतिहिं लाल फेक दई चादर उतार आसमानते ॥८॥

(फेकदईचादरउतारआसमानते) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी तैलङ्ग कानपुर

क०—ना तो ये भगीरथ की अमल तपस्या सिद्धि विस्तृत भई हैं जग तारन के ध्यान तें। और ना मचल के हिमाचल के गोद से ही भई है प्रवाहित जल धार पारवानते। कहत किशोर यह मेरे अनुमानते तो होकर निहंग वही शिवकी जटानते। नग्नजान गंगको संकोच वश चंद्रमा ने फेक दई चादर उतार आसमान ते ॥९॥

क०—प्रबल प्रचंड चंड रश्मि की अवाई जान चुहुक उठे पंछी चोपदार चौदिशान तें। नखत लुकाने निशि नाथ हू सका ने तब तुरत पयाने दिशि पच्छिम मलानतें। निडर 'किशोर' लै मयंकको सप्रेम गोद करतीथी विहार जामिनी जो मन मानतें। जानिके वियोग निज नाथ को सभीत होके फेंक दई चादर उतार आसमानतें ॥१०॥

(फेकदईचादरउतारआसमानते) पं० श्रीलालमणिजी "मणीश" कानपुर

क०—कपटी मृग देख सीता कहैं लगी स्वामीसे सुवर्ण मृग छाला लै आवो मारसान से। ताही समय यती बेष धारि लंकेश तहां सीताके हरणहेत आया शानबान से। जानकर अकेली भिच्छा माँगन तहाँ गयो झपट हांथ पकरिचढ़ धायो यान से। भनत मणीश सीता रोवत है राम राम फेंक दई चादर उतार आसमान तें ॥११॥

(फेकदईचादरउतारआसमानते) पं० श्रीरामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—कौरव करण कूर शकुनी कपट पूर बैठे थे

सभाद्यूत विजय गुमानते। लावो द्रौपदीको निकट निधन दुर्योधन वोला "वाचा" सुनि कुशाशन दुःशान चलामान ते। करकश करोंसे केश कोपिके करेरेकर्षि कृष्णाको लै आया साड़ी खीचत अभिमानते। कृष्ण द्रौपदी के हेतु सभाकरी सारीर फेकदई चादर उतार आसमान ते ॥१२

क०—कृष्णा रचित सन्व्याजानि कौशिक सम हर्षमानि आनि जयद्रथ कुरुपति बोला।अभिमानते। आओ मित्र देखो आज पारथ पुरुषारथ धारे ग्वाल शिष्यअस्त होत जातेनिज ज्ञानते। मुनिके बहु जल्पना हटाते "वाचा" कल्पना को कृष्ण कहें अर्जुन सजग होजा धनुवानते दुष्ट के निधन हेतु भक्त प्रणराखिवे को फेकदई चादर उतार आसमानते ॥१३॥

क०—कोई नव वाला आला सोरह शृंगार किये खोजति नन्दलाला माला लिये बहुमानते। घूंघट पटडारे द्वारे खड़ी र देखे राह ओढ़े लीनी चादर जड़े तारे भासमानते। सुरगुरुसम सिन्दुर तहाँ इङ्गुर भूमि नन्दन सम टिकुली भृगुनन्दन समकेश गगन जानते। "वाचा" मुखचन्द्र तब आय हरि प्रकट्यो जब फेकदई चादर उतार आसमानते ॥१४॥

(फेकदईचादर उतारआसमानते)पं०श्रीब्रह्मानन्दजीमिश्र"आनन्द"कानपुर

क०—वरषा सिंगार करि चली है मिलन आली शरदते वाके भौन बड़ी अरमानतें। फूले फले जीवन गरूर भरी सारी हरी स्वैतधार मुक्ता हार फूल वे प्रमानते। इन्द्रधनु स्वौरिशीस अरुणाई माँग भरे वादर की चादर है ओढ़े कड़े मानते। आनन्दतें दोऊ सखि लागी जब भेटन तो फेक दई चादर उतारि आसमानते ॥१५

इति प्रथम समस्या समाप्त

(कन्हैया की) पं० श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

क०-महर यसोदा प्रात उठि कै लै माठ बैठी ग्वालिनै गोहारो जौन गोकुल बसैया की। आवोरी आवो सवरी मोसन बताओ आन राखो जनि गोय तोंय सौंह तेरे भैयाकी। मोहितौ गोपाल मेरो प्राणन सो प्यारो अति वारौ तीन लोक जौन ममता है मैया की। माखन के वदलेतू दूनो चौगुनो लैलेरी कोस मत गारी देय कुंवर कन्हैयाकी ॥१॥

(कन्हैया की) पं० श्री गुरुवर शरणजी कानपुर

क०-कोटि कोटि काम छविवारो श्याम याद करि जय जय उच्चारति वाँसुरी वजैय्या की। घूमि घूमि बृन्दावन कालिन्दी कदम तीर हिय हरषाय भेटि गिरि के उठय्या की। संतन समाज वैठि लोकलाज तजि मीरा आठो याम ध्यावति पिता कर गहैय्या की। श्याम अंग साँवलो सलोनो मोर पंखवारो सहज स्वभाव प्रेम पागति कन्हैय्या की ॥२॥

(कन्हैया की) पं० श्री बाबूलालजी त्रिवेदी कानपुर

क०-मुकुटभलक अरु कुटिल अलक नीकी लोचन की पलक नीकी भक्त दुख सुनैया की। कुंडल हलक अरु भाल पै तिलक नीकी मद २ हसन नीकी रहस करैया की। केहरि कमर अरु पटुका फहर नीकी सोभा अपार नीकी अद्भुत खेलैया की। पगन की पैजनी

अरु मुरली बजन नीकी लाल कवि छवि नीकी नन्द के कन्हैया की ॥३॥

(कन्हैया की) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

क०–काहू को तो आश होत प्रिय परिवार की तो काहू को होत अपने सगे बाप भय्या की। काहू आश होत जर जमीन जेवर की तो काहू को आश होत बहुत रुपैया की। कोऊ तो किशोर मदमाते रहैं स्वामिनते राते रहैं रंगमे सुराजा रजबैया की। मुक्ति के दिवैया भव फंदन नसैया भय्या मेरे को नो एक आश कुंवर कन्हैया की ॥४॥

क०—फेकदई चादर उतार आत्मसानते ज्यों तैर्मागति होरही है चंद के जुन्हैया की। उसमें नहाई मी अनेक गोपिकायें आज बुत्त बनी घूमती न सुत्तबाप मैया की। महा गुसाई तुम कौनसी वसुन्धरा में हो अमृत पिलाके गए आये न दैया की। तेरे मुसक्यान की गुलामी मे रहूँगी सदा ऐसे कहि ढूँढ रही प्रेमिना कन्हैया की ॥ ॥

(कन्हैया की) पं० श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

क०–एक समय कृष्ण सुदामा संग ग्वाल बाल खेलें गए गेंद सम्मत लान्हीना भैया की। उछल कर गेंद गिरी जाय जमुना बीच जहां रहत नाग सवसखो ने लरैया की। तुरतही मुरारी झट चढ़गए कदम्ब मध्य कूद गए दह में शीघ्र नाग के नथैया की। भनत मणीश ऐसी अद्भुत अनोखी झांकी नाग पत्नी बिनय करत कृष्ण कन्हैया की ॥६॥

(कन्हैया की) पं० श्री रामचन्द्रजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—बाँको झाकी काकी कहूं दोनों हैं समान रूप धनुष धरैया की या वँशी के बजैया की। नारी वध निपुण दोऊ बाल लीला रसिक दोऊ धनुष चढैयाकी या पर्वत उठैया की। असुर दल दलैया दोऊ भूसुर गो पलैया दोऊ अवध रहैया की या व्रज के वसैया की। जय जय बखाने काकी "वाचा" यश गावे काकी लछिमन के भैया की या कुँवर कन्हैया की ॥७॥

क०—कालीदह कूदे श्याम लागी खबर यशुमति धाम धाये सब गाते गाथा गऊअन के चरैया की। कोई मुरझानी उरझानी कोई कुञ्ज बीच कोई ध्यान मुग्धाभई दही के लुटैया की। यमुना के नीर तीर भई है प्रबल भीर "वाचा" धन्य बोलो दाऊ धीरज धरैया की। देखो नागफन पै है नाचत इतै को आवत जयति जय उचारो कारो कुँवर कन्हैया की ॥८॥

(कन्हैया की) प०श्री प्रेमनन्दनजी द्विवेदी कानपुर

क०—जब मारे जाते थे शिशु अबोध छीनकर गोद से विलखती हुई रोती मैया की। भय से बन्द करदी गई की जिह्वा जब खाल खिचनी थी जनमत बतैया की। स्वार्थ का प्रसार बढ़गया था इतना जब भाई के धन धरा धाम पर दृष्टि थी भैयाकी। जगा कर मोह निद्रा से बताने मार्ग सत्य का जमुना के तीर पै बजी वंशी कन्हैया की। ९॥

क०—जब लोक भूल बैठा था मार्ग सत्यता का अबलाओं पर घोर अत्याचार होता था। मर्यादा मिट चुकी थी गुरुजनों की धर्म पुस्तकों

पड़ा पड़ा सोता था। पाप का डंका बज रहा था विश्व भर में धरा
कुलाती थी नभ चुपचाप रोता था। चूर थे अभिमान की मदिरा में
वीर चरम सीमा पतन की लख मुर्धार धार खोता था ॥१०॥

(कन्हैया की) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

पद—यमुना तट जल भरन गई सखि वलिहारी
समैया की। वंसी धुनि सुनि सुधि बुधि बिसरी छूटी
जपति मैया की। ह्वै वौरी वनवन ढूंढति हौ करि के
रति वल भैया की। नहिं उतरति मनते मनमोहनि
रति सुघर कन्हैया की ॥११॥

क०—धारे मोर मुकुट तिलक चारु गुञ्ज माल कटि पीतपट नाल
का सजैया की। कूल पै कलिन्दी के बजावै बन्सीवट तर श्यामा
द्रमुखी संग गहे पीठ गइया की। चन्द्रिका विकास मांहि लखी जो
भंगी छटा मोहन की मोहि गई मौहखाउ भइया की। आनन्द मंगन
हिये ज्योति भास गई साँवले सलोने ब्रजमोहन कन्हैया की ॥१२॥

(कन्हैया की) पं० श्री महादेव प्रसाद जी कानपुर

क०—होत प्रात यसुदा सुवन मांगे रोटी अरु माखन
पीठ गहे वढ़ी मइया की। कवहुं दुआरे खेलैं शिशुन
संग धूरि धूसर गहत दौरे पूछ काहू गैयाकी। नाचत
जाय ताल गोपिन के घर जाय हंसत रिझावे
पे कौतुक करैया की। सांवली सलोनी छवि पीत
धारी-हिय महादेव वसगई नन्द के कन्हैया की ॥१३॥

(कन्हैया की) पं० श्री रामचन्द्रजी वाजपेयी कर्मकांडी कानपुर

क०—आवो सखी एक बात अचरज की देखावों
य पूरण प्रतापी ब्रह्म शेषनाग शय्या की। तीनि

लोक चौदह भुवन में पसारो जाको प्रेम की फासरी
खेलत गोद मैया की। ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद मन्त्र
बीच सूरति झलकती कृष्ण बांसुरी बजैया की। आपु
विसारि नयन पटल उघारि देखो सांवरी सलोनी लोन
मूरति कन्हैया की ॥१४॥

इति द्वितीय समस्या समाप्ता

(गुलामी में) पं० श्री रामचन्द्रजी वाजपेयी कानपुर

क०—आपुन सम्हारो जेहि कालसों भलाई कर
दिवस विताये बहु पाय नेक नामी में। होम यज्ञ पूज
पाठ कीन्ह्यों बहु भांति तुलसी दास की अपील य
लिखित ललामी में। दीनबन्धु दीनानाथ पलक त
घुमावो नेक विनती करत चेरो हाजिर सलामी में
तीन सौ साठि दिवस रजनी लव लागि रहे जन
सेराय मेरो 'राम' की गुलामी मे ॥१॥

(गुलामी में) पं० श्री गुरुवरशरण जी कानपुर

क०—चारो वर्ण आश्रम के कर्म धर्म आदि त्या
फूले फूले फिरत सौराङ्गन कलामी में। देव द्विज संत
पदारविन्द त्यागि सेवा मूरख फिरत हाँ हजूर
सलामी में। अन्त हूं तजैगे भाई बन्धु परिवार पु
भूले फूले क्यों फिरत गोरे गालन ललामी में। तार
के हेतु कलिकाल बीच 'गुरुवर आठो याम वीतें रा
रानी जू गुलामी में ॥२॥

(गुलामी में) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

क०—काहे को कान्ह के सुरंग रंग राते फिरौ माते फिरौ मूरख से हढ़ाए नियत स्वामी में। भाई बंधु मात पिता नारी प्राण प्यारी सब अंत समै कोई भी न होंगी अनुगामी में। जबलौ अयान रहे तब लौ अयान रहे अबतो खुद शोचौ क्या मजा है नेक नामी में। सो क्या किशोर बस एही आओ कृष्णभजें लगे रहैं कृष्ण हा की सर्बदा गुलामी में। ३॥

क०—रोज रोज गोपिन को सूनो घर पाय जाय माखन उठाय लाते मटुकी बहामी में। अपना कछु खाते कछु ग्वालन खवाते तो कछु लुढ़काते चित्त रखते हैं स्वामी में। कबहुक किशोर गोपिकायें जो जान पातीं धातीं गहिबेको मोहिं राखौ अनुगामी में। आप दुरि जाते मोपै मार पिटवाते यासों अबना रहूँगी श्याम तेरी यों गुलामी में ॥४॥

(गुलामी में) पं० श्री लालमणिजी मणीश कानपुर

क०—बड़े बड़े राजे औ महाराजे भये भारत में करि गए है राजप्रजापाली नेकनामी में। भये बादशाह शान भी अकब्बर से ऐसी दशा नहीं भई राज्य मुगलामी में। जैसी सब प्रजन दशा है आजकल की सब वस्तु महंगी भई डरैना बदनामीमें। भनतमणीश यमयातना से अधिक कष्ट भोगे औ भोग रहे नरक इस गुलामी में ॥५॥

(गुलामी में) पं० श्री रामवल्लजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—काम क्रोध लोभ मोह ममता विसारो चित्त चंचल अचञ्चलकर नाम रक्खो नामी में। कुछ भी

नही है धरा व्यर्थ ही गँवाते जन्म दुर्जनजन संग किये धारे नाम कामी में। शोभा अभिराम श्याम मधुर मुसक्यान ज्ञान कीरति ललाम मन लावो गरुड़ गामी में। सुख है जहाँ शान्ति है नक्रान्ति है न भ्रान्ति दान्ति "वाचा" मनलाय तहाँ रहहु गुलामी में ॥६॥

क०—जो है सुख संतत सनातन धर्म बीच नाहीं रजकण है इशाई ईसलामी में। सुधारस धारा है सुकोमल वचन बीच नीचता परीत हलाहल है कलामी में। भर पेट अन्न भी मिलेगा नहि सोचो "वाचा" मुट्ठी भर चावल गेहूँ दुर्लभ है सलामी में। लेने को स्वतन्त्रता लड़ते हैं लड़ाई इतै उतै प्रतिदिन जकड़े जाते हैं गुलामी में ॥७॥

(गुलामी में)पं० श्री ब्रह्मानंद जी मिश्र कानपुर

क०— जाकी वेद वहत त्रिलोकी नाथ परब्रह्म रहैं ठाढ़ी देवन की नायका गुलामी में। मुरली वजाय मोहि-लीन सब लोकन को रहै सव जीव बंद तालि का गुलामी में। राजा महाराजा राज सुख त्यागि दास बने पगीं निष्काम गोपवालिका गुलामी में। माया की प्रवल शक्ति देखो सोई कृष्ण चन्द्र ठाढ़े कर जोरे हुये राधिका गुलामी में ॥८॥

क०—कोऊ धना मानी द्वार स्वान ऐसे पड़े रहैं चापलूसी करैं नित स्वारथ की गुलामी में। गीध ऐसे गीधरहैं कोऊ धन जोरन में देह, खान, पान चित्रसारी की गुलामी में। कोऊ कन्न लम्पट अनङ्गङ्ग माते सदा हुकुम बजाते खड़े नारी की गुलामी में। आनन्द जपत राम नाम मोह जाल तोड़ि लगा रहै अवध विहारी की गुलामी में ॥९॥

(गुलामी में) प० श्री प्रेमनन्दनजी द्विवेदी कानपुर

क०—हाथों की खुजली मिटाते थे जिनके सर उन्हें

सरकहते हम झुककर सलामी में। बैठे हैं भारत में ऐसे वह डेरा डाल दादे ने लिखाया ज्यों पट्टे दमामी में। लड़ाते जो टुकड़े डाल दिखाते हैं आँखे लाल अपना सा न रखते और अपनी हरामी में। सिंहों के पूत हम कपूत हाय ऐसे हुये सुख हम मनाते उन गुलामों की गुलामी में ॥१०॥

(गुलामी में) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

क०—बहुत अरसे तक परतन्त्रता की बेड़ी में बंधा हुआ पड़ा रहा नमक हरामी में। गैरों को बिगाड़ा औ आपै बिगड़ता रहा जुलमी कानूनों के फंदे नियत खामी में। रतन कहत अब हो गये सचेत सब हो रहे हैं सबके खयाल नेक नामी में। भारत स्वतन्त्र होगा भारत स्वतन्त्र होगा हर्गिज रहेगा नहीं औरों की गुलामी में ॥११॥ इति

(मुसक्यान की) पं० श्री श्यामबिहारीजी मिश्र कानपुर

क०—बाजे जो आते इस मंदिर में दरशन को झाँकी झाँक जाते मनोहर भगवान की। बाजे जो आते वहै बैठ अउंघाया करैं सुनते जरूर तान रामायन गानकी। बाजे लोग आते तो प्रसाद के बहाने आते बाजे तो मिसिर चाहैं बीड़ी दुइपान की। सुनिये पुजारी हम आते जो तुमारे पास रहती है ये चाह बस तुमारे मुसक्यान की ॥१॥

(मुसक्यानकी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

क०—येती निठुराई मत ठान मन मोहन से सुनतो दुलारी बेटी जाई वृषभान की। तू तो गरबीली बनी बैठी यहाँ मान किये चलके तो देख कैसीदशा तुव कान्हकी।

सिसक रहे हैं और बिलख रहे हैं बहु भूली हैं किशोर सुधि उन्हें खानपान की। राधे कहि राधे कहि टेरि रहे मेरी जान एक बस चाह उन्हें तेरे मुसक्यान की ॥२॥

(मुसक्यान की) पं० श्री काशीनाथ जी शुक्ल कानपुर

क०—बैठी आत सान सो गुमान भरी मान करि आये ढिग प्यारी के सुकान्ह पिय प्राण की। जोवत मुख कीरति सुता की उर प्रेमभरे शरद चन्द्रनिंदक कहौ सुखमा प्रमान की। हा हा करि विनती करत पुनि सोहैं खात चूमत कपोल गोल परम सुजान की। काशीराम खोजि २ उपमा न पाई कहुँ तीनि लोक वारौं या नन्द मुसक्यान की ॥३॥

(मुसक्यानकी) पं० श्री लालमणि जी 'मणीश' कानपुर

क०—झूलत है हिंडोला कृष्ण कुञ्जन में श्यामाश्याम देखती है सुर बधू बैठ आसमान की। धन्य है भाग्य सब ब्रज की गोपियों के जिनके संग में झूल रही पुत्री वृषभानकी। मंद२ वर्षे मेघ त्रिविध समीर चलै गावै सब कजरी अलाप कोकिलानकी। भनत मणीश छबिदेख श्री मुरारीजीकी कृष्ण ने देख फिर मृदुल मुसक्यान की ॥४

(मुसक्यानकी) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—कोऊ परे घायल कराहैं रैन दिन प्यारी खाय चोट भ्रकुटी कमान नैन बानकी। कोऊ भूमि लोटैं रज चरन की शीस परैं देखि गजगामिनी तिहारी चाल शान की। कोऊ फिरै अन्न बसन हीन बावले से वाणी विषभरी मुनि प्रेम के छटान की। कोऊ धरा माईं परे सुधि बुधि नेकु नाहिं जबते कि मारी जादू तैंन मुसक्यान की ॥५॥

(मुसक्यान की) पं० श्री रामरत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

क०-जावो लेइ आवो फूल जनक फुलवारी में ह
ज्योंही गुरुदेव "वाचा" वचन यों प्रदान की। इतै गर
राम लखन तोड़न पुष्प वाटिका में गिरिजा को पूजन
उते आय गईं जानकी। सुषमा अपार तासै मार कोटि
लाजत हैं राम को निहारि सुधि रही ना अपान की।
एक कहे आली फिर आउब इते काली देर भई गति
मराली कहि मन्द मुसक्यान की ॥५॥

क०—पीत पटवारे दोऊ सुजन रखवारे दोऊ कोऊ नहीं पावे पार
कीरति महान की। आयत उर भुज विशाल "वाचा" उर तुलसी माल
भाल छबि बरणै कौन सुकवि भगवान की। विपिन विहारी दोऊ भक्त
भय हारी दोऊ पार नहीं पावे कोऊ सुखमा निधान की। चितवत
चित हरत दोऊ सबके उर रहत दोऊ मन्त्र मुग्ध होते सुधि आवत
मुसक्यान की ॥६॥ इति

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री रामचन्द्रजी बाजपेयी कानपुर

क०-बगरि गई शारद की चाँदनी चहूँ ओर होन
लग्यो मङ्गल बहु बजत बधाई सी। सजन लग्यो साज
रास मण्डल मझार आयो बिसरि गयो आपा राति
बाढ़ी छमाईसी। मदन उमङ्ग सों पुलकित ह्वै अङ्ग अङ्ग
आनन को विकास मानो लेत जमुहाई सी। प्रीतम कै
विहार में थाक्यो है बदन सारो सीकर की चमक सों
जुन्हाई में नहाई सी ॥१॥

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री काशीप्रसादजी अवस्थी कानपुर

क०-झपटि दुशासन गह्यो द्रुपद सुता को चीर

चितैं पाण्ड पुत्रन तन ताप उरताई सी। एहो यदुनाथ नाथ लाज है तिहारे हाथ करहु सहाय मोहि जानि असहाई सी। सुनते पुकार भरी करुणा रस बाणी को सारी रूप प्रगट भये हरि दुचिताईसी। कमठी समान सकुचि अम्बर के मध्य माहि मानौ बैठि रही है जुन्हाई में नहाई सी ॥२॥

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—एरे बलबीर रणधीर दशरथ पुत्र मान मम बात मत ठान निठुराई सी। आपने समान कोई पुरुष न पायो आन याते किशोर रही अजलौं अन व्याही सी। विधना ने मेरी और तेरी नई जोड़ी रची तो सों पुरुष ना कोई मोसम लुगाई सी। तू है जो श्याम अभिराम तन सुंदर तो मैं भी तो सुंदर हूं जुन्हाई में नहाई सी ॥३

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री रामवल्लभजी मिश्र "वाचा" आरा

क०—सात हूं सोपान हूं पैं उमड़ि घुमड़ि चढ़ो चारो घाट ऊपर है बढ़ि चढ़ि धाई सी। सन्त औ महन्त गुण वन्त को पवित्र करि देश औ विदेश नगर डगर हूं में छाई सी। शेषऔधनेश अमरेश हूं को हर्ष देती अनिशि चहूं ओर "वाचा" फेरती दोहाई सी। मानस से निकरि दशो दिश में प्रकाश करे तुलसी की कविता है जुन्हाई में नहाई सी ॥४॥

क०— तीर में तरंगिनी जा से तरुवर तमाम तापै तान तोरे पक्षी नाम

सरिता बहाई सी। राधेश्याम कोऊ कहै श्यामा श्याम कोऊ कहै सीता-राम ध्वनि तहाँ रही थी सुनाई सी। तुलसी के तुलसी "बाचा" पहुंचे तहाँ पै जाय देखत है भक्ति तहाँ रहति है लुभाई सी। तुलसी के हेतु श्याम राम भये तेही छण सीताराम ध्वति थी जुन्हाई में नहाई सी ॥५॥

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र 'आनन्द' कानपुर

क०—कार्तिक को पूनो ससि देखि हिय हर्षि भरी नवला वधूटी चली गर्व गरुआई सी चन्द्रमुखी चन्द्रि-का ते घिरी सारी दुग्धफेन सजे सभी भूषन की आभा छिटकाईसी। मोतिन को कंठमाल बेला औ चमेली चंपा चाँदनी के हार उर वासना वसाई सी। गंगा की धवल धार पेखती है आनन्द से रेती पै टहलि ज्यों जुन्हाई में अन्हाई सी ॥६॥

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री प्रेमनन्दनजी द्विवेदी कानपुर

क०—एक भोरी सी किशोरी वयस की थोरी जमुना की ओरी धाई ठगाई सी। मोहन मन भावन लगे पास आवन लखि ठिठक रही आपु में लजाई समाईसी। परी छाँह श्याम की बदली दुति बामकी मुख चन्द्र सों चंद्रि-का बहाई सी। किम्वा जमुना के तीर पै कुमुदिनी प्रकट भई मधुमय मंजुल जुन्हाई में नहाई सी ॥७॥

(जुन्हाई में नहाई सी) पं० श्री रत्नगभजी तैलङ्ग कानपुर

क०—एहो नाथ परमार्थ क्या बिगाड़ा आपने भी तालाकर लुगाई चाट डाली मिठाई सी। अबकी जु लाये पंचवटी से लिवाय तुम अनुपम दिखाती है परषो ये

चुराई सी। हममें क्या दूषण अवलोके कहौ तो देर फेंक दई माखीसी निकाल के वुराई सी। गौर कर देखिये कृशोदरी मृगाक्षी हम कमल मुखी हैं औ जुन्हाई में नहाई सी ॥८॥

इति पञ्चम समस्या समाप्ता

(वुत्तू) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

क०–औघड़ शंभु के ब्याह समै सजि आनपरे सब अद्भुत भुत्तु। आनन वक्र वाहन नक्र सु आयुध चक्र औ भोजन सत्तू। बाजत शंख मृदङ्ग कहूँ कहुँ वाजत श्रृंग सु धुत्तुर धुत्तू। स्वागत माहि हिमाचल ने सबै भाँग पिलाय बना दिये वुत्तू ॥१॥

(वुत्तू) पं० श्री श्यामविहारी जी मिश्र कानपुर

स०–मैं तौ चकामक चादनी सी चमकूं दमकूँ चपला सी अकुत्तू। मेरे पिया कछु ऐसे मिले बड़ मैल कुचैल बने रहैं भुत्तू। बोलत ही झुझलाय उठैं अरु मिश्र हमेश किये रहैं उत्तू। हे भगवान कोऊ जिय को न दियो कवहूं अस प्रीतम वुत्तू ॥२॥

(वुत्तू) प० श्री बन्दीदीनजी तिवारी कानपुर

स०–ज्ञान के वुत्तू औ ध्यान के वुत्तू हैसान के वुत्तू गुमान के वुत्तू। धर्म्म के वुत्तू औ कर्म्म के वुत्तू हैं काव्य के वुत्तू औशासन वुत्तू। राम के नाम चरित्र में वुत्तू परंशुभ संगति होत है वुत्तू। राम औ कृष्ण मुरारि को भक्त जो बन्दी तौ को समकोहवै वुत्तू ॥३॥

(वुत्त) पं० श्री रामगोपालजी शर्मा कानपुर

स०—जानत ना कछु भेद व भाव कहावत है कवि काव्य के जुत्त । है गण ज्ञान न रोचकता गति भङ्ग को ढङ्ग न मानत कुत्त । आपनि सान महान बढ़ाय सभा को हँसाय जनावत पुत्त । वे कवि होत मयंक समान गोपाल प्रणाम करै कहै वुत्त ॥४॥

(वुत्त) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

स०—जिनको अपनों करि मान रहे वह ही अपने को किये रहैं उत्त । घिउ आटा की बात तो काह किशोर न माँगे मिलै कहुँ मुट्ठिक सत्त । रिपुलोगन की बनि आवै तबै कर देत चढ़ाई बजाय के धुत्त । जब आनि विपत्ति किसी नर पै मतिमान बड़ो सोउ बाजत वुत्त ॥

(वुत्त) पं० श्री रामयत्न जी मिश्र 'वाचा' आरा

स०—बातन के हम वीर बने सुनि शब्द बिड़ाल के होत है सुत्त । चाल चलें हम शेर की भाँति औ काम परे पै शृगाल के पुत्त । आवे भिखारि जो द्वार के ऊपर देइ न दाम सुनाय दें धुत्त । आन की मान बढ़ावें नहीं पर आप गुमान में ह्वै रहें वुत्त ॥६॥

स०—मित्र धनेश सुरेश हैं सेवक वासुकि हार गणेश हैं पुत्त । हैं तो महेश दिगम्बर पै विषपान किये पै भये नहीं मुत्त । आन को देत हैं लोक के राज्य औ आप रहे सबसे अवधुत्त । पाइ के कौस्तुभ पाणि रमा हरि होत हैं नींद नशा मह वुत्त ॥७॥

(वुत्त) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र "आनन्द" कानपुर

पद—दैके समिच्छा लेत परिच्छा कविजन की ये पुत्त । एकौ छंद न आप सुनाने सभा बैठ जनु वुत्त । वुत्त खेलि वुत्ता दै बैठे हमका धाग्यौ पुत्त । आनन्द पाँसा कस नहिं फेंकत जाति बैठि जनु वुत्त ॥८

पद—हारि गगन समझायं न मानत खटिया पर के मुत्त । अब तुम माटिन मारे जैहौ होइहै देहिया उत्त । भयो सयाने समझदार हौ ललुवा बचुवा पुत्त । काहे ज्वावु न देते आहिव बैठेव बनिकर वुत्त ॥९॥

इति छठवीं समस्या समाप्ता

अथ संस्कृत समस्या पूर्त्तयः

(किममृतम्) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री कानपुर

वदंत्यर्हाः केचिन्निखिलममृतं स्त्र्योष्ठ पुटके तथा चख्युः केचिद् वसति नियतं शक्र भवने । परेचेत्थं प्राहु र्हरि चरित गानेशुभगमे परंकेनाप्यद्य प्रभृति तु नदृष्टं किममृतम् ॥१॥

(किममृतम्) पं० श्री लालमणिजी मणीश कानपुर

बृन्दावने कृतंरासं पूर्णचन्द्रः सुवालुके । राधिका प्रीत संजातो विंवोष्ठेच किममृतम् ॥२॥

(किममृतम्) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र 'वाचा' कानपुर

किममृतं सुरभक्षित भक्षणं किममृतं रमणी रमणं वरम् । किममृतं कमला सुत सेवनं हरिपदाश्रयणं नु किममृतम् ॥३॥

(किममृतम्) पं० श्री देवनारायणजी अवस्थी कानपुर

यदि क्रोधः स्वान्ते रिपुकुल समूहैः पिशुनता यदि-स्यात्किं पापैर्वसति यदि शान्तिर्हिकवचैः । यमौ कञ्जैः

कोऽर्थः सरसि यदि हंसौ निवसते धनैः किं किं कार्यैः यजति हरि पादं किममृतम् ॥४॥

(किममृतम्) पं० श्री हरदेव प्रसाद जी मिश्र शास्त्री कानपुर

रघोर्वंशोद्भूतं कलिमलहरं मेघ सदृशं शरण्यं लोकेशं भुवन जननी सेवितपदम्। विभुं रामं देवं प्रति निखिल रामायणपदे। वचस्ते यच्चोक्तं शृणु नहिं महात्मन् किममृतम् ॥५॥

(किममृतम) पं० श्री काशीरामजी अवस्थी कानपुर

दृष्टा संसाराख्येभव भ्रम भयहारकमिदं शुकानन संभूतं पिवन सुजनैः कर्णं पुटके। परम ज्ञानं लब्ध्वा याति सदनश्चान्ययदं नजाने शैलेयाऽधिकतरं किममृतम्

(किममृतम) पं० श्री मुकुन्दलाल जी सिद्ध कानपुर

किममृतं जगतीतल मंडले इतिसुसज्जनसंसदि भाषितम्। तदधुनाप्रवदामिसुनिश्चितं दुरितहं हरिनाम सदाऽमृतम् ॥७॥ ति०

(गतोनवागतः) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

नमामि जानकी सुजानि पाद पंकज द्वयं सुरासुरेंद्र वंदितं निरैषिणांसुख प्रदम्। यदर्चनादवंदितोपिवन्द्यतामवाप्यतत् सुधाम याति निर्मलो ह्ययद् गतोनवागतः॥१

(गतोनवागतः) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र 'वाचा' कानपुर

नचैतिकालः पुनरेव कीदृशो विद्या वुधाः? भाति सदाचकीदृशी। लेखापगा सा समभूत्कुतः कलौ किम्वक्ति क्रुद्धोऽथगतोनवागतः ॥२॥

(गतोनवागतः) पं० श्री भागवत प्रसादजी मिश्र "वागीश" बाँदा

कलिः प्रचण्डताङ्गतो जनोऽपिदुःख दुःखितः समीर-मण्डलोऽपि हा सुभूषितोऽपि दूषितः। विहाय धर्म सङ्गती रधर्म कर्म सम्भृतः. प्रभो! त्वदंश नायकः किमागतो नवागतः ॥३॥

विहाय मञ्जुभाषिणीं. सदैव मोक्षदायिनीम्। भजन्त्यहो विधातिनीं. कुदेव कालरूपिणीम्। अपण्डितस्तु मानितो. नमानितः सुपण्डितः विभो? त्वदंश नायकः, समागतो न वागतः ॥४॥

(गतोनवागतः) श्री लालमणिजी शर्मा 'मणीश' कानपुर

मधुपुरीं गतः कृष्णो व्यतीयुः बहुवासरान्।
रुक्मिण्यादिक पत्न्याच सह गतोनवागतः ॥५॥

इति द्वितीय संस्कृत समस्या समाप्त

अथ स्वतन्त्र कविता

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री रत्नगर्भजी तैलङ्ग कानपुर

देखि तुव काव्य रचनाओं की अनोखी छटा केकी बन कविजन कुहक मचाए हैं। व्यास देवर्षि बालमीकि सूर आदिक देर सूर्य चन्द्र तारन की दमक दुराए हैं। शीतल सुगन्ध मन्द वायु बहै तेरोयश कहूँ रामभक्ति चपला सी चमकाए है। गोस्वामी तुलसीदास तेरे गुन गौरव के चारों ओर घुमड़ि घुमड़ि घन छाए हैं ॥१॥

(गोस्वामी तुलसीदासजी) प० श्री काशीनाथजी शुक्ल कानपुर

बन्दौं पद पद्म श्री गोसाँई तुलसीदासजू के रामसुयश गाय जिन कीन्हो विस्तार है। कलि के कुचाली कुटिलजीव निस्तारन को सुदृढ़ बनायो सेतु परमपगार है। काशीराम कहाँ लौबखानै मीत मन्द महा श्रुति औ पुरानन को संमत सुखसार है। कामधेनु कलपतरु चारि फल देन हारी भली रामायण यह कविता उदार है ॥२॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

दो०—जिनकी रामायण पढ़े, होत पाप सब नाश।
धन्य धन्य जय जयति गो. स्वामी तुलसीदास ॥३॥
त्वद् विरचित रामायण. एक लुत्फ है खाश।
ओल्ड आलदी सिन्स गो स्वामी तुलसीदास ॥४॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

छन्द—तुलसी तव ऋणिया सबकोई—
फेंकदई चादर उतार कर आसमानते घरका।
राम कन्हैया की समता करि देव पितर हरि हरका।
रहे गुलामी में सिय पीय के की मुसक्यान बड़ाई।
जुन्हाई में न्हाई सी वृत्त कविता नहीं होई ॥ तुलसी०
जो जगदीश जन्म नहीं देते तब जगतीतल माहीं।
रामायण शुभ कथा सुधाका रस पावत कोऊ नाहीं।
बालमीक आदिक की कविता बाँचत थे कोई कोई।
परम कठिन सुरभाषा मण्डित भाव रहा अति गोई ॥ तुलसी०
मन्दिर नष्ट भ्रष्ट करते थे मूरति तोड़न होई।
शिखा सूत्र सब भग्न करत थे जाति हरण हितसोई।
उसी समय में प्रकट होय तुम रच्यो रामायण गोई।
हिन्दू हिन्दी हिन्द देश का गर्व बढ़ावत सोइ ॥ तुलसी० ७
निगमागम पुराण मत यामें सुलभ पन्थ सबही को।
"वाचा" पढ़त पढ़ावत हर्षत शान्ति मिलत है जी को।
भुक्ति मुक्ति है भक्ति विमिश्रित याहि मध्य में गोई।
साचा सुलभ प्रेम करि पैहो राम कृपा सुख होई ॥ तुलसी० ८

गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री ब्रह्मानन्दजी मिश्र कानपुर

क०—ग्राम ग्राम गेह गेह होय है उछाह महा कौन 'भाग्यशाली की यन्ती में खुशाली है। मानस अखड पाठ और हरि गुनगान होम प पूजा अरु कथा भक्तिमाली है। काको यश गाय कवि वाणी को फल करै काकी भक्ति भाव बेलि फूली फली डाली है। आनन्द ोसाईं तुलसिदास की जयन्ती महा जाकी भक्ति गौरव की फैली दिव्य

जाती है ॥९॥

क०—आगम निगम औ पुरानन को सार सार भक्ति ज्ञान नीति कर्म कांड भंडारा है। ऐसो रामचरित रामायन बनाय गयो जाके कीन्हे पाठ पाप ताप होत छारा है। आवै घर सम्पति अमित सुख दम्पति को कम्पति है यम राज मुक्ति खुली द्वारा है। धन्य धन्य तुमको गोसाइँ जू प्रनाम करूँ आनन्द को डूबते ही आपने उबारा है ॥१०॥

(गोस्वामी तुलसीदासजी) पं० श्री बालेश्वरजी तिवारी कानपुर

क०—होता हुलसी का लाल तुलसी न पैदा यहाँ, माया मद मोह का प्रपञ्च समझाता कौन। रचता रमायन जो न विविध विधान युक्त पापी पामरों को पद-पावन दिलाता कौन? देता उपदेश जो न धर्म कर्म मानव का, तजि कै कुमार्ग को सुमार्ग पर आता कौन? होता जोन ध्यान ज्ञान खान तो 'विनीतवाल' व्यर्थ आन बान से गुणानवाद गाता कौन ॥१॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री ब्रह्मानन्द मिश्र कानपुर

क०—शरद कृपा ते हिय भूमि परो काव्य बीज राम नाम अमृत सों सीचि तरु जायो है। फूले फूले फूल ले के प्रेम ताग गूंथि गूंथि सज्जन व सन्तन के उर पहिनायो है। आनन्द सुवास लहैं भावना की भीनी भीनी भक्तिरस मत्त चित अलि भरमायो है। सोई पुष्प हार नव सीयराम उर माँहि शोभित करन हेतु माली बनिलायो ॥२॥

दोहा—देशकाल नर निरखि जे, कविता पढ़त सुजान।
ब्रह्मानन्द ते पावहीं, सुख सम्पति सन्मान ॥३॥

छप्पय—लै द्विज कुल में जन्म मातु हुलसी हुलसायो। दियो मुक्ति पद पितहि आतमा-राम-बनायो। पासद्गुरु नरसिंह भक्ति बल सबहिं लखायो। बसि कासीतट गंग असी रघुपति गुन गायो। षोडसरामायन भनत भक्ति कला षोडस लसी। कलि जनन उद्धारन के वरे वाल्मीक मैं तूलसी ॥४॥

क०—सुरनर मुनि लोक लोक न मनावे सब तुलसी जयन्ती दिव्य मूरति निहारते। षोडस प्रकार पूजि लेत पद-रज-शीस भक्तिवर माँगि

सेर चँवर हैं ढारते। पाँप ताप नासि जिन हियराम भास की न ऐसी
गुरु पाय तन मन वारते। ब्रह्मानन्द द्विज आज तिनहि कू मध्य बैठि
गयो है कृतार्थ जयति बचन उचारते ॥५॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री लक्ष्मीकिशोरजी तैलङ्ग कानपुर

क०—मानत न कोई निगमागम पुराण आदि धर्मशास्त्रन को पोप
लीला बतलावते। सोऽहमसि तत्वमसि आदि जो वेदांत वाक्य तिनको
बताय गप्प दिल्लगी उड़ावते। कहत किशोर भक्ति मारग भुलाय दीनो
विरचि कुमार्ग सभी लोगन भुलावते। ऐसे इन अधर्मिन का कैसे
उद्धार होत जो पै तुलसिदास रामायन न बनावते ॥६॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री काशीप्रसादजी शुक्ल कानपुर

क०—बाणी श्रीगोसाईं जू की प्रेमरसपागी ऋद्धि सिद्धि आदि
दाते फलचारि देन हारी है। मानसरके समान स्वच्छ मन मध्यराम हंस
ह्व बसत हमेश सुखकारी है। मानव समाज के उबारन के हेत जिन
कविता अनूप करि जगत पसारी है। काशीराम सकल सुमंगल की
खानि जानि करत प्रणाम उर मोद अति भारी है ॥७॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" आरा

पद—जग में तुलसी हुलसी तन से यदि जन्म यहाँ पर पाते नहीं।
सब होते तुरुक्क सबी तेहिकाल इस हिन्द में हिन्दू कहाते नहीं।
उच्छाल के तोय से धोते शरीर गङ्गाजल तीर्थ में न्हाते नहीं। चुटिया
औ जनेऊ को कौन कहे हरिनाम को जीभ पै लाते नहीं ॥८॥

क०—टटकी कहानी छोड़ अब भी कमर कसे चूक मत मौकाके
समस्या कड़ी आईरे। फिर पछितैहै जो गँवैहै तू समय हाय देह को
छिपै है तू समैहे कहाँ जाईरे। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ही कारख मन में
मान सबसे हिलमिल के चल एक साथ भाई रे। जोकि कहीं दीठे तेरी
लागीरे गुलामीबीच नीच बने मुह को दिखैहे कहाँ आईरे ॥९॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री स्यामबिहारीजी (तरल) कानपुर

पद—आज भारत देश में यदि भक्त तुलसीदास होते।
क्या भला होते न तो फिर? श्रीभरत से आज भ्राता;

और पूज्य वशिष्ठ से होते न क्या कर्तव्य ज्ञाता,
फिर सती सीता सदृश क्या नारियाँ होतीं न घर-घर,
कौन कहता है न होते आज हम जग के विधाता।
सत्य कहता हूँ कि बदले ए सकल इतिहास होते।
आज भारत देश में यदि भक्त तुलसीदास होते ॥१०॥
यह बताओ आज हमको याद आते राम क्यों हैं।
आज हृदयांकित भला उनके चरित्र ललाम क्यों हैं?
चीन के इङ्गलैण्ड के जापान के इतिहास वेत्ता,
भक्त तुलसीदास का ही आज लेते नाम क्यों हैं?
श्रेष्ठ होकर हम अरे क्या आज इस विधि दास होते।
आज भारत देश में यदि भक्त तुलसीदास होते ॥११॥
क्या लदा सर पर हमारे यह असह दुख-भार होता;
दुर्दशा लखकर हमारी क्या मुदित संसार होता,
हो नहीं सकता कभी था यह कि भारत देश में यूँ,
एक मुट्ठी अन्न पर हा घोर हाहाकार होता।
दूर हैं जो सुख वही हर दम हमारे पास होते।
आज भारत देश में यदि भक्त तुलसीदास होते ॥१२॥

पं० श्री रामसेवकजी कानपुर

स०—भव पारावार के अपार पार जान हेतु, दृढ़ जलपान के समान सर सानी है। पाप पुञ्ज देनी सुरलोककी नसेनी सदा, "सेवक" त्रिकाल मुद मंगल की दानी है। बुद्धि को विकार टार करत छनक माँहिं, ज्ञान के प्रकाश काज भानुसी सुहानी है। गुनिन प्रमानी दुःख हानी होत जाके सुने, राम यश सानी तुलसी की शुचिबानी है ॥१३॥

(गोस्वामी तुलसीदास) श्री तारासिंह चौहान कानपुर

पद—घन श्याम कहैं बन श्याम कहैं सब श्याम कहैं अनुरागीरी।
कुल लाज तजी तन साज तजी सब काज तजी घर प्यारीरी।
छिन ही छिन औचक हेरि रही अकुलाय रही रस पागीरी।
सखी सौंहैं तेरी कवि तारा कहैं जनु दीठ तेरी यह लागीरी ॥१४॥

(गोस्वामी तुलसीदास) पं० श्री रामचन्द्र जी वाजपेयी कानपुर

क०—आज श्रीमहात्मा गोसाईं तुलसीदासजी की जाहिर जयन्ती तु नीको जुरो साज है। वेदन के पढ़ैया औ गुनैया षट्शास्त्रन के योतिष औ पुराण माहिं पेख्यो सरताज है। कठिन कराल कलि-काल में विचार कीन्ह्यो दीन दुःख दारिबे को जाके बहुलाज है। भव सिन्धु तारन को राम ये महामन्त्र मन्त्रन समाज बीच देख्यो मन्त्रराज है ॥१५॥

प्रभाकर' पं० श्री लक्ष्मणदासजी श्रीवैष्णव अज्ञ, आयुर्वेदभूषण आबू

क०—हे प्रभो करू कविता मैं क्या कविता करने की शान कहाँ फिर कविता तो तब बनती है तो कविता का सामान जहाँ। जब कविता लिखने चलते हैं तो आखों से आँसू बहते क्यों व्यर्थ लिखे हम जाते हैं स तड़प तड़प कर हैं कहते ॥१६॥

क०—ए परब्रह्म हरमेश्वर तू रस का सामान यहाँ रख दे। कविता की कमनीय दृष्टि मे कवियों को फिर से लख दे। फिर कविता का पद्म बाग फिर से लहलहा उठै सविता। नहिं तो तुकबन्दी घिसने से हे भगवन ! होगी क्या कविता ॥१७॥

पं० श्री बलरामदासजी पपड़िया मठ पुरी

क०—शील के निधान ज्ञान गुण के उद्यान नीति प्रीति के निदान तेज पुञ्ज के आभा न हो। नेह के खदान भाव भक्ति के सुजान वेद शास्त्र के विधान में विद्वान उदन्वान हो। नेम के निसान आप कीर्ति के महान राम भक्तों में प्रधान भारत के सुसन्तान हो। जीव के आराम था शून्य लोभ मोह मान तुलसी चढ़ाय दास तुलसी सन्मान हो ॥१८॥

क०—पङ्क्ति के तात नाथ तनुजानुज साथ वाको नाथ पद पाथोज में जाको सदा वास है। हरि वीर सुप्रधान जनक जनम थान करुणा विलोकनि जाकी जिय की आश है। वन निधि कुअरि भवन कर हरि-हास्य-सब जंजाल से नित जो रहे उदास है। ऐसो प्रह्लाद नाथ दास के दास साथ तुलसी चढ़ाय बलराम कृपा अभिलाष है ॥१९॥

इत्यर्थाक्तस्य कवितस्यार्थान्वेषणीयम्

पं० श्री रामयत्नजी मिश्र "वाचा" कानपुर

यो मानसाद्रुच्यतरं हि मानसं विरच्य षट्कादि समन्वित वरम् ।
श्रीरामनामामृत तंत्रमुक्तिकृपज्जीयाच्चिरं श्रीतुलसी कवीश्वरः ॥१॥
श्रीयेषदारिगुँडलेष्टुताड़नान्नतं प्रहन्याल्लगुडेन जातु ।
रामाननात्कोमलवाचमुल्लिखन्प्रापाठयत्पाठमसुं कविन्नुमः ॥२॥

इति प्रथम स्वतन्त्र समस्या समाप्ता

(वसुन्धरा) पं० श्री लक्ष्मीकिशोर जी शास्त्री तैलङ्ग कानपुर

क०—इसही वसुन्धरा में किये हुए कर्मन से मनुज स्वर्ग जाते फेरि आते वसुन्धरा । इसही वसुन्धरा को स्वर्गी भी चाहते हैं सबकी सुख दात्री किशोर ये वसुन्धरा । इसही वसुन्धरा में हुए हैं महात्मा लोग अब भी उन्हीं से परिपूरित वसुन्धरा । इसही वसुन्धरा में लेते अवतार हरि मुक्ति पद प्रदायिनी है तू ही वसुन्धरा ॥१॥

(वसुन्धरा) पं० श्रीरामयत्नजी मिश्र 'वाचा' आरा

पद—भारत भूमि तुम्हारी जय हो, हम सब सुखी रहें निशिवासर चलत फिरत नहीं भय हो । उदय ज्ञान का हो निशिवासर मोह निशा का क्षय हो । दस्युदीन है दूर रहें सब शान्त सुशिक्षित मय हो । धर्म्म धौरवा बढ़ै धरा पर प्रेम सदा तन्मय हो ॥२॥

(वसुन्धरा) पं० श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र कानपुर

छप्पय—अरे मूढ़ मति मन्द निरदयी कपट कुचाली । निज बिनास के हेतु बान ये कुत्सित पाली । रावन हिरनाकशिप कंस दुर्योधन जैसे । गये काल के गाल जायगा तू भी वैसे । आततायीपन छोड़ दे प्रजा सँहारन मोपरा । गई न काहू साथ में सुत-वित नारि वसुन्धरा ॥३॥

इति सं० १९९८ से आरम्भकर २००३ तक की समस्या पूर्ति समाप्ता

चतुर्थ पुष्पाञ्जलि का शुद्धाशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२०	मेरा कह	मेरे कहे
५	२	रोहिनो	रोहिनी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
६	१,३	तापयोगिन, प्रणाम	ताप जोकि योगिन, प्रणाम हैं
८	१२	रामका	राम को
१२	१५	सौविभानन	सोलै विमानन
१३	१८	उमड़ो	झुमडो
१४	१३	वाटिक	वाटिका
१९	१०	वदि	वन्दि
२३	१४	कर्रान्द	कर्रान्द्र
२५	२३	नवोड़ा	नवोढ़ा
२६	२१	गतार्ना	गतानां
२८	१,२२	देवैर्स, करोयमृ	देवैः स, करोऽयम्
२९	१	वारय	वास्यं
३१	१६,१	श्रागव. नित्वं	श्रावण. नित्यं
३३	२	वक्ति	शक्ति
३४	२०	रंचूह	रंचहू
३६	११	मौमारे	मौकारे
३८	३	लट	लटकी
४६	९,१९	वर, जागरी	वहु, जागीरी
५३	२१	भवताण	भवतारण
५८	१७	नज	जन
६९	६	तुलसी	हुलसी
८१	२०	दधार:	दधार
८२	३	धाम	नाम
८३	११,१३	हिवेद, श्रीतुर्ला	हृदय, श्रीतुलसी
८३	१९	वास	वान
८४	२२	सदा	सट्टा
८५	२,२१	श्रागव, पुरथे	श्रावण, पुरके हैं
८८	१,२१	ठोकर, काप	ठौर, श्राय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८८	२२	देमगर्साठे	देयगेमीठे
९०	२०,२१	मांचा, सासन	सांची, शास्त्रन
९३	२	जगी है	जगीरहै
९४	१२	मुर्भांकी	मुर्भांकी बांकी
९४	१३	गति विधि	गति इहि विधि
९४	१४	घरना सुहाय के	आगे वर वरना सुहाय
९५	६	ध्यान उर	ध्यान शक्ति उर
९७	१२,१९	वह, होतो	नहि, होता
१००	४	अत्तेन्दरि	अतेन्द्रारि
१०१	१०,१९	कुलैन, द्वैताद्वेतसं	कुत्रैन, द्वैताद्वैतं हि सम्
१०२	३	वासादभ्रु	वासाद् भ्रू
१०३	१३	विंजर	पिंजर
१०८	९	कविन	कवियन
१०९	१४	तनक लावो	तनकन लोवो
११०	९,९	बैठो इधर, कहु	बैठी रहै इधर, वहु
११७	६	फलो-द्रुम	फलीजु-द्रुमपै
११७	९	लालेकि	लालेपरेकि
११८	६,२१	अम्वरत, किम्	अम्वरतनं, कीदृशीम्
१२३	६	रटोला	टटोला
१२५	३,६	लोकन, फक्रि	लेकिन, फक्कि
१२७	१५	गोदिन	गोपिन
१२८	११	तात्रगति:	तद्गङ्गित:
१२८	१४	ज्ञोय ज्ञेय	ज्ञोयो ज्ञेय:

पाठकों से नम्र निवेदन है कि विशेष २ अशुद्धियों का संशोधन कर दिया गया है अतः सामान्य मात्रादिक की त्रुटियों को संभाल कर पढ़ें। यह केवल कापियों की त्रुटियों एवं प्रूफ संशोधक का दोष है।

(संशोधक)